भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय (उत्तर पूर्व), गुवाहाटी

छठा अंक, वर्ष 2026

नवचेतना

गृह पत्रिका

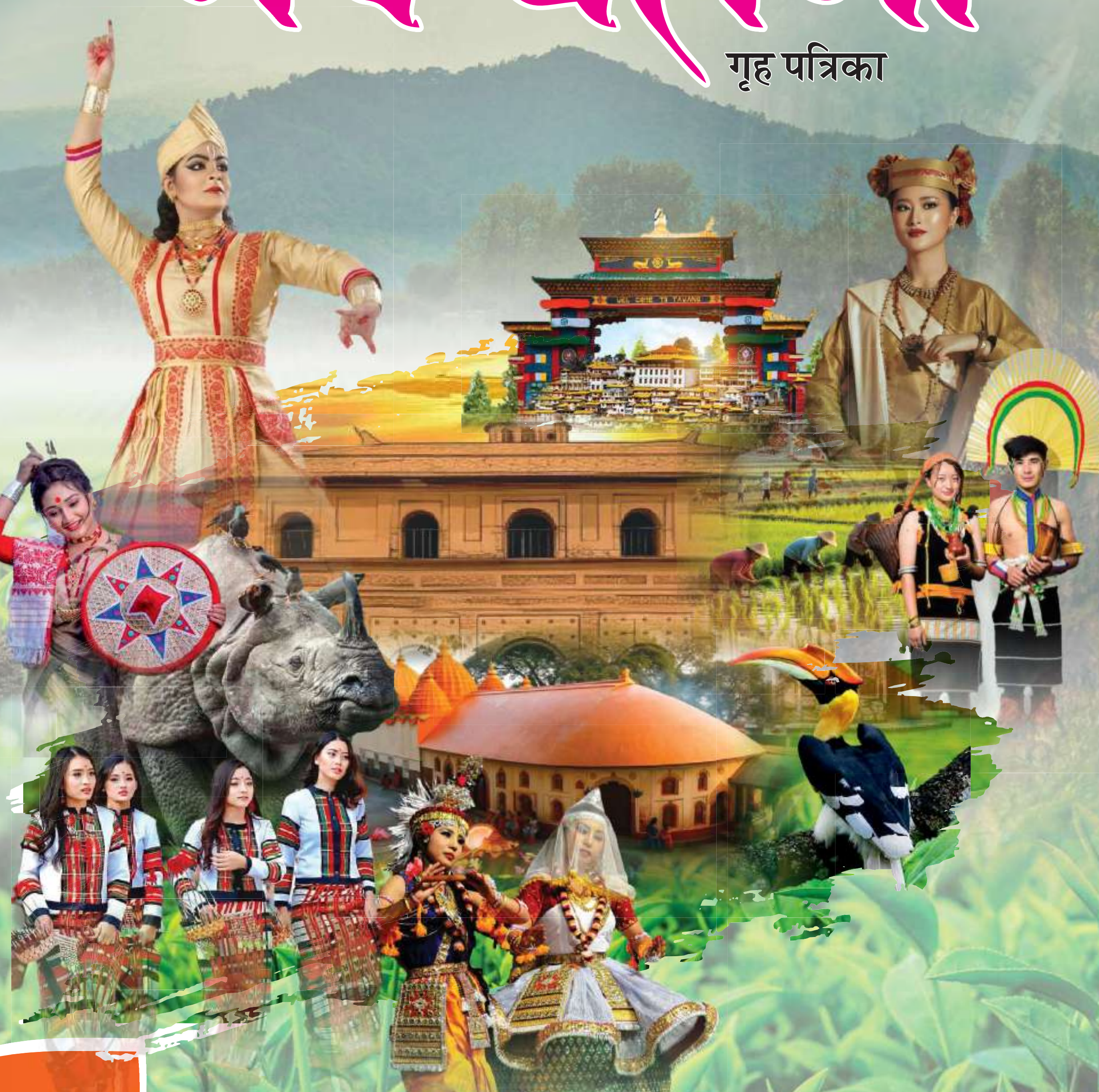

सत्यमेव जयते

संसदीय राजभाषा समिति

गृह मंत्रालय / भारत सरकार

निरीक्षण प्रमाण-पत्र

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के तहत वर्ष 1976 में किया गया। यह एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति है। इस समिति में 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस समिति का प्रमुख कार्य संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति का पुनरीक्षण और समीक्षा कर सिफारिशें करते हुए अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत करना है।

इसी क्रम में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 29.05.2025 को भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी का निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा निरीक्षण में आपके कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग व कार्यान्वयन को उत्कृष्ट/ अच्छा/संतोषजनक पाया गया।

(भर्तृहरि महताब)
उपाध्यक्ष
संसदीय राजभाषा समिति

(उज्ज्वल रमण सिंह)
संयोजक
दूसरी उप-समिति

कार्यालय का पता: 11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली-110011, दूरभाष : 011-21411167
Email: us2ndsubcommittee@gmail.com

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी का निरीक्षण 29.05.2025

राष्ट्रगीत

– आधिकारिक संस्करण –
श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा रचित गीत 'वंदे मातरम्' को 'राष्ट्रगीत' के रूप में जाना जाता है।
राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' के बोल इस प्रकार हैं:

वन्दे मातरम् , वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम् ।
वन्दे मातरम् ॥

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम् ॥

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैधृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
वन्दे मातरम् ॥

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणा : शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेइ प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्।
वन्दे मातरम् ॥

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् ॥

स्रोत - https://www.mha.gov.in/en/documents/national-flag-emblem-anthem पर उपलब्ध है।

माननीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री महोदय का एफ.एस.डी. चांगसारी दौरा

रबिन्द्र अग्रवाल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय खाद्य निगम

संदेश

यह बहुत खुशी की बात है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.पू.), गुवाहाटी द्वारा 'नवचेतना' पत्रिका के 'छठे' अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी हम सब की पहचान है एवं भारतीय खाद्य निगम के कार्यालयों में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा नीति, नियमों का कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक दायित्व है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

गृह पत्रिकाएं किसी भी कार्यालय के उज्जवल एवं रचनात्मक पक्ष को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका भारतीय खाद्य निगम, उत्तर-पूर्व अंचल के कार्यकलापों एवं गतिविधियों की उज्ज्वल छवि प्रस्तुत कर पाने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

'नवचेतना' पत्रिका के 'छठे' अंक के संपादन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

(रबिन्द्र अग्रवाल)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

जयंत शर्मा
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
मुख्यालय

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा 'नवचेतना' पत्रिका के 'छठे' अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह सभी की मेहनत, समर्पण और सहयोग का परिणाम है।

हिंदी भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है । यह भारतवर्ष के सभी भाषा-भाषियों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती है, अत: आवश्यक है कि कार्यालयीन कार्यों एवं आम बोल-चाल में भी सरल एवं सुबोध हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्रत्येक रचना, प्रत्येक लेख और प्रत्येक विचार पत्रिका को एक नई ऊँचाई प्रदान करता है। मुझे विश्वास है कि यह अंक न केवल जानकारी का स्रोत बनेगा बल्कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी ढंग से लागू कर पाने में उत्तर-पूर्व अंचल और अधिक सकरात्मक ऊर्जा के साथ अग्रसर होगा।

आशा करता हूँ कि यह अंक आपके लिए ज्ञान और प्रेरणा का स्रोत बने। इस पत्रिका से जुड़े संपादक मंडल एवं रचनाकारों को शुभकामनाएँ।

(जयंत शर्मा)

कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र)
हाउस नं-15, भूवन भूयां पथ,
पोस्ट : बामुनीमैदान, एम आह डी रोड,
सी. पी. डब्लयु, डी कार्यालय के विपरीत
गुवाहाटी- 781021
दूरभाष नं. - (0361) 2911464

सत्यमेव जयते

Govt. of India
Ministry of Home Affairs
Deptt. of Official Language
Regional Implementation Office (N.E.R.)
House No. 15, Bhuban Bhuyan Path
M R D Road, Opposite of CPWD Office
Guwahati-781021
Tele & Fax : (0361) 2911464
ई-मेल/E-mail : ddrioguw-dol@nic.in

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि **भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर-पूर्व),गुवाहाटी** द्वारा राजभाषा गृह-पत्रिका ***'नवचेतना'*** का **छठा अंक** प्रकाशित किया जा रहा है। यह सराहनीय पहल राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाती है तथा कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा अभिव्यक्त करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है ।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र में खाद्यान्नों की खरीद, भंडारण एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली के सफल क्रियान्वयन में भारतीय खाद्य निगम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ***'नवचेतना'*** के माध्यम से इन विविध गतिविधियों, उपलब्धियों एवं अनुभवों की सार्थक प्रस्तुति न केवल ज्ञानवर्धक होगी बल्कि यह संगठन के कार्यों के प्रति जागरूकता भी बढ़ाएगी।

साथ ही,यह पत्रिका कर्मचारियों में साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें अपने विचार,अनुभव एवं रचनात्मकता को साझा करने के लिए प्रेरित करती है,जो किसी भी संस्थान की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ***'नवचेतना'*** का यह अंक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं रोचक सिद्ध होगा। इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों, संपादक मंडल एवं संबंधित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आप सभी से अपेक्षा है कि आप भविष्य में भी इसी समर्पण और उत्कृष्टता के साथ अपने कार्यों को आगे बढ़ाते रहें तथा राजभाषा हिन्दी के साथ-साथ समस्त भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं व्यापक प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय एवं प्रेरणादायी भूमिका निभाते रहें,इसी विश्वास और शुभेच्छा के साथ।

12/05/26

(राजीव कुमार नायक)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यांवयन कार्यालय,गुवाहाटी

भारत सरकार
Government of India
गृह मंत्रालय : राजभाषा विभाग
Ministry of Home Affairs : Department of Official Language
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी
Town Official Language Implementation Committee (PSUs), Guwahati

सत्यमेव जयते

न रा
का स
उपक्रम गुवाहाटी

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी के अंतर्गत सदस्य कार्यालय 'भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर पूर्व), गुवाहाटी' अपनी राजभाषा गृह पत्रिका **'नवचेतना'** के छठे अंक का प्रकाशन करने जा रही है। भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर पूर्व), गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देती है अपितु क्षेत्रीय एकता और समृद्ध साहित्यिक परंपरा को भी प्रोत्साहित करती है।

किसी भी संस्थान की गृह पत्रिका में केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं होती बल्कि वह वहां के कर्मचारियों की सृजनात्मकता, वैचारिक चेतना और भाषाई दक्षता का प्रतिबिंब होती है। पूर्वोत्तर जैसे विविध संस्कृति और भाषा वाले क्षेत्र में, भारतीय खाद्य निगम न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही है बल्कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज करा रही है।

'नवचेतना' नाम स्वयं में स्फूर्ति और जागृति का प्रतीक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह पहल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विविधता को एक मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ कार्मिकों के बीच साहित्यिक अभिरुचि को और अधिक सुदृढ़ करेगा। पत्रिका का प्रत्येक लेख पाठकों के लिए ज्ञान, प्रेरणा और सामाजिक संबाद का एक अनमोल स्रोत है।

गृह पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन की दिशा में एक सराहनीय कदम है। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर पूर्व), गुवाहाटी के समस्त अधिकारियों, संपादन मंडल और उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी अपनी उत्कृष्टता और प्रभाव को बनाए रखेगी। पत्रिका में प्रकाशित लेखों द्वारा कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों में सृजनात्मक क्षमता एवं अभिरुचि को वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और निरंतर प्रगति के लिए मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएँ।

(सुनील कांति)
अध्यक्ष, नराकास (उपक्रम) गुवाहाटी एवं
कार्यकारी निदेशक व रिफाइनरी प्रमुख
गुवाहाटी रिफाइनरी

कार्यालय : गुवाहाटी रिफाइनरी, नूनमाटी, गुवाहाटी - 781020
Office : Guwahati Refinery, Noonmati, Guwahati – 781020
फोन / Phone : 03612597152 ई-मेल / E-Mail – sahd@indianoil.in

इंडियनऑयल
IndianOil

दिव्य प्रकाश शुक्ला
कार्यकारी निदेशक(उ.पू.)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

संदेश

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय द्वारा गृह पत्रिका 'नवचेतना' के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारतीय खाद्य निगम, उत्तर पूर्व अंचल खाद्यान्नों की खरीद, वैज्ञानिक तरीके से खाद्यान्नों के रख रखाव, भंडारण, परिचालन एवं वितरण के माध्यम से भारत सरकार की खाद्य सुरक्षा नीति को प्रभावी ढंग से लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मकता विचारों और उपलब्धियों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है। राजभाषा पत्रिका हमारे लिए सिर्फ एक पत्रिका नहीं बल्कि हिंदी भाषा के विकास और प्रचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह हमें अपने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और इसे दैनिक कार्यों में सहजता से शामिल करने की प्रेरणा देती है।

हिंदी भाषा का सही और प्रभावी उपयोग न केवल हमारे संचार को सरल बनाता है बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करता है। इस पत्रिका के माध्यम से हम रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करते हैं जिससे नए विचार और खोज सामने आते हैं।

इस अवसर पर मैं संपादकीय मंडल, सभी रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(दिव्य प्रकाश शुक्ला)

ओ.पी. डाणी
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
मुख्यालय

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित की जा रही 'नवचेतना' का 'छठा' अंक राजभाषा हिंदी को सशक्त करने और उसके महत्व को समझाने का एक सुंदर माध्यम है।

कार्यालय में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने से न केवल हमारी भाषा का विकास होगा बल्कि कामकाज में भी स्पष्टता और एकरूपता आएगी। अतः हम सभी हिंदी भाषा को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाते हुए अपनी रचनात्मक सोच को पत्रिकाओं में लेखन के माध्यम से उजागर करें।

मुझे आशा है इस पत्रिका में उत्तर-पूर्व अंचल की संस्कृति, वेषभूषा, रमणीय स्थलों, साहित्य, भाषाओं, बोलियों एवं राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वियन हेतु किए गए प्रयासों की जानकारी का समावेश देखने को मिलेगा।

'नवचेतना' के 'छठे 'अंक के प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

(ओ.पी. डाणी)

कैलाश चंद्र साहू
मुख्य महाप्रबंधक(उ.पू.)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

संदेश

गृह पत्रिका 'नवचेतना' के छठे अंक का प्रकाशन हमारे लिए हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का एक अनमोल साधन है। यह हमें कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और इसे रोज़मर्रा के कामकाज का हिस्सा बनाने में मदद करती है। हिंदी का सही उपयोग हमारे कार्यों को सरल और प्रभावी बनाता है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम अपनी रचनात्मक सोच को भी प्रकट कर सकते हैं। नई-नई विचारधाराएँ और नवाचार इसी रचनात्मकता से जन्म लेते हैं, जो हमारे संगठन और समाज दोनों के लिए लाभकारी हैं।

यह अंक आप सभी के कठिन परिश्रम, रचनात्मक सोच, और सतत समर्पण का प्रतिफल है। आपके उत्साह और सहयोग ने ही इस विचार को साकार रूप दिया है।

इस अंक में सरल भाषा, विषयवस्तु और सहज प्रस्तुति के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि 'नवचेतना' न केवल एक पत्रिका के रूप में, बल्कि एक विशेष उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देगा।

आइए, हम सभी राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का संकल्प लें तथा अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों से 'नवचेतना' को और अधिक समृद्ध बनाएँ। यही प्रयास हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी सुदृढ़ करेगा।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी को अनेक शुभकामनाएँ।

(कैलाश चंद्र साहू)

मनमोहन सिंह सारंग
महाप्रबंधक (सामान्य)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर-पूर्व) द्वारा गृह पत्रिका 'नवचेतना' के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 'नवचेतना' केवल एक नाम नहीं, बल्कि यह नई ऊर्जा, नव-विचारों के संचार एवं सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा का प्रतीक है। यह पत्रिका न केवल निगम के कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है, बल्कि संगठन में नवाचार, उत्साह, सहयोग एवं एकजुटता की भावना को भी सुदृढ़ करने का माध्यम है।

हमारा देश विविधताओं में एकता का अद्भुत उदाहरण है और उत्तर-पूर्व अंचल इसका सजीव एवं सशक्त स्वरूप प्रस्तुत करता है। यहां कोस-कोस पर बदलती बोलियां, विभिन्न भाषाएं, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विविध परिधान एवं खान-पान की बहुरंगी छटा भारतीय संस्कृति की समृद्धि को दर्शाती है। इन सभी विविधताओं के बीच हिंदी एक सशक्त सेतु के रूप में कार्य करते हुए संवाद, समन्वय एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस अंक में प्रकाशित लेख कार्मिकों की रचनात्मक सोच, अनुभवों, भावनाओं एवं प्रतिभा का उत्कृष्ट परिचायक हैं। ये लेख न केवल ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं, बल्कि संगठनात्मक संस्कृति को समृद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

मुझे विश्वास है कि 'नवचेतना' का यह अंक पाठकों के लिए नवीन दृष्टिकोण, प्रेरणा एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा तथा उन्हें सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करेगा। यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार नवाचार, विचारों की समृद्धि एवं संगठनात्मक एकता को बढ़ावा देती रहे-यही अपेक्षा है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी संबंधित अधिकारियों, संपादकीय मंडल एवं समस्त कार्मिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

एम.एस. सारंग

(मनमोहन सिंह सारंग)

देवेन्द्र कुमार भास्कर
महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर-पूर्व), गुवाहाटी द्वारा विगत कई वर्षों से राजभाषा गृह-पत्रिका 'नवचेतना' का नियमित एवं सफल प्रकाशन किया जा रहा है तथा अब इसका छठा अंक प्रकाशित हो रहा है। यह निरंतरता राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति संस्थान की दृढ प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

भारतीय खाद्य निगम, भारत सरकार का एक प्रमुख उपक्रम है जो किसानों के हितों की सुरक्षा हेतु प्रभावी मूल्य समर्थन संचालन, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत देशभर में खाद्यान्न वितरण तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बफर स्टॉक के संतोषजनक स्तर को बनाए रखने जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का सफल निर्वहन कर रहा है। उत्तर-पूर्व के दुर्गम अंचलों में भी खाद्यान्नों की खरीद, भंडारण एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली के कुशल संचालन में निगम की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है।

भारतीय खाद्य निगम की कार्यप्रणाली में राजभाषा हिन्दी का उपयोग विभिन्न स्तरों पर समन्वय को सुदृढ़ करने तथा नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायक रहा है और इस दिशा में नवचेतना' जैसी गृह-पत्रिकाएँ संगठन की गतिविधियों का दर्पण होने के साथ-साथ कार्मिकों के विचारों, नवाचारों एवं अनुभवों के सृजनात्मक आदान-प्रदान का सशक्त मंच प्रदान करती हैं।

मुझे विश्वास है कि 'नवचेतना' का यह छठा अंक निगम की उपलब्धियों को जनसामान्य तक प्रभावशाली रूप से पहुँचाने के साथ-साथ कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने हेतु निरंतर प्रेरित करेगा।

(देवेन्द्र कुमार भास्कर)

रोहित गर्ग
उपमहाप्रबंधक(राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय(उ.पू.), गुवाहाटी

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारी बहुप्रतीक्षित गृह पत्रिका 'नवचेतना' के छठे अंक का सफलतापूर्वक प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक सोच, साहित्यिक अभिरुचि और सामूहिक प्रयासों का सशक्त प्रतिबिंब है।

'नवचेतना' राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। साथ ही, यह रचनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करते हुए नए विचारों, सकारात्मक सोच और ज्ञान के आदान-प्रदान को भी बढ़ावा देती है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपके मन को छूएगा और आपको विचारों की एक नई दिशा प्रदान करेगा।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।

रोहित

(रोहित गर्ग)

बेबी रानी मिश्रा
सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उ.पू.), गुवाहाटी

संदेश

सर्वप्रथम, मैं 'नवचेतना' के छठे अंक के सफल प्रकाशन पर सभी पाठकों, रचनाकारों, संपादकीय मंडल तथा इस कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। यह उपलब्धि हम सभी के सामूहिक प्रयास, समर्पण एवं रचनात्मक सहभागिता का परिणाम है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'नवचेतना' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है और यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा, नवीन विचारों एवं अनुभवों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच बन रही है। किसी भी संगठन की गृह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह संगठन की कार्य-संस्कृति, विचारों की समृद्धि एवं सामूहिक भावना का प्रतिबिंब भी होती है।

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ एवं अन्य रचनाएँ कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता और साहित्यिक अभिरुचि को प्रदर्शित करती हैं। साथ ही, यह राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मैं सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके योगदान से 'नवचेतना' की यह यात्रा निरंतर सफल हो रही है। मुझे विश्वास है कि इस अंक के माध्यम से पाठकों को नवीन विचार, प्रेरणा एवं सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होगी।

पुनः, 'नवचेतना' के छठे अंक के सफल प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

(बेबी रानी मिश्रा)

संपादकीय

शोभित शरद सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.पू.), गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका 'नवचेतना' का 'छठा' अंक नये कलेवर में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार खुशी का अनुभव हो रहा है।

यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विचारों, अनुभवों और संकल्पों का साझा मंच है। भारतीय खाद्य निगम की आंचलिक कार्यालय (उ.पू.), गुवाहाटी से प्रकाशित इस पत्रिका का उद्देश्य रचनात्मकता को प्रोत्साहन देना, राजभाषा हिंदी के संवर्धन में योगदान करना और खाद्यान्न सुरक्षा जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषय पर जागरूकता फैलाना है।

रचनाकारों एवं लेखकों ने इस अंक में अपनी लेखनी से विविध आयामों को उजागर किया है। कविता, कहानी, निबंध और आलेखों के माध्यम से उन्होंने समाज, संस्कृति और कार्यक्षेत्र की चुनौतियों को शब्दों में पिरोया है। यह रचनात्मकता ही "नवचेतना" को जीवंत बनाती है।

भारतीय खाद्य निगम सदैव राजभाषा हिंदी के प्रयोग और प्रसार के लिए प्रतिबद्ध रहा है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी पहचान और एकता का प्रतीक है। इस पत्रिका के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते हैं कि राजभाषा का प्रयोग हमारे कार्यों में सहजता और आत्मीयता लाता है।

भारतीय खाद्य निगम का मूल दायित्व देश के नागरिकों को खाद्यान्न की सुरक्षा और उपलब्धता सुनिश्चित करना है। यह केवल एक प्रशासनिक कार्य नहीं बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है। इस अंक में प्रस्तुत लेखों के माध्यम से हम खाद्यान्न प्रबंधन, भंडारण और वितरण की चुनौतियों पर प्रकाश डालते हैं ताकि पाठक इस विषय की गंभीरता को समझ सकें।

अंत में 'नवचेतना' का 'छठा' अंक रचनात्मकता, भाषा और खाद्यान्न सुरक्षा के त्रिवेणी संगम के रूप में आपके सामने है। हमें विश्वास है कि यह अंक आपको प्रेरित करेगा और विचारों की नई दिशा देगा।

(शोभित शरद सिंह)

नवचेतना 'छठा अंक'
वर्ष 2026

प्रधान संरक्षक
दिव्य प्रकाश शुक्ला
कार्यकारी निदेशक (उ.पू.)

संरक्षक एवं मार्गदर्शक
कैलाश चंद्र साहू
मुख्य महाप्रबंधक (उ.पू.)

प्रधान संपादक
देवेंद्र कुमार भास्कर
महाप्रबंधक (राजभाषा)

सह संरक्षक एवं दिशानिर्देश
रोहित गर्ग
उपमहाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
1.बेबी रानी मिश्रा
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
2.शोभित शरद सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
3.रवि कुमार जयसवाल
सहायक श्रेणी – I (राजभाषा)
4.नीलाक्षी पावे
सहायक श्रेणी - III (राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं आदि की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों का है। प्रकाशित रचनाओं के विषय एवं लेख लेखकों के निजी विचार हैं, भारतीय खाद्य निगम का उनमें सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय खाद्य निगम
आंचलिक कार्यालय(उ.पू.),
जी.एल.पब्लिकेशन बिल्डिंग, जी.एस. रोड, उलूबारी,
गुवाहाटी

अनुक्रमणिका

लेख

भारतीय खाद्य निगम की संवैधानिकता और कानून का अनुपालन	अरिंदम सरकार	01
पूर्वोत्तर भारत में भारतीय खाद्य निगम: खाद्य सुरक्षा की मज़बूत रीढ़	चंदन शर्मा	03
भारतीय खाद्य निगम में फैप की सहायता से संकलन कार्य : एक विस्तृत विवरण	मनोज कुमार सिन्हा	05
उत्तर पूर्व की सुंदरता	जे.एस.साइजू	07
हाफलोंग यात्रा : एक अविस्मरणीय अनुभव	रोहित गर्ग	08
मानव जीवन और आत्म साक्षात्कार	बेबी रानी मिश्रा	10
माजुली द्वीप का इतिहास और जीवंत संस्कृति	नीलाक्षी पावे	12
राजभाषा : कार्य की भाषा, राष्ट्र की अभिव्यक्ति	दीपक छेत्री	15
संगीत	कनिष्क धर	16
खेलते बचपन पर विशाल होमवर्क का बोझ	जीतू कुमार	17
संगीत और इंसानियत के नायक	सरफराज अंसारी	18
मां	पबन बेज़बरुआ	19
परिवार से दूर, सपनों के पास: एक सरकारी कर्मचारी की भावनात्मक यात्रा	रोहित कुमार मिश्रा	20

अनुक्रमणिका

गांधी मंडप: शांति और विरासत का प्रतीक	सरफराज अंसारी	21
आधुनिक पुरुष का मानसिक स्वास्थ्य : एक अनकहा सत्य	चंदन शर्मा	22
औद्योगिक और प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग	मुनु दास	23
पूर्वोत्तर भारत के मिथक और किंवदंतियां	अंकिता सिन्हा	25
नो फ्लाइंग जोन : एक अनकनेक्टेड गांव अनकनेक्टेड गांव	सचीन्द्र नंदन चौधरी	28
बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था, समाजऔर माता पिता की भूमिका, एक समग्र दृष्टिकोण	ज्योति जयसवाल	32
लियो टॉलस्टॉय के जीवन और कृतियों का परिचय	शोभित शरद सिंह	34
जब सिस्टम के भीतर भी आत्मा ज़िंदा रहे	रवि कुमार जयसवाल	38
सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में ट्रेड यूनियन की अनिवार्यता	बिमल कुमार चौधुरी	40
मैं बिहार हूं	मनोज कुमार सिन्हा	41
प्रेम	महेश जयसवाल	42
कोशिश	ज्योति रॉय	42
असम : पूर्वोत्तर का स्वर्ण मुकुट	मनोज कुमार सिन्हा	43
बचपन की यादें	मनोज कुमार पंडित	44
नैतिकता और ईमानदारी : सरकारी सेवा का मूलमंत्र	दीपक छेत्री	45
मेरा प्यारा डुग्गु	सरफराज अंसारी	45
नववर्ष	महेश जयसवाल	46

भारतीय खाद्य निगम की संवैधानिकता और कानून का अनुपालन

अरिंदम सरकार
सहायक महाप्रबंधक (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

भारतीय खाद्य निगम की स्थापना 14 जनवरी, 1964 को खाद्य निगम अधिनियम 1964 के तहत हुई थी। खाद्य निगम अधिनियम 1964, अधिनियम संख्या 37, वर्ष 1964, तहत 10 दिसंबर, 1964 को लागू किया गया था। यह अधिनियम खाद्यान्नों और अन्य खाद्य सामग्री के व्यापार के उद्देश्य से खाद्य निगमों की स्थापना तथा उससे संबंधित और उसके आनुषंगिक विषयों के लिए उपबंध करने के लिए लागू किया गया था।

खाद्य निगम अधिनियम 1964 में 6 अध्याय, 46 धारा और एक अनुसूची है। अध्याय 2 (धारा 3 -15) में भारतीय खाद्य निगम, इसकी स्थापना, पूंजी, संचालन, निदेशक मंडल, निगम के अधिकारी और अन्य कर्मचारियों, निगम के कार्य, कार्यकारी समिति, बोर्ड के सदस्यों वगैरह के बारे में बताया गया है।

अध्याय 3 में प्रबंधन बोर्ड (मैनेजमेंट बोर्ड), उनके गठन और कार्य के बारे में बताया गया है।

अध्याय 5 पर वित्त, लेखा और अंकेक्षण के बारे में चर्चा की गई। इस अध्याय में वित्तीय आकलन, खाद्य निगम की उधार लेने की अधिकार, खाद्यान्नों की सुरक्षा पर खाद्य निगम द्वारा ऋण लेना, फसल कटाई के बाद खाद्यान्नों की खरीद के लिए समझौता करने की अधिकार, खाद्य निगम द्वारा गारंटी, खाद्य निगम के पूंजी, पूंजी का निवेश, अधिशेष लाभ का आवंटन, लेखा और अंकेक्षण, और खाद्य निगमों के कामकाज पर वार्षिक रिपोर्ट पर चर्चा की गई है।

अध्याय 6 में रिक्तियां, प्रतिनिधान, निष्ठा और गोपनीयता की घोषणा, निदेशकों की क्षतिपूर्ति, इस अधिनियम के तहत की गई कार्रवाई की सुरक्षा, आयकर, सुपर-टैक्स आदि से संबंधित प्रावधान, खाद्य निगम का समेटना / समापन, नियम बनाने की अधिकार, खाद्य निगम की विनियमन बनाने की अधिकार आदि का वर्णन है।

भारतीय खाद्य निगम द्वारा कानून का अनुपालन

भारतीय खाद्य निगम खुद खाद्य निगम अधिनियम 1964 के तहत कानूनी तौर पर बनाया गया था। भारतीय खाद्य निगम में मुख्य रुप से जिन अधिनियमों का अनुपालन किया जाता है वे हैं;

1. सार्वजनिक अभिलेख अधिनियम, 1993 अधिनियम संख्या 69, वर्ष 1993

रिकॉर्ड के रखरखाव और निपटान का काम इस अधिनियम के अनुसार किया जाता है।

2. सूचना का अधिकार अधिनियम , 2005

लोक सूचना अधिकारी का नाम प्रकाश करना, आवेदक को जानकारी देना, अनुरोध का निपटारा करना, अनुरोध अस्वीकार करने का आधार इत्यादि इस एक्ट के अनुसार किया जाता है।

3. ग्रेच्युटी भुगतान अधिनियम, 1972

ग्रेच्युटी का भुगतान इस अधिनियम के तहत सख्ती से किया जाता है।

4. कर्मचारी भविष्य निधि और विविध अधिनियम, 1952

भविष्य निधि का भुगतान और भविष्य निधि भुगतान से जुड़े

हुए मामले इस अधिनियम के अनुसार हल किए जाते हैं।

5. मजदूरी भुगतान अधिनियम, 1936

विभागीय मजदूरों और डीपीएस मजदूरों को मजदूरी का भुगतान, मजदूरों का वेतन संशोधन, और पेमेंट से जुड़े दूसरे मामलों का इस एक्ट के तहत पालन किया जाता है।

6. न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948

विभागीय मजदूरों और डीपीएस मजदूरों को मजदूरी का भुगतान, मजदूरों का वेतन संशोधन, और पेमेंट से जुड़े दूसरे मामलों का इस एक्ट के तहत पालन किया जाता है।

7. औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947

इस कानून के अनुसार, भारतीय खाद्य निगम में सभी श्रम विवाद सुलझाए जाते हैं।

8. बोनस भुगतान अधिनियम, 1965

इस एक्ट को भारतीय खाद्य निगम में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से निपटाया जाता है।

9.ट्रेड यूनियन अधिनियम, 1926

यह अधिनियम भारतीय खाद्य निगम में ट्रेड यूनियनों पर लागू होता है।

10. मातृत्व लाभ अधिनियम 1961

इस अधिनियम के तहत महिला कर्मचारियों को मातृत्व अवकाश की मंज़ूरी और अन्य मातृत्व कालीन सुविधाएँ दी जाती हैं।

11. महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम, 2013

इस अधिनियम के धारा 4 के मुताबिक, सभी क्षेत्रीय कार्यालय, आंचलिक कार्यालय, मंडल कार्यालय और मुख्यालय में आंतरिक परिवाद समिति (ICC) बनाया गया है। भारतीय खाद्य निगम में आंतरिक परिवाद समिति के प्रेसाइडिंग ऑफिसर का नाम अनिवार्य रूप से प्रदर्शित किया जाता है। निगम में लैंगिक उत्पीड़न को रोकने के लिए निगम की महिला कर्मचारियों के लिए जागरुकता कार्यक्रम, ट्रेनिंग और अधिनियम के संबंध में जानकारी दी जाती हैं। जैसे की, धारा 2(n) उन्हें लैंगिक उत्पीड़न क्या है यह जानने में मदद करता है, धारा 9 लैंगिक उत्पीड़न की परिवाद, धारा 11 परिवाद की जांच, धारा 12 जांच लंबित रहने के दौरान कार्रवाई, धारा 14 मिथ्या या द्वेषपूर्ण परिवाद और मिथ्या साक्ष्य के लिए दण्ड, धारा 19 नियोजक के कर्तव्य इत्यादि का जानकारी देती है।

उपरोक्त अधिनियम के अलावाभारतीय खाद्य निगम में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अन्य अधिनियम का भी पालन किया जाता है।

अंततः भारतीय खाद्य निगम कानून-सम्मत, सुव्यवस्थित तथा उत्तरदायी प्रशासनिक ढाँचे के माध्यम से राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन कर रहा है। निगम द्वारा विभिन्न संवैधानिक एवं श्रम-संबंधी अधिनियमों का कठोर अनुपालन न केवल इसकी संस्थागत पारदर्शिता को सुनिश्चित करता है, बल्कि सार्वजनिक विश्वास को भी सुदृढ़ करता है।

निगम परिवार के प्रत्येक सदस्य का यह नैतिक एवं व्यावसायिक कर्तव्य है कि वह सभी लागू विधिक प्रावधानों का पूर्ण अनुशासन, निष्ठा और पेशेवर प्रतिबद्धता के साथ पालन करे। विधि-पोषित कार्यप्रणाली ही निगम की साख, उसकी संप्रभुता और राष्ट्र के प्रति उसकी सेवा-भावना को निरंतर सुदृढ़ बनाए रख सकती है।

इस भावना के साथ, हम सबको एकजुट होकर भारतीय खाद्य निगम को “कानूनी अनुपालन, पारदर्शिता और उत्कृष्टता” का आदर्श मॉडल बनाने के संकल्प को आगे बढ़ाना चाहिए।

पूर्वोत्तर भारत में भारतीय खाद्य निगम: खाद्य सुरक्षा की मज़बूत रीढ़

चंदन शर्मा
प्रबंधक(सामान्य)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

भारत की खाद्य सुरक्षा और जनकल्याण की बात की जाए तो भारतीय खाद्य निगम का नाम सबसे अग्रणी रूप में सामने आता है। वर्ष **1965** में स्थापित यह संगठन आज देश के करोड़ों नागरिकों के लिए पोषण और न्यूनतम खाद्य उपलब्धता का एक सशक्त आधार बना हुआ है। विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत में भारतीय खाद्य निगम का योगदान सामाजिक, आर्थिक और मानवीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

पूर्वोत्तर की विशेष चुनौतियाँ, विशेष समाधान

सात राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम, त्रिपुरा और मेघालय से मिलकर बना पूर्वोत्तर क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है परंतु भौगोलिक दृष्टि से परिवहन और संचार नेटवर्क यहाँ काफी सीमित है। पहाड़ी मार्ग, भूस्खलन, अत्यधिक वर्षा और सीमावर्ती स्थिति यहाँ खाद्यान्न प्रबंधन को जटिल बनाते हैं।

इन्हीं चुनौतियों के बीच भारतीय खाद्य निगम लगातार यह सुनिश्चित करता है कि हर नागरिक चाहे वह कितनी भी दूर या दुर्गम जगह पर रहता हो अनाज पहुँचता रहे। मानसून जैसे कठिन मौसम में अग्रिम भंडारण की व्यवस्था कर खाद्यान्न आपूर्ति को निर्बाध बनाना भारतीय खाद्य निगम की बड़ी उपलब्धि है।

लॉजिस्टिक्स का अनोखा नेटवर्क

गुवाहाटी स्थित आंचलिक कार्यालय पूरे पूर्वोत्तर के लिए कमांड सेंटर की तरह कार्य करता है। रेल के माध्यम से अनाज पूर्वोत्तर के राज्यों के उन गोदामों तक पहुँचाया जाता है जहां रेल परिवहन की व्यवस्था है फिर सड़क मार्ग से विभिन्न गोदामों में आगे भेजा जाता है।

अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और मिज़ोरम जैसे राज्यों में जहाँ सड़क संपर्क बाधित होता है भारतीय खाद्य निगम वैकल्पिक साधनों जैसे मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट और कई बार आकाश मार्ग तक का उपयोग करता है।

भंडारण व्यवस्था में भी निगम निरंतर आधुनिक तकनीक को अपना रहा है—

- स्टील साइलो
- वैज्ञानिक ढंग से निर्मित विशाल गोदाम
- डिजिटल स्टॉक ट्रैकिंग प्रणाली

यह न केवल खाद्यान्न संरक्षण में सहायक है बल्कि पारदर्शिता और दक्षता भी सुनिश्चित करता है।

किसानों के जीवन में नई ऊर्जा

पूर्वोत्तर राज्यों में धान खरीद कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम एस पी) का सीधा लाभ मिल रहा है।

इससे:

- ➠ बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई
- ➠ कृषि को आर्थिक स्थिरता मिली
- ➠ ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त हुई

असम और त्रिपुरा में विशेषकर यह पहल किसानों को अधिक उत्पादन और तकनीकी प्रगति के लिए प्रेरित कर रही है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली: समाज के अंतिम व्यक्ति तक पोषण की पहुँच

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अंतर्गत रियायती मूल्य

पर अनाज उपलब्ध कराना पूर्वोत्तर में एक बड़े सामाजिक परिवर्तन का कारक बना है।

ऐसे क्षेत्र जहाँ आजीविका के साधन सीमित हैं भारतीय खाद्य निगम की आपूर्ति प्रणाली कुपोषण को कम करने,परिवारों की खाद्य आवश्यकताओं को सुरक्षित करने विशेषकर जनजातीय व सीमावर्ती क्षेत्रों में जीवन स्तर सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन

भारतीय खाद्य निगम के संचालन से स्थानीय स्तर पर हजारों लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है जैसा कि

- परिवहन क्षेत्र
- मजदूरी और श्रमिक कार्य
- प्रशासनिक व तकनीकी सेवाएँ ये सभी क्षेत्र पूर्वोत्तर की

आर्थिक गतिविधियों में सक्रियता लाते हैं।

वर्तमान में मौजूद चुनौतियाँ

हालाँकि प्रगति के साथ कुछ चुनौतियाँ लगातार सामने आती रहती हैं:

- सीमित सड़क और रेल संपर्क
- प्राकृतिक आपदाएँ
- स्थानीय जरूरतों के अनुरूप अधोसंरचना का अभाव
- सीमांत क्षेत्रों में सुरक्षा से संबंधित कठिनाइयाँ

सरकार और भारतीय खाद्य निगम इन चुनौतियों को दूर करने हेतु बड़े स्तर परआधुनिक गोदाम निर्माण,कनेक्टिविटी विस्तार और डिजिटलीकरण पर कार्य कर रहे हैं।

भविष्य की राह

पूर्वोत्तर भारत विकास के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय में भारतीय खाद्य निगम की भूमिका केवल खाद्यान्न वितरण तक सीमित नहीं, बल्कि आंचलिक प्रगति की एक प्रेरक शक्ति बन चुकी है। बेहतर परिवहन नेटवर्क और स्थानीय कृषि को बढ़ावा देकर आने वाले वर्षों में भारतीय खाद्य निगम इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को और अधिक सशक्त बना सकता है।

निष्कर्ष

पूर्वोत्तर भारत में भारतीय खाद्य निगम का संचालन केवल खाद्य आपूर्ति का कार्यक्रम नहीं बल्कि यह विश्वास, सुरक्षा और विकास की एक स्थायी प्रक्रिया है। कठिन परिस्थितियों में भी सेवा की निरंतरता इस संगठन को पूर्वोत्तर जनता के लिए "जीवन रेखा" के समान बनाती है।

भारतीय खाद्य निगम में फैप की सहायता से संकलन कार्य : एक विस्तृत विवरण

मनोज कुमार सिन्हा
प्रबंधक (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा प्रणाली के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इतने व्यापक एवं बहुस्तरीय संचालन को सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए एक मजबूत, पारदर्शी और सटीक लेखा प्रणाली अनिवार्य होती है। इसी दिशा में भारतीय खाद्य निगम का **लेखा अनुभाग** देशभर के विभिन्न कार्यालयों में होने वाले वित्तीय लेनदेन का संकलन, सत्यापन और विश्लेषण कर एकीकृत वित्तीय स्थिति प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व निभाता है। इस कार्य को **संकलन कार्य (Compilation Work)** कहा जाता है जो संगठन की वित्तीय विश्वसनीयता और निर्णय प्रक्रिया का आधार है।

इस जटिल और व्यापक कार्य को कुशलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए भारतीय खाद्य निगम ने फैप /**Financial Accounting Package (FAP)** को एक केंद्रीकृत डिजिटल मंच के रूप में अपनाया है। फैप न केवल लेखा प्रविष्टियों को मानकीकृत करता है बल्कि डेटा संकलन, सत्यापन, रिपोर्टिंग और ऑडिट प्रक्रियाओं को अत्यंत सरल, तेज़ और सटीक बनाता है।

संकलन कार्य का महत्व और उद्देश्य

भारतीय खाद्य निगम की वित्तीय प्रणाली विविध गतिविधियों जैसे खाद्यान्न खरीद, भंडारण, वितरण, परिवहन, गोदाम किराया, वेतन-भुगतान तथा बैंकिंग लेनदेन आदि से जुड़ी होती है। इन सभी गतिविधियों से उत्पन्न वित्तीय डेटा विशाल और विविध प्रकृति का होता है। संकलन कार्य का मुख्य उद्देश्य इस बिखरे हुए डेटा को—

- निकायों गोदामों, मंडल कार्यालयों, क्षेत्रीय कार्यालयों से एकत्र करना
- उसका सत्यापन और मिलान करना
- वर्गीकृत कर एकीकृत रूप में प्रस्तुत करना
- मासिक, तिमाही और वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट तैयार करना
- संगठन की वास्तविक वित्तीय स्थिति को स्पष्ट करना

यह प्रक्रिया कार्य-प्रणाली की पारदर्शिता सुनिश्चित करती है और उच्च-स्तरीय निर्णयों को विश्वसनीय बनाती है।

फैप/ FAP (Financial Accounting Package) का उपयोग और उसका महत्व

फैप भारतीय खाद्य निगम की वित्तीय प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए विकसित एक आधुनिक और समग्र लेखा सॉफ़्टवेयर है। यह देशभर की सभी शाखाओं और कार्यालयों को एक साझा मंच पर जोड़कर वित्तीय लेनदेन को केंद्रीकृत रूप से नियंत्रित करने की सुविधा प्रदान करता है।

इसके मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं—

- ·एकीकृत और मानकीकृत लेखा प्रणाली
- ·त्रुटि-न्यून और पारदर्शी डेटा प्रविष्टि
- रियल-टाइम अपडेट और त्वरित रिपोर्टिंग
- मजबूत डेटा सुरक्षा और बैकअप
- ऑडिट के लिए व्यवस्थित तथा आसानी से उपलब्ध रिकॉर्ड
- फैप में बुक किए गए खर्च सीधे सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) पोर्टल में फ्लो होते हैं।

*वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) पोर्टल

एक ऑनलाइन भारतीय सरकारी प्लेटफॉर्म है जो सरकारी

योजनाओं के तहत जारी किए गए फंड को ट्रैक करता है, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर को मुमकिन बनाता है और पेमेंट, रसीदें और अकाउंटिंग जैसे फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन को मैनेज करता है।

फैप की सहायता से संकलन / कंपाइलेशन का कार्य न केवल समयबद्ध होता है बल्कि अत्यंत विश्वसनीय भी बनता है।

संकलन कार्य (Compilation Work) की प्रमुख प्रक्रियाएँ (फैप/ FAP द्वारा समर्थित)

1. डेटा संग्रहण और प्रविष्टि

देशभर के डिपो, मंडल ,क्षेत्रीय और आंचलिक कार्यालयों से खरीद बिल, परिवहन भुगतान, गोदाम खर्च, स्टॉक मूल्यांकन, वेतन और बैंक लेनदेन से संबंधित डेटा प्राप्त होता है। इस सभी डेटा को फैप के माध्यम से रिकॉर्ड किया जाता है। फैप में इस डेटा को वर्गीकृत कर उचित खातों (हेड ऑफ अकाउंट/ HOA) में स्वचालित रूप से पोस्ट कर देता है।

2. लेनदेन का सत्यापन और समायोजन

फैप विभिन्न खातों जैसे—

- बैंक स्टेटमेंट
- कैश बुक
- सब लेजर
- सप्लायर/कॉन्ट्रैक्टर का भुगतान

का स्वचालित मिलान (Reconciliation) करता है। किसी भी विसंगति को सिस्टम तुरंत पहचान लेता है, जिसे लेखा अनुभाग द्वारा ठीक कर डेटा को अंतिम रूप दिया जाता है।

3. वाउचर और दस्तावेजों का संकलन

सभी प्रकार के भुगतान और प्राप्ति वाउचर हार्ड कॉपी /डिजिटल रूप से दर्ज और सुरक्षित रहते हैं। इससे—

- रिकॉर्ड प्रबंधन सरल होता है
- दस्तावेज़ों का ट्रैक रखना आसान होता है
- ऑडिट के दौरान आवश्यक जानकारी तुरंत उपलब्ध होती है
- संकलन कार्य (Compilation Work) का सबसे महत्वपूर्ण चरण रिपोर्ट तैयार करना है। फैप अत्यंत सटीकता के साथ प्रमुख वित्तीय रिपोर्टें तैयार करता है, जैसे—

- ट्रायल बैलेंस (Trial Balance) तैयार करना
- मासिक संपत्ति वृद्धि/ रिटायरमेंट (Monthly Assets Addition/Retirement)
- ट्रायल बैलेंस (TB) और शेड्यूल(Schedule) का मिलान करना
- मासिक व्यय विवरण देखना
- आय एवं खर्च सारांश (Income & Expenditure Summary)
- बैंक समाधान विवरण (Bank Reconciliation Statement)
- स्टॉक और वित्तीय मूल्यांकन रिपोर्ट संबंधित खाता शीर्ष में दर्शाई गई शेष राशि के साथ मिलान करना।
- गलत हेड में खर्च बुक हो जाने पर समय से सुधार करना।

ये रिपोर्टें न केवल आंतरिक प्रबंधन बल्कि विभिन्न सरकारी एजेंसियों, मंत्रालयों और ऑडिट संगठनों के लिए भी महत्वपूर्ण होती हैं।

फैप के अतिरिक्त लाभ

- **पारदर्शिता:** स्वचालित प्रोसेसिंग से मानवीय त्रुटियाँ घटती हैं।
- **गति:** बड़ी मात्रा में डेटा को कम समय में संसाधित किया जा सकता है।
- **विश्वसनीयता:** एकीकृत प्लेटफ़ॉर्म वित्तीय विश्लेषण को अधिक सटीक बनाता है।
- **सुविधा:** प्रबंधन को किसी भी समय आवश्यक रिपोर्ट उपलब्ध हो जाती है।

भारतीय खाद्य निगम के लेखा अनुभाग में **संकलन कार्य** संगठन के वित्तीय संचालन का मूल स्तंभ है। यह संपूर्ण वित्तीय डेटा को अद्यतन, सटीक और सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है। फाइनांसियल एकाउंटिंग पैकेज (फैप)/ **Financial Accounting Package (FAP)** इस प्रक्रिया को आधुनिकता, सुगमता और दक्षता प्रदान करता है। फैप की सहायता से संकलन कार्य न केवल अधिक विश्वसनीय बनता है बल्कि भारतीय खाद्य निगम की पारदर्शिता, जवाबदेही और कार्यकुशलता को भी मजबूत करता है। इस प्रकार, संकलन कार्य भारतीय खाद्य निगम की वित्तीय प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ और परिणाम-उन्मुख बनाते हैं।

उत्तर पूर्व की सुंदरता

जे.एस.साइजू
महाप्रबंधक (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

भारत का उत्तर पूर्व बेहद खूबसूरत है। यहां बसे 7 राज्य सात बहनों के नाम से जाने जाते हैं। इन 7 सिस्टर में अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा आता है। हिमालय की गोद में बसा भारत का यह हिस्सा बेहद शांत है. यहां सैलानी भी ज्यादा तादाद में नहीं पहुंचते। यह राज्य बेहद खास हैं। सिक्किम जहां देश का सबसे साफ राज्य है, वहीं मिजोरम 98.2% साक्षरता दर के साथ देश का पहला पूर्ण साक्षर राज्य बन गया है।

प्रकृति का हर रंग है मौजूद

अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा भले ही उत्तर-पूर्व में हैं लेकिन यहां की प्रकृति और संस्कृति में बहुत अंतर है। यहां की साफ नदियां, ऊंचे पहाड़, हरियाली, झरने, जंगल और शांत वातावरण भले ही एक-जैसे लगें. अगर आपको शांति और सुकून चाहिए तो आप असम की ब्रह्मपुत्र घाटी, मेघालय का चेरापूंजी और मावलिननोंग गांव और अरूणाचल का तवांग घूम सकते हैं।

संस्कृति की दिखेगी झलक

नॉर्थ-ईस्ट इंडिया में कई जनजातियां रहती हैं जिनकी अपनी-अपनी संस्कृति है। उनकी भाषा और पोशाक भी अलग है. अगर आपको इनका कल्चर देखना है तो नगालैंड में 1 से 10 दिसंबर तक घूमने का प्लान बनाएं, यहां हॉर्नबिल फेस्टिवल लगता है। वहीं मणिपुर का रासलीला नृत्य राधा-कृष्ण के प्रेम का प्रतीक है। त्रिपुरा का आदिवासी मेला, तीर्थ मुख मेला, गरिया पूजा मेला, सुंदरी मंदिर में दिवाली मेला देखने लायक होता है। इसके अलावा असम के गुवाहाटी में जून के समय कामाख्या मंदिर में अम्बुबाची मेला लगता है। यह दुनियाभर में मशहूर है।

एडवेंचर एक्टिविटी के लिए खास

जो लोग एडवेंचर को पसंद करते हैं और ट्रैकिंग का भी शौक रखते है तो यह जगह उनके लिए उत्तम है। मेघालय में घूमने के लिए ट्रैकिंग बहुत करनी पड़ती है। यहां का लिविंग रूट ब्रिज देखना किसी रोमांस से कम नहीं है। वहीं मिजोरम की पहाड़ियों पर चढ़ना भी अलग ही अनुभव देती हैं। अरूणाचल प्रदेश का जीरो वैली ट्रैक भी खास है। वहीं अरूणाचल प्रदेश के कामेंग, असम की ब्रह्मपुत्र नदी, सियांग नदी, दिबांग नदी और सिक्किम की तीस्ता नदी में रिवर राफ्टिंग का मजा लिया जा सकता है।

यहां की गुफाएं हैं हटकर

मिजोरम समेत पूरे उत्तर पूर्व में बहुत सी गुफाएं हैं जो इन राज्यों को खास बनाती है। मिजोरम के मौबुआंग लुंगसाई गांव से कर्क रेखा भी गुजरती है। वहीं त्रिपुरा का उनाकोटी गुफाओं के साथ मंदिर भी है। यहां बड़े-बड़े पत्थरों को काटकर मूर्तियां बनाई गई हैं जो बेहद प्राचीन हैं। वहीं मेघालय की क्रेम पुरी गुफा दुनिया की सबसे लंबी गुफा है।

उत्तर-पूर्व के बारे में कुछ रोचक तथ्य:

1. **पूर्वोत्तर भारत: सूर्योदय की भूमि:** भारत का सबसे पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश दिन का पहला सूर्योदय देखता है।
2. **दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप:** दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप असम में स्थित माजुली है। इसका उपयोग सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए भी किया जाता है।
3. **एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव:** शिलांग का मावलिननॉन्ग, एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव, देश के शहरी इलाकों में रहने वाले सभी निवासियों के लिए एक प्रेरणा है। लगता है यह भारत के माननीय प्रधानमंत्री के 'स्वच्छ भारत' अभियान के लिए एक अच्छा मानक स्थापित करता है।
4. **दुनिया का सबसे आर्द्र स्थान:** मेघालय का मौसिनराम लगातार भारी बारिश के कारण दुनिया का सबसे आर्द्र स्थान है।
5. **भारत का सबसे पुराना तेल कुआँ और पहली आधुनिक तेल रिफाइनरी:** असम का डिगबोई देश के सबसे पुराने चालू तेल कुएँ और पहली आधुनिक तेल रिफाइनरी का घर है।
6. **दुनिया का सबसे बड़ा चाय उत्पादक क्षेत्र:** असम, अपने हरे-भरे चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध है।
7. **भारत के सबसे साक्षर राज्य:** पूर्वोत्तर भारत के दो राज्य, त्रिपुरा और मिज़ोरम, इस सूची में भारत के सबसे साक्षर राज्यों के **रूप में शामिल हैं।**
8. **पूर्व का स्कॉटलैंड:** शिलांग को पूर्व का स्कॉटलैंड माना जाता है। यह वास्तव में मनोरम दृश्यों वाला एक मनोरम स्थल है।
9. **अपनी विविधता:** पूरे उत्तर पूर्व में 220 से ज़्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं और यह सांस्कृतिक विविधता के विशाल मिश्रण से भरा हुआ है।
10. **गैंडे - उत्तर पूर्व भारत का गौरव:** उत्तर पूर्व पर्यटन का एक और प्रमुख आकर्षण, दुर्लभ एक सींग वाला ग्रेट इंडियन गैंडा, देश के इसी हिस्से में पाया जाता है।

हाफलोंग यात्रा : एक अविस्मरणीय अनुभव

रोहित गर्ग
उपमहाप्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

जैसा कि हम सभी महसूस करते हैं कि घर से दफ्तर और दफ्तर से घर आने-जाने की नीरस दिनचर्या हमारे जीवन को काफी उबाऊ बना देती है। इस नीरस जीवन में रस भरना बहुत जरूरी हो जाता है| इसी लिए रोजाना की जिंदगी से एक ब्रेक लेना समय की मांग है जिसमे दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताना, यात्रा करना, प्रकृति के करीब जाना और नई जगहों को देखना भी मन को ताजगी देता है। । मन को तरोताजा करने के लिए घूमने की जगहों की तलाश करते हुए मुझे हाफलोंग के बारे में पता चला, जो असम का एकमात्र हिल स्टेशन है और जिसे अक्सर **पूर्व का स्विट्जरलैंड** कहा जाता है। हाफलोंग के बारे में इंटरनेट पर कुछ खोजबीन करने के बाद मुझे लगा कि यहाँ एक बार घूमने जरूर जाना चाहिए।

अक्टूबर का महीना था और मैंने अपने एक दोस्त के साथ असम के दीमा हसाओ ज़िले में स्थित हाफलोंग जाने का फ़ैसला किया। हमने **15888-बदरपुर टूरिस्ट एक्सप्रेस** के टिकट बुक किए, जो गुवाहाटी रेलवे स्टेशन से सुबह 6:45 बजे रवाना होती है। क्योंकि यह एक अपरंपरागत जगह प्रतीत हो रही थी, इसलिए हमने उसी दिन शाम की ट्रेन का वापसी टिकट बुक कर लिया। गुवाहाटी की शांत सुबह में, हम सुबह 6:15 बजे गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पहुँच गए। हम अपनी अब तक की सबसे खूबसूरत यात्राओं में से एक होने की उम्मीद में बहुत उत्साहित थे। हमने कोई भारी सामान नहीं लिया था, बस एक बैकपैक लिया था। ट्रेन आने के बाद, हम आराम से अपनी सीटों पर बैठ गए, और मैं खिड़की वाली सीट पर बैठा था।

गुवाहाटी से हाफलोंग का सफ़र तेज़ नहीं है और यही इसकी सबसे अच्छी बात है। यह धीरे-धीरे सभ्यता के शोर को पीछे छोड़ती हुई दीमा हसाओ पहाड़ियों से होकर गुज़रती है। हाफलोंग जाने वाली रेलवे लाइन ऐतिहासिक लुमडिंग-सिलचर सेक्शन का हिस्सा है, जो अनगिनत सुरंगों, पुलों और तीखे मोड़ों वाला एक इंजीनियरिंग चमत्कार है। कई बार, ट्रेन पहाड़ियों के बीच रेंगती हुई यात्रियों को सुंदरता में डूबने का पर्याप्त समय देती हुई प्रतीत होती थी। ठंडी पहाड़ी हवा और प्रकृति के निर्बाध दृश्यों ने ऐसा महसूस कराया जैसे समय थम गया हो। हमने दर्जनों तस्वीरें खींचीं, लेकिन कोई भी कैमरा उस सुंदरता को कैद नहीं कर सकता जिसे हमने अपनी आँखों से देखा।

दोपहर तक ट्रेन **न्यू हाफलोंग स्टेशन** पहुँच गई। वहाँ भीड़ नहीं थी। गुवाहाटी के गर्म और उमस भरे मौसम के विपरीत वहाँ ठंडी और स्वच्छ हवा थी। वहाँ पहुँचने के बाद हमने वहाँ के सभी पर्यटन स्थलों तक ले जाने के लिए एक टैक्सी बुक किया।

यह थी कि यह प्रसिद्ध स्थलों के विपरीत एक शांत और सुकून भरा स्थान था। वहाँ के शांत और सुकून भरे वातावरण के कारण, आप वास्तव में झरना की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं।

वहाँ से हम **एथनिक विलेज** की ओर बढ़े। जटिंगा के पास स्थित एथनिक विलेज (जातीय गांव) हाफलोंग में बना एक नया पर्यटक आकर्षण है। इस गाँव में आपको विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का मिश्रण देखने को मिलेगा, जो इस जगह की यात्रा को बेहद दिलचस्प बनाता है। आपको दीमा हसाओ जिले के कई आदिवासी समूहों के पारंपरिक छात्रावास और घर भी मिलेंगे। यह स्थान यहाँ रहने वाले लोगों की दैनिक जीवनशैली और उनकी परंपराओं को दर्शाता है।

इसके बाद हम **दीमा हसाओ हिल टॉप व्यू पॉइंट** की ओर बढ़े। हाफलोंग में स्थित यह हिल अपने मनोरम दृश्यों और विविध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। ऊँचाई पर स्थित, यह हिमालय पर्वतमाला और उत्तरी कछार पहाड़ियों की हरियाली का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। दुर्गा पूजा उत्सव के चलते, हमने देखा कि व्यू पॉइंट पर एक बहुत ही सुंदर दुर्गा पंडाल लगाया गया था। मनमोहक प्राकृतिक दृश्यों के साथ-साथ, हमें दुर्गा माता का आशीर्वाद प्राप्त करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्राकृतिक दृश्य इतने मनमोहक थे कि लगा कि हमें यहीं रुक जाना चाहिए और कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है। हमने आने वाले समय के लिए उस दृश्य को यादों में संजोने के लिए अनगिनत तस्वीरें लीं। वहाँ काफी समय बिताने के बाद, हमने अगले स्थान हाफलोंग झील की ओर जाने का निर्णय लिया।

हाफलोंग झील एक विशाल जलाशय है जिसके आसपास का वातावरण स्वच्छ और सुव्यवस्थित है। झील को पैदल पार करने के लिए एक झूलता हुआ पुल भी है। यहाँ घूमने के लिए एक अच्छी जगह होने के अलावा, बोटिंग और ज़िपलाइन की सुविधा भी उपलब्ध है। ऐसा लगता है जैसे पूरा हाफलोंग शहर झील के चारों ओर बसा हुआ है। इसके बाद, हम स्थानीय संस्कृति, खानपान और व्यापारिक गतिविधियों के बारे में जानने के लिए स्थानीय बाज़ार में घूमे। दुर्गा पूजा उत्सव के चलते, लोग सुंदर परिधान पहने हुए थे और बाज़ार में घूमकर सजावट का आनंद ले रहे थे।

हमें अपनी ट्रेन **12514 सिलचर सिकंदराबाद सुपरफास्ट एक्सप्रेस** पकड़नी थी जो न्यू हाफलोंग रेलवे स्टेशन से रात 10:40 बजे रवाना होती है। ट्रेन में चढ़ने के बाद प्रकृति की गोद में बिताए एक यादगार दिन के बाद हमें गहरी नींद आई। अगली सुबह हमारी ट्रेन सुबह 6:45 बजे गुवाहाटी पहुँची।

एक दिन हफलोंग में बिताने के बाद यह तो साफ हो गया था कि हाफलोंग उन लोगों के लिए नहीं है जो चहल-पहल वाली नाइटलाइफ़ या लग्ज़री रिसॉर्ट्स की तलाश में हैं। यह उन लोगों के लिए है जो शांति, सादगी और रहस्य के स्पर्श की चाहत रखते हैं। अपने अछूते परिदृश्यों, अनूठी संस्कृति और जीवन की धीमी गति के साथ, हाफलोंग पूर्वोत्तर भारत के सबसे गुप्त रहस्यों में से एक बना हुआ है। हाफलोंग की यह यात्रा मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन गई जिसे मैं जीवनभर नहीं भूल पाऊँगा।

अंत में, मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि **अगर आपको प्रकृति और शांत जगहों के साथ-साथ खूबसूरत दृश्यों वाली ट्रेन की सवारी पसंद है तो हाफलोंग आपकी यात्रा सूची में ज़रूर होना चाहिए।**

मानव जीवन और आत्म-साक्षात्कार

बेबी रानी मिश्रा
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

मनुष्य का जीवन केवल जन्म, भोजन, कार्य और मृत्यु तक सीमित नहीं है। उसके भीतर एक ऐसी चेतना विद्यमान है जो उसे निरंतर यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करती है—"मैं कौन हूँ?", "इस संसार में मेरे आने का उद्देश्य क्या है?", "सच्चा सुख कहाँ है?" इन्हीं प्रश्नों की खोज मनुष्य को आध्यात्मिक यात्रा की ओर ले जाती है। आध्यात्मिक सफर वह मार्ग है, जहाँ मनुष्य बाहरी संसार से अधिक अपने भीतर के संसार को समझने का प्रयास करता है। यह आत्मा, चेतना और परम सत्य की खोज की यात्रा है।

प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनि, संत, महात्मा और दार्शनिक मानव जीवन के रहस्यों को समझने का प्रयास करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता को जीवन का आधार माना गया है। वेद, उपनिषद, गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथ मनुष्य को आत्म-ज्ञान और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। भगवद्गीता में कहा गया है कि मनुष्य का वास्तविक स्वरूप उसकी आत्मा है, जो अमर और शाश्वत है। शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा कभी नष्ट नहीं होती। यही विचार मनुष्य को जीवन के गहरे सत्य को समझने की प्रेरणा देता है।

मनुष्य की आध्यात्मिक यात्रा अक्सर किसी दुःख, संघर्ष या असफलता से प्रारंभ होती है। जब व्यक्ति जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना करता है, तब उसे यह अनुभव होने लगता है कि धन, शक्ति और भौतिक सुख स्थायी नहीं हैं। संसार की वस्तुएँ क्षणिक सुख तो दे सकती हैं, लेकिन स्थायी शांति नहीं। यही अनुभूति मनुष्य को अपने भीतर झाँकने के लिए प्रेरित करती है। वह समझने लगता है कि वास्तविक आनंद बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्मिक संतोष में है।

आध्यात्मिकता मनुष्य को स्वयं से परिचित कराती है। सामान्यतः मनुष्य दूसरों की कमियों को देखने में अधिक समय बिताता है, लेकिन अपने भीतर छिपे दोषों को नहीं पहचान पाता। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति आत्म-चिंतन करता है। वह अपने क्रोध, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या और मोह जैसी कमजोरियों को पहचानने का प्रयास करता है। धीरे-धीरे उसके भीतर दया, प्रेम, करुणा, क्षमा और विनम्रता जैसे गुण विकसित होने लगते हैं। यही गुण उसके जीवन को श्रेष्ठ और अर्थपूर्ण बनाते हैं।

ध्यान, योग और प्रार्थना आध्यात्मिक विकास के महत्वपूर्ण साधन हैं। ध्यान मन को शांत और स्थिर बनाता है। जब मनुष्य ध्यान करता है, तब उसका मन बाहरी शोर से हटकर भीतर की शांति को अनुभव करने लगता है। योग शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है। प्रार्थना मनुष्य को ईश्वर या किसी उच्च शक्ति से जोड़ती है और उसे मानसिक शक्ति प्रदान करती है। इन साधनों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास का अनुभव करता है।

आध्यात्मिकता का एक महत्वपूर्ण संदेश यह भी है कि समस्त मानव जाति एक ही चेतना का हिस्सा है। इसलिए सभी मनुष्यों के प्रति प्रेम और सम्मान का भाव रखना आवश्यक है। गौतम बुद्ध ने करुणा और मध्यम मार्ग का संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।" इन महान व्यक्तित्वों ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि आध्यात्मिकता केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि मानवता की सेवा और प्रेम का मार्ग है।

आज का आधुनिक युग विज्ञान और तकनीक का युग है। मनुष्य ने भौतिक प्रगति तो बहुत कर ली है, लेकिन मानसिक शांति उससे दूर होती जा रही है। प्रतिस्पर्धा, तनाव, अकेलापन और भय ने लोगों के जीवन को अशांत बना दिया है। लोग सुख की खोज में निरंतर भाग रहे हैं, लेकिन उन्हें संतोष नहीं मिल रहा। ऐसे समय में आध्यात्मिकता मनुष्य को जीवन का सही मार्ग दिखाती है। यह उसे सिखाती है कि जीवन का उद्देश्य केवल धन कमाना नहीं, बल्कि स्वयं को बेहतर इंसान बनाना भी है।

प्रकृति भी मनुष्य की आध्यात्मिक यात्रा में एक महान गुरू की भूमिका निभाती है। पर्वतों की स्थिरता, नदियों की निरंतरता, वृक्षों की विनम्रता और आकाश की विशालता मनुष्य को जीवन के गहरे संदेश देती है। प्रकृति के निकट रहने से मन शांत होता है और व्यक्ति स्वयं को ब्रह्मांड के साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है। यही अनुभव आध्यात्मिक चेतना को जागृत करता है।

आध्यात्मिक यात्रा सरल नहीं होती। इस मार्ग में अनेक बाधाएँ, संदेह और संघर्ष आते हैं। कभी-कभी व्यक्ति भ्रमित भी हो जाता है। लेकिन धैर्य, विश्वास और निरंतर प्रयास उसे आगे बढ़ाते हैं। जैसे सोना आग में तपकर कुंदन बनता है, वैसे ही मनुष्य संघर्षों से गुजरकर आध्यात्मिक रूप से परिपक्व बनता है।

अंततः आध्यात्मिक सफर मनुष्य को आत्म- साक्षात्कार तक पहुँचाता है। आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना। जब व्यक्ति यह समझ लेता है कि वह केवल शरीर नहीं, बल्कि एक अमर आत्मा है, तब उसके भीतर भय, द्वेष और अहंकार समाप्त होने लगते हैं। उसके जीवन में शांति, संतोष और प्रेम का प्रकाश फैल जाता है। वह हर परिस्थिति में संतुलित रहता है और दूसरों के जीवन में भी सुख और प्रेरणा का कारण बनता है।

निष्कर्षतः मनुष्य का आध्यात्मिक सफर एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो उसे आत्म-ज्ञान, शांति और जीवन के वास्तविक उद्देश्य तक पहुँचाती है। यह यात्रा मनुष्य को बेहतर इंसान बनाती है और उसे प्रेम, करूणा तथा मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। आध्यात्मिकता न केवल व्यक्तिगत जीवन को सुखमय बनाती है, बल्कि पूरे समाज और विश्व में शांति और सद्भाव स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ध्यान की गहराई में जब मन अपना प्रतिबिंब देख लेता है, तब जीवन का हर प्रश्न अपना सुंदर किनारा तलाश लेता है।

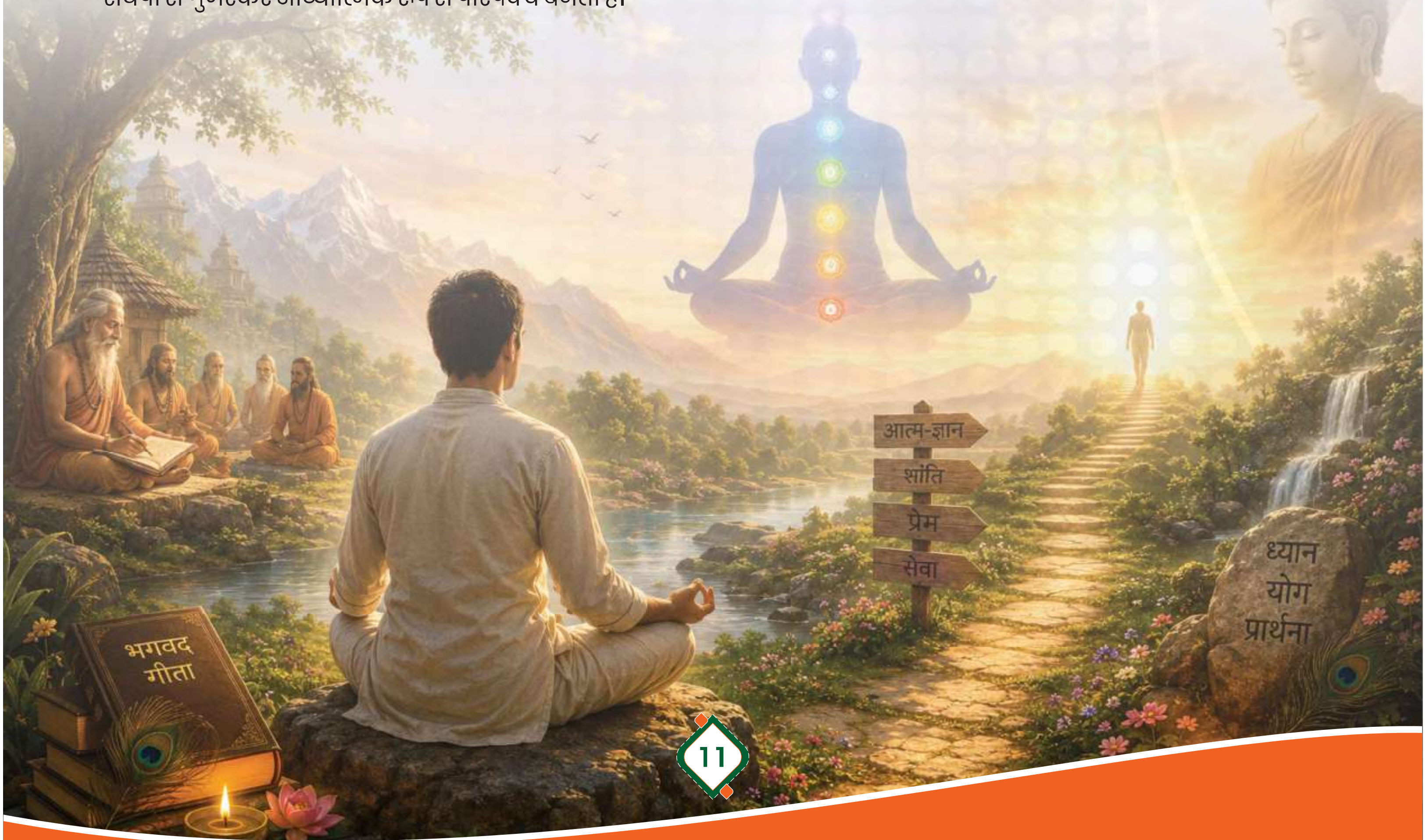

माजुली द्वीप का इतिहास और जीवंत संस्कृति

नीलाक्षी पावे
सहायक श्रेणी - III (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर-पूर्व), गुवाहाटी

असम में स्थित दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप, 'माजुली', अपनी समृद्ध संस्कृति और भूगोल के लिए प्रसिद्ध है और इसे मुख्यतः उस स्थान के रूप में जाना जाता है जहाँ पिछली चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दियों में वैष्णव धर्म की लोकप्रियता बढ़ी थी। पंद्रहवीं शताब्दी के बाद माजुली प्रसिद्ध वैष्णव प्रचारकों और साधकों के कारण प्रसिद्ध हुआ, जिन्होंने यहाँ सत्र स्थापित किए और इसका महत्वपूर्ण विकास किया। विशेष रूप से प्रमुख वैष्णव सुधारक और संत श्रीमंत शंकरदेव के आगमन के बाद, माजुली काफ़ी फला- फूला। माजुली भारत के जैव विविधता और सांस्कृतिक आकर्षण केंद्रों में से एक है जो पारिस्थितिक पर्यटन के लिए अपार संभावनाएँ प्रदान करता है। जिज्ञासु पारिस्थितिक पर्यटक माजुली की संरचना, स्थिति, जलवायु, पर्यावरण, जनसंख्या और बाढ़ के दौरान जीवन शैली के साथ-साथ इसकी समृद्ध संस्कृति, त्योहारों और कला एवं शिल्प से आकर्षित हो सकते हैं।

माजुली दुनिया का सबसे पुराना और सबसे बड़ा बसा हुआ नदी द्वीप है, और देश का पहला द्वीपीय ज़िला है जो 483 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और विशाल ब्रह्मपुत्र नदी से घिरा हुआ है। जोरहाट से अलग किए गए माजुली को 8 सितंबर, 2016 को एक पूर्ण ज़िला घोषित किया गया था। यूनेस्को द्वारा दुनिया के अजूबों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित, माजुली एक "अद्वितीय भौगोलिक स्थल" है जहाँ "इस क्षेत्र की अनूठी समृद्ध वनस्पतियों और जीवों का निवास है"। इस द्वीप को 2016 में गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीप के रूप में मान्यता दी गई है।

माजुली, महान ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों, लुइट और खेरकाटिया के बीच उत्तरी, उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी छोरों पर निर्मित और विकसित छोटे द्वीपों के समूह का एक समामेलन है। माजुली कोई एक ही मानदंड में प्रकट होने वाला द्वीप नहीं है। बल्कि, यह छोटे द्वीपों का एक समूह है जिसकी उत्पत्ति इसी क्षेत्र में हुई है। माजुली के निर्माण वर्ष या काल का निश्चित रूप से निर्धारण नहीं किया जा सकता क्योंकि इसके अतीत के बारे में बताए गए सिद्धांतों का समर्थन करने वाले पर्याप्त विश्वसनीय दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं हैं। हालाँकि, विशिष्ट स्थलाकृतिक तथ्यों और साहित्यिक विवरणों के आधार पर, यह माना जा सकता है कि माजुली ने कम से कम 13वीं शताब्दी ईस्वी से पहले एक द्वीप का रूप धारण कर लिया था जब सुखाफा सन् 1228 में ब्रह्मपुत्र घाटी में आए थे। "दिहिंग" और "ब्रह्मपुत्र" के बीच, इसे कभी "माजली" के नाम से जाना जाता था। एक और विवरण इस बात की पुष्टि करता है कि कोच नरेश नरनारायण ने अपने भाई चिलाराय को ऊपरी असम क्षेत्र में अपने क्षेत्र का विस्तार करने के लिए भेजा था। डॉ. डी. नाथ द्वारा अपनी पुस्तक "माजुली द्वीप, समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति" में दिए गए विवरण के अनुसार, अहोम राजा सुखमफा उर्फ खोरा राजा (1548-1563), जो युद्ध हार गए थे। उन्होने कोच नरेश नरनारायण को तब श्रद्धांजलि और उपहार भेजे थे जब वे "मोजली" (माजुली) में डेरा डाले हुए थे। प्रागैतिहासिक स्रोतों के अनुसार, वर्तमान माजुली का प्रारंभिक नाम या तो "माजली" या "मोजली" था। बाद में सन् 1562 में, इसे "लुइटर माजुली" के नाम से भी जाना जाता था जो वर्तमान स्वरूप धारण करने से पहले माजुली के उसी क्षेत्र का संकेत देता था। चुटिया नरेश रामचंद्र ने रतनपुर, माजुली में अपनी राजधानी बनाई, जो संभवतः ब्रह्मपुत्र नदी में बह गई थी, जैसा कि "योगिनी तंत्र" में माजुली के प्रारंभिक इतिहास के एक अन्य संदर्भ में मिलता है। प्रारंभिक समय में

असमिया में लिखे गए एक ऐतिहासिक विवरण के अनुसार, सुखाफा ने एकांत बंदरगाह को तब देखा था जब वह दिखो नदी के बीच पर था।

कहा जाता है कि कृषि प्रधान लोगों की उपजाऊ और उपजाऊ भूमि की चाहत ने माजुली में मानव बस्तियों की शुरुआत की। माजुली का भूभाग अक्सर बाढ़ से भर जाता था जिससे मिट्टी में कीचड़ जम जाती थी, जिससे यह चावल, सरसों, गन्ना, फलियाँ, जूट, लहसुन, आलू और अन्य आवश्यक फसलों की खेती के लिए उपयुक्त हो गया। माजुली का पूरा भूभाग वहाँ बसने वालों की नज़रों से ओझल था, क्योंकि वे इस क्षेत्र में मौजूद बीलों, दलदलों, सुप्त नदी नालों और विरल आबादी वाले क्षेत्रों से अनभिज्ञ थे। इनमें से अधिकांश जंगली पक्षियों और जानवरों का निवास था। सन् 1950 के भूमि सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार, कुल रहने योग्य भूमि 1245.12 वर्ग किलोमिटर थी। स्वतंत्रता के बाद के दशकों में, माजुली की जनसंख्या में रहस्यमय तरीके से 1.35 लाख से अधिक की वृद्धि हुई है।

जैव विविधता:

ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में स्थित माजुली जैव विविधता का एक प्रमुख केंद्र और पारिस्थितिक परिदृश्य है। आर्द्र भूमि से भरपूर माजुली में 9 5 स्थानीय पक्षी प्रजातियाँ और 1 8 शीतकालीन प्रवासी पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, और इसे एक महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र (IBA) घोषित किया गया है। यहाँ के लोग मानव बस्तियों के भीतर स्थित सारस पक्षी की असंख्य कॉलोनियों के प्रति बेहद सजग हैं, जबकि प्रवासी पक्षी माजुली को पृथ्वी पर सबसे सुरक्षित स्थानों में से एक मानते हैं। यहाँ साँप, छिपकली और कछुए की प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं, जबकि स्तनधारियों की सूची में गंगेटिक डॉल्फ़िन, फिशिंग बिल्ली, जंगली बिल्ली और सिवेट बिल्ली शामिल हैं और निश्चित रूप से कभी-कभी पास के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से विशाल एक सींगवाले गैंडे और हाथियों के झुंड भी यहाँ आते हैं।

लोग और संस्कृति:

वैष्णव संस्कृति:

श्रीमंत शंकरदेव के मुख्य दूत माधवदेव के साथ माजुली के धुवाहाट बेलगुड़ी पहुँचने के बाद से, द्वीप के चारों ओर वर्ष भर व्याप्त सौंदर्य एक वर्ष भर चलने वाली तीर्थयात्रा में बदल गया। माजुली के स्मारकीय संचार कार्य (मणिकांशन संयोग) ने उनके शानदार करियर की शुरुआत की, जिससे पूरे द्वीप और भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में नव-वैष्णव आंदोलन का विकास हुआ। असम के 16वीं शताब्दी के महान संत सुधारक श्रीमंत शंकरदेव द्वारा यहाँ सत्र-मठों की स्थापना के साथ माजुली असमिया संगीत, साहित्य, संस्कृति और नृत्य शैलियों का केंद्र बन गया है। प्रत्येक सत्र - जिनकी संख्या लगभग 30 है, नदी तट के कटाव के कारण कई को मुख्य भूमि पर स्थानांतरित होना पड़ा - यह अपने आप में एक विश्वविद्यालय की तरह है जो इन अद्वितीय संस्थानों के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले सैकड़ों भिक्षुओं को सामान्य शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ज्ञान और कौशल प्रदान करता है। प्रत्येक सत्र, जिसका नेतृत्व एक विद्वान करता है एक जीवंत संग्रहालय भी है जो श्रीमंत शंकरदेव द्वारा स्थापित तरीके से आध्यात्मिकता और भक्ति के साथ-साथ सदियों पुरानी कला रूपों को संरक्षित और प्रचारित करता है।

जहाँ सत्र कला, संस्कृति, संगीत, नृत्य, रंगमंच और हस्तशिल्प के जीवंत संग्रहालय हैं, वहीं सत्रिया नृत्य शैलियों ने देश के अन्य शास्त्रीय नृत्य रूपों के साथ अपनी जगह बनाई है। भाओना नाटक - जिनमें से अधिकांश 16वीं शताब्दी के संत-सुधारक श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव द्वारा लिखे गए थे - उन कुछ नाटकों में से हैं जो पाँच शताब्दियों से भी अधिक समय से दुनिया भर में प्रदर्शित किए जाते हैं।

लोग और जीवन:

इस विरासत द्वीप जिसे प्रकृति का शांत स्वर्ग भी कहा जा सकता है, के सरल और रंगीन लोगों की उत्साह का आनंद लेने के लिए माजुली गाँव की सैर की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है। जहाँ वैष्णव सत्र संस्थाओं से जुड़े लोग विभिन्न प्रकार के हथकरघा और हस्तशिल्प में विशेषज्ञ हैं, वहीं मिसिंग जनजातीय लोगों के गाँव जीवंत मानव शास्त्रीय संग्रहालयों जैसे हैं। जहाँ द्वीपवासियों का एक वर्ग कुशल नाव निर्माता है, वहीं कुछ अन्य लकड़ी की नक्काशी, मुखौटे और विभिन्न संगीत वाद्य यंत्रों जैसे अद्भुत

कारीगर हैं, वहीं माजुली के हीरा कुम्हार पूर्व-पहिया युग के हैं।

मनाए जाने वाले त्योहार:

माजुली असम का अपना विरासत द्वीप है जो रंग-बिरंगे त्यौहारों से भरा होता है।

रासलीला:

राधा कृष्ण के पौराणिक प्रेम का जश्न मनाने के लिए मध्य नवंबर में सत्र परिसर में आयोजित तीन दिवसीय उत्सव सबसे बड़ा आकर्षण है।

भाओना:

भाओना असम में प्रचलित धार्मिक संदेशों वाला एक पारंपरिक मनोरंजन का साधन है।

आली-आई-लिगांग:

रंग-बिरंगे मिसिंग समुदाय फरवरी-मार्च में नृत्य, गीत और संगीत के साथ बीज बोने के उपलक्ष्य में आली-आई-लिगांग त्योहार को मनाते हैं। पर्यटक इस त्यौहार का आनंद लेने के लिए मिसिंग गाँवों में बने विशिष्ट बाँस के चबूतरे वाले घरों में ठहर सकते हैं।

माजुली महोत्सव:

यह द्वीप की समग्र संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए राज्य द्वारा संचालित त्योहार है जहाँ आगंतुक न केवल माजुली के नृत्य और संगीत का आनंद लेते हैं, बल्कि विभिन्न जातीय व्यंजनों का भी आनंद लेते हैं। पर्यटक द्वीप के लोगों की गहरी गर्मजोशी और सुखदायक संगीत को अपने दिलों में बसाने के अलावा, विभिन्न प्रकार के हथकरघा और हस्तशिल्प उत्पाद भी घर ले जा सकते हैं।

माजुली में पर्यटन का वर्तमान परिदृश्य:

माजुली में कई उभरते पर्यटन उद्योगों के लिए अपार संभावनाएं हैं जिनमें पारिस्थितिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, कृषि पर्यटन, धार्मिक पर्यटन आदि शामिल हैं। यह द्वीप हर साल बड़ी संख्या में स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। पर्यटकों को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करने के लिए, इसने विभिन्न तरीकों से स्थानीय लोगों को काम पर रखा है। इसलिए, पर्यटन उद्योग ग्रामीण गरीब लोगों के लिए आय का एक भरोसेमंद स्रोत हो सकता है। पिछले 500 वर्षों से, माजुली सांस्कृतिक केंद्र और असमिया सभ्यता के जन्म स्थान दोनों के रूप में कार्य करता रहा है। जनजातियों और संस्कृतियों के इस मिश्रण में अहोम, कचारी, ब्राह्मण, कलिता, कोंच राजबोंगशी, बोनिया, कोइबात्रा, नेपाली, कुमार, बंगाली और राजस्थानी शामिल हैं। उपरोक्त तालिका पिछले पाँच वर्षों के दौरान माजुली द्वीप पर पर्यटकों की संख्या में वृद्धि का रुझान दर्शाती है, जिसमें स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटक शामिल हैं।

संक्षेप में माजुली महज एक विरासत द्वीप से कहीं अधिक है। यह असमिया सभ्यता का एक जीवंत संग्रहालय और निरंतर परिवर्तन के बीच सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है। माजुली के इतिहास, जीवंत परंपराओं और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण न केवल असम या भारत के लिए बल्कि उस वैश्विक विरासत के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण

राजभाषा : कार्य की भाषा, राष्ट्र की अभिव्यक्ति

दीपक छेत्री
सहायक श्रेणी – III (लेखा)
आंचलिक कार्यालय – गुवाहाटी

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहाँ विभिन्न भाषाएं हमारी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। ऐसे में राजभाषा हिंदी का विशेष महत्व है, जिसे संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है

राजभाषा का उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में समानता, सरलता और संपर्क की सुविधा प्रदान करना है। हिंदी न केवल संपर्क की भाषा है, बल्कि यह भारतीयता की पहचान और भावनात्मक एकता का माध्यम भी है।

कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का प्रयोग, न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि यह जनता के साथ प्रभावी संवाद की दिशा में एक सशक्त कदम है। सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों और विभागीय पत्राचार में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय विभिन्न कार्यक्रमों, कार्यशालाओं व प्रोत्साहन योजनाओं का संचालन करता है।

राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना आज आवश्यकता ही नहीं, जिम्मेदारी भी है। यह भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति है।

अतः हम सबका दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग कर, राजभाषा को उसका उचित स्थान प्रदान करें और 'की भाषा नीति को सशक्त बनाएं।

संगीत

कनिष्क धर
सहायक श्रेणी –I(लेखा)
क्षेत्रीय कार्यालय, ईटानगर

संगीत मानव जीवन की सबसे सुंदर और प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में से एक है। यह केवल ध्वनियों का समूह नहीं है, बल्कि भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। संगीत आत्मा को सुकून देने वाला, मन को प्रसन्न करने वाला और जीवन को रंगीन बनाने वाला एक अद्भुत माध्यम है।

भारतवर्ष में संगीत की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। वैदिक काल से ही संगीत का प्रयोग यज्ञों, पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता रहा है। 'सामवेद' को संगीत का मूल स्रोत माना जाता है जिसमें मंत्रों का उच्चारण एक विशेष सुर में किया जाता था। धीरे-धीरे यह परंपरा विकसित होकर शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत और आधुनिक संगीत में परिवर्तित हो गई।

भारतीय संगीत को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है – **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत** (उत्तर भारत) और **कर्नाटक शास्त्रीय संगीत** (दक्षिण भारत)। दोनों ही शैलियाँ रागों और तालों पर आधारित होती हैं। प्रत्येक राग का एक विशिष्ट समय और भाव होता है। उदाहरण के लिए, राग भैरव को प्रातःकाल गाने से विशेष मानसिक शांति मिलती है।

लोक संगीत भारत के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक पहचान है। यह विशेष अवसरों, जैसे विवाह, पर्व-त्योहार, और कृषि कार्यों के दौरान गाया जाता है। यह सरल, सुगम और जनजीवन से जुड़ा होता है।जैसे राजस्थान का गोरबंद, पंजाब का भांगड़ा, उत्तर प्रदेश का बिरहा, बंगाल का बाउल, आदि।

आधुनिक संगीत में फिल्मी गाने, पॉप म्यूजिक, रॉक, जैज़ आदि शामिल हैं। ये युवा वर्ग में अत्यंत लोकप्रिय हैं और मनोरंजन के प्रमुख साधन हैं। आजकल इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सहायता से संगीत में नई-नई तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है।

संगीत का हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह तनाव, चिंता और अवसाद को कम करने में मदद करता है। आजकल चिकित्सक भी संगीत-चिकित्सा (Music Therapy) को एक सहायक उपचार के रूप में अपनाने लगे हैं, विशेष रूप से मानसिक रोगियों, बच्चों और वृद्धों के लिए।

संगीत व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है। यह अनुशासन, एकाग्रता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है। स्कूलों में बच्चों को संगीत सिखाने का उद्देश्य केवल उन्हें गायक बनाना नहीं, बल्कि उनमें आत्म- अनुशासन और आत्मविश्वास को बढ़ाना भी होता है।

अंततः कहा जा सकता है कि संगीत केवल एक कला नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक शैली है। यह दुख में सांत्वना देता है, खुशी में उल्लास बढ़ाता है और अकेलेपन में साथी बनता है। संगीत सीमाओं, भाषाओं और संस्कृतियों से परे जाकर सभी को एक सूत्र में बाँधता है। इसलिए कहा जाता है – "संगीत वह भाषा है जिसे हर कोई समझ सकता है भले ही वह किसी भी देश या संस्कृति से संबंधित हो।"

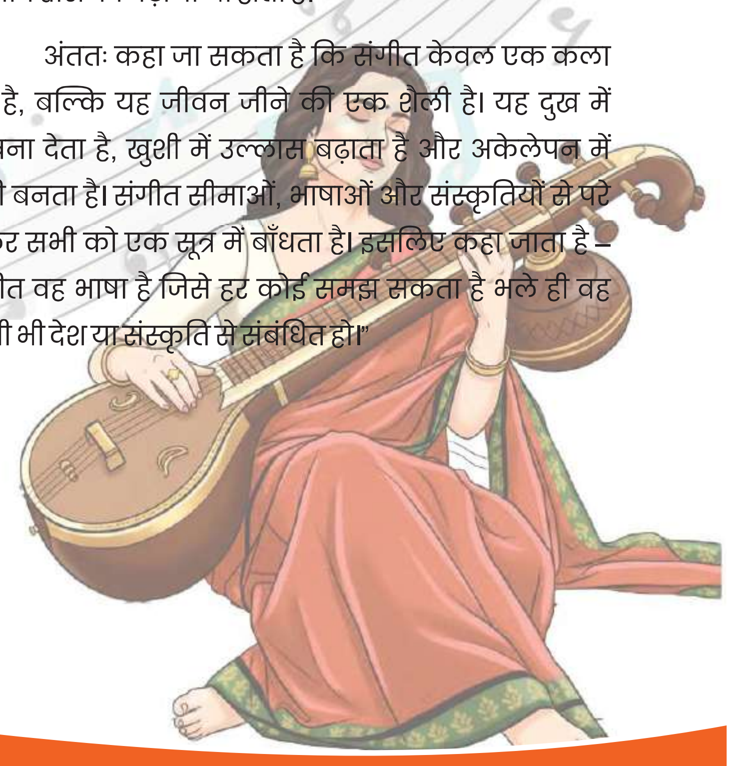

खेलते बचपन पर विशाल होमवर्क का बोझ

जीतू कुमार
सहायक श्रेणी –।। (लेखा)
आंचलिक कार्यालय – गुवाहाटी

आज की तेज रफ्तार दुनिया में शिक्षा का महत्त्व सबसे अधिक बढ़ गया है। हर माता-पिता अपने बच्चे को सफल इंसान बनाना चाहती है। इसके लिए वे चाहते है कि बच्चा शुरू से ही पढ़ाई में आगे रहे। लेकिन आज एक गंभीर समस्या हमारे सामने है- छोटे बच्चो को अधिक होमवर्क दिया जाने लगा है।

एक पिता होने के नाते मैं इस स्थिति को अच्छी तरह महसूस कर सकता हूं। मेरा अपना बच्चा अभी बहुत छोटा है लेकिन उसकी कॉपियों और पुस्तकों का बोझ देखकर कभी-काभी मन भारी हो जाता है। इतनी कम उम्र में जब बच्चों का समय खेलने, कहानियाँ सुनने, चित्र बनाने और कल्पनाओं की उड़ान भरने का होना चाहिए तब वे होमवर्क के बोझ से दबे रहते हैं।

होमवर्क का उदेश्य बच्चों को सिखाना होता है, लेकिन जब यह अत्यधिक हो जाता है तो इसका असर उल्टा पड़ता है। बच्चे तनावग्रस्त हो जाते है उनका खेलने का समय घट जाता है और सबसे बड़ी बात-पढ़ाई उनके लिए बोझ लगने लगती है। इस उम्र में बच्चों की सीखने की क्षमता खेल और अनुभवों से कही अधिक होती है। अगर उन्हें प्रकृति से जोड़कर, कहानियों और चित्रों के माध्यम से पढ़ाया जाए, तो वे जल्दी सीखते है और आनंद भी महसूस करते हैं।

दूसरी ओर माता-पिता पर भी दबाव बढ़ जाता है। ऑफिस से लौटने के बाद बच्चे का भारी होमवर्क करवाना आसान नहीं होता। दिन भर की थकान के बाद जब नोटबुक्स का ढेर सामने आता है तो धैर्य रखना कठिन हो जाता है। कई बार माता-पिता को लगता है कि वे शिक्षक बन गए है और घर पढ़ाई का मैदान बन जाता है। बच्चे की छोटी सी गलती पर भी ग़ुस्सा आ जाना स्वाभाविक है लेकिन इससे बच्चे का आत्मविश्वास टूटता है। कई परिवारों में यह स्थिति माता-पिता और बच्चों के बीच खटास भी पैदा कर देती है। शिक्षा का उदेश्य बच्चे में जिज्ञासा और आत्मविश्वास पैदा करता है न कि उन्हें डर और दबाव में ढकेलना।

सरकार ने भी इस दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में छोटे बच्चों के लिए 'खेल-आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया है। कक्षा 2 तक के बच्चों को भारी होमवर्क से मुक्त रेखने और उनकी शिक्षा को खेल, गतिविधियों और अनुभवों पर आधारित बनाने का सुझाव दिया गया है। इसके अलावा कई राज्यों में 'नौ बेग डे' और 'बिना होमवर्क' जैसी पहले की गई है, ताकि बच्चे बोझ मुक्त होकर सीख सकें। यह कदम इस बात की ओर इशारा करते है कि सरकार भी समझता है कि बचपन में किताबों का बोझ कम और खुशयों का बोझ ज्यादा होना चाहिए।

इस समस्या का समाधान यह है कि विद्यालय और शिक्षक छोटे बच्चों को रचनात्मक तरीकों से पढ़ाये। जैसे खेल खेल में गिनती सिखाना, गीतों के माध्यम से भाषा सीखाना, या प्रकृति कि सैर करवाकर विज्ञान का ज्ञान देना। अगर होमवर्क देना भी जरूरी है तो वह हल्का और रचनात्मक होना चाहिए, जैसे चित्र बनाना, परिवार की कहानियां लिखना या आसपास की वस्तुओं को पहचानना।

हर बच्चा अलग होता है, उसे उसकी गति से बढ़ने देना ही असली शिक्षा है। अगर हम होमवर्क का बोझ घटाकर बच्चों को सीखने का आनंद देंगे तो वे आगे चलकर और अधिक सफल होंगे। बचपन बहुत कीमती है इसमें खेल और मुस्कान सबसे बड़ा पाठ होना चाहिए।

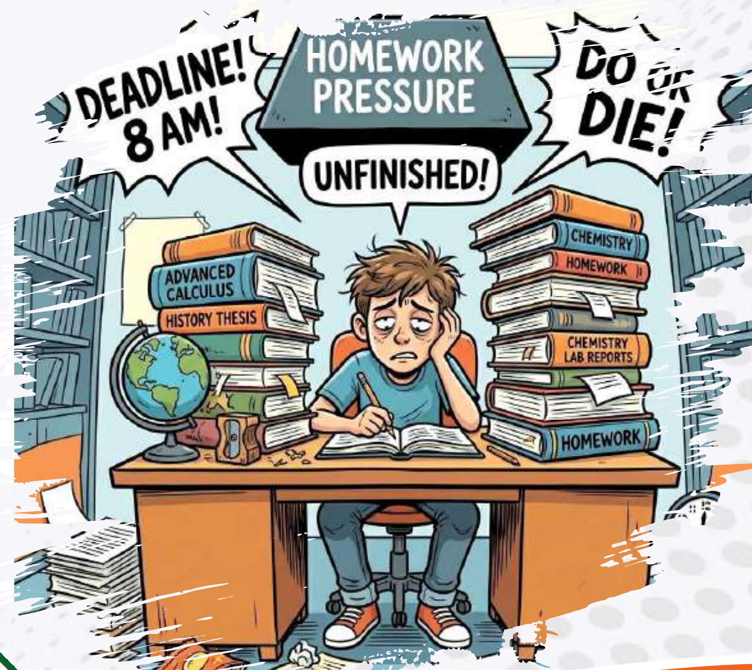

जुबिन गर्ग - संगीत और इंसानियत के नायक

सरफराज अंसारी
सहायक श्रेणी –I (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

**"মোৰ কোনো ধৰ্ম নাই,
মোৰ জাতি নাই, মই মুক্ত।
মই কাঞ্চনজংঘা"** -জুবিন গাৰ্গ

**"मेरा कोई धर्म नहीं,
मेरी कोई जाति नहीं, मैं आज़ाद हूँ।
मैं कंचनजंघा हूँ।"** - जुबिन गर्ग

यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि आत्मा की गहराई से निकली हुई पुकार है।

धर्म और जाति समाज के बनाए हुए लेबल हैं, जो इंसान को बाँधते और सीमित करते हैं। लेकिन आत्मा किसी लेबल को नहीं मानती। आत्मा की असली पहचान है — स्वतंत्रता, करुणा और विशालता।

जब जुबिन दा कहते हैं "मेरा कोई धर्म नहीं", तो वह यह संदेश देते हैं कि इंसान को किसी एक धार्मिक पहचान तक सीमित नहीं होना चाहिए। इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है।

जब कहते हैं "मेरी कोई जाति नहीं", तो यह हमें याद दिलाता है कि असली पहचान जाति नहीं, बल्कि इंसान होना है।

जब कहते हैं "मैं आज़ाद हूँ", तो यह स्वतंत्रता केवल बाहरी नहीं बल्कि भीतरी मुक्ति है — भय, बंधनों और संकीर्णताओं से मुक्ति।

आख़िर में, "मैं कंचनजंघा हूँ" — यह आत्मा की ऊँचाई और दृढ़ता का प्रतीक है। जैसे कंचनजंघा पर्वत अडिग और शाश्वत खड़ा है, वैसे ही इंसान भी तब अडिग और शुद्ध बन सकता है जब वह सभी बंधनों से ऊपर उठ जाए।

जुबिन दा की यह बात हमें सिखाती है कि इंसान का असली अस्तित्व धर्म या जाति में नहीं, बल्कि उसकी आत्मा की आज़ादी और उसके मानवीय मूल्यों में है। असली इंसान वही है, जो कंचनजंघा की तरह ऊँचा, अडिग और स्वतंत्र हो।

मैं वही आज़ादी हूँ...
मैं वही शिखर हूँ...
मैं कंचनजंघा हूँ।

आख़िरी सलाम, जुबिन दा...❤

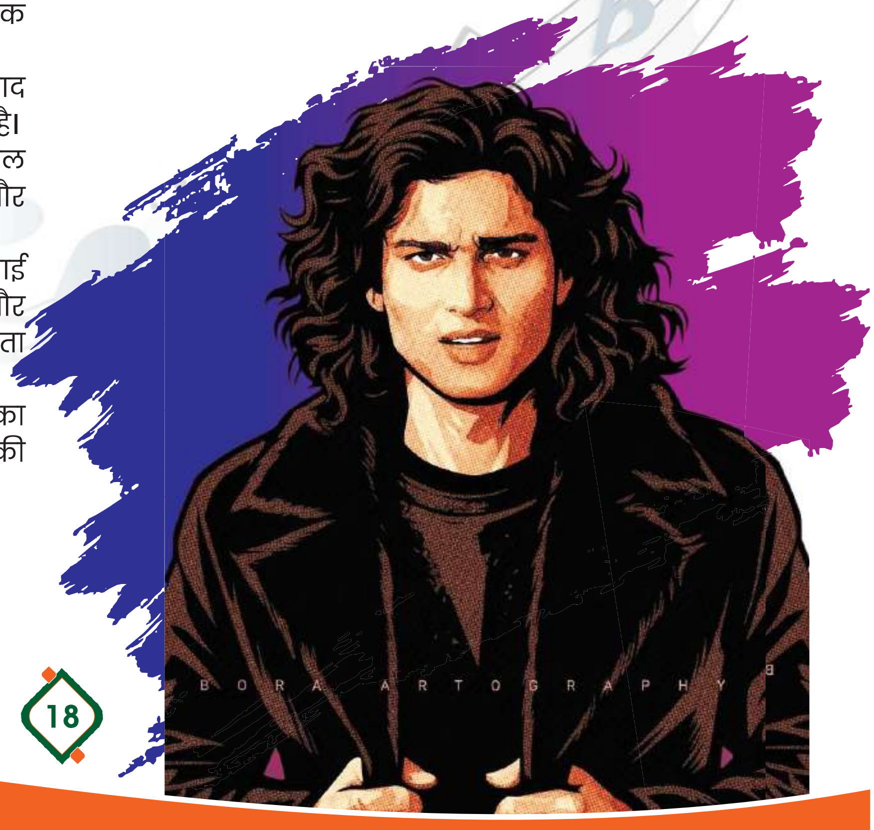

मां

पवन बेज़बरुआ
प्रबंधक (लेखा)
मंडल कार्यालय, गुवाहाटी

"माँ" — यह सरल शब्द स्नेह, त्याग और बिना शर्त प्रेम के पूरे ब्रह्मांड को समेटे हुए है। माँ केवल एक व्यक्ति नहीं हैं; वह एक भावना, एक दिव्य शक्ति और उस आधार की स्वयं रूप हैं जिस पर हमारा जीवन निर्मित होता है। दुनिया की कोई भी शक्ति चाहे कितनी भी महान क्यों न हो कभी भी माँ के प्रेम की शुद्धता या उसके त्याग की गहराई के बराबर नहीं हो सकती। माँ हमारी पहली शिक्षक और मार्गदर्शक हैं। जब हम बोलना नहीं जानते, वह हमें हमारे पहला शब्द सिखाती हैं। जब हम चल नहीं सकते, वह हमारा हाथ पकड़ती हैं और हमें पहला कदम उठाने में मदद करती हैं। जब हम ठोकर खाते हैं और गिरते हैं, वह हमें उठाती हैं और फिर से कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। उनकी सशक्त उपस्थिति एक साधारण घर को सच्चे घर में बदल देती है जो गर्मजोशी और जीवन से भरा होता है।

भौतिक रूप से हमारी देखभाल करने के अलावा माँ हमारी सबसे महान भावनात्मक सहारा है। जब दुनिया हमें समझने में असफल होती है तब भी वह समझ जाती है — अक्सर बिना एक शब्द कहे। उसके आलिंगन में पाए जाने वाला शांति अद्वितीय है; जब दिल भारी होता है तो उसका एक कोमल गले लगाना सब कुछ सही कर देता है। माँ की कुर्बानियाँ अत्यंत हैं। वह अपने स्वयं के सपनों को त्यागकर अपने बच्चों के सपनों को पूरा करती है। वह स्वयं भूखी रह सकती है लेकिन अपने बच्चे को भूखा नहीं रहने देती। उसका प्रेम और त्याग शब्दों से परे है — वास्तव में यह दिव्य है। जैसा कि सही कहा गया है "चूंकि भगवान हर जगह नहीं हो सकते थे, इसीलिए उन्होंने माँ को बनाया" । आज की तेज रफ्तार दुनिया में जहां मानवीय संबंध अक्सर दूर हो जाते हैं माँ का महत्व और भी बढ़ गया है। अपनी माँ की सेवा करना वास्तव में सबसे पवित्र पूजा का रूप है क्योंकि स्वर्ग स्वयं उसके चरणों में निहित है । मां का आशीष जीवन का सबसे बहुमूल्य खजाना है।

माँ हमारी पहली गुरू हैं, हमारी शाश्वत प्रेरणा हैं और हमारी सच्ची मित्र हैं। उनका प्यार महासागर जितना गहरा और आकाश जितना विशाल है। वास्तव में माँ वह मधुर संगीत हैं जो हर दिल में गूंजता है — वह शाश्वत प्रकाश है जो सभी अंधकार को दूर करता है।

परिवार से दूर, सपनों के पास:
एक सरकारी कर्मचारी की भावनात्मक यात्रा

रोहित कुमार मिश्रा,
सहायक श्रेणी – III(सामान्य)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

जब कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी पाता है तो परिवार और समाज दोनों की आंखों में वह गौरव का प्रतीक बन जाता है। मगर उस चमकदार पहचान के पीछे एक ऐसी सच्चाई छिपी होती है जिसे शायद ही कोई गहराई से समझ पाता है — अपनों से बिछड़ने का दर्द, अकेलेपन की पीड़ा और अपने कर्तव्यों की बेड़ियों में बंधकर जीने की मजबूरी।

सरकारी नौकरी की राह आसान नहीं होती। इसके लिए वर्षों की मेहनत, त्याग और समर्पण की जरूरत होती है। लेकिन जब वह सफलता मिलती है तब अक्सर उस व्यक्ति को अपने गांव, शहर या अपने परिवार को छोड़कर किसी दूरस्थ स्थान पर कार्यभार संभालना पड़ता है। यह सिर्फ एक स्थानांतरण नहीं होता बल्कि यह जीवन का एक कठिन मोड़ होता है जहाँ एक तरफ जिम्मेदारियों का बोझ होता है और दूसरी तरफ अपनों की यादें।

हर सुबह जब वह कर्मचारी तैयार होता है ड्यूटी पर जाने के लिए तो उसके दिल में यह कसक होती है कि काश वह अपने घर के आंगन में कुछ समय सुकून के बिता पाता, अपने माता-पिता का हाल पूछ पाता या जीवनसाथी के साथ चाय की चुस्कियों में कुछ पल बिता पाता। मगर वह हर दिन अपनी भावनाओं को अंदर ही दबाकर एक मुस्कान के साथ देश और समाज के लिए काम करता है।

छुट्टियों का इंतज़ार कुछ ज्यादा ही लंबा लगता है। एक वीडियो कॉल या कुछ पुराने फोटो ही उसका संबल बन जाते हैं। त्यौहारों की रौनक भी फीकी लगती है जब घर की रसोई से आती महक सिर्फ कल्पना में ही रह जाती है। फिर भी वह अपनी ड्यूटी को सर्वोपरि मानता है क्योंकि उसे पता है कि उसका यह त्याग उसके परिवार का भविष्य है, उसके माता-पिता की दवाइयाँ हैं और उसका संघर्ष ही परिवार की खुशियों की नींव है।

सरकारी नौकरी में न सिर्फ देशसेवा है बल्कि उसमें एक अंतर्निहित त्याग भी है — जो न तो समाचारों की सुर्खियाँ बनता है और न ही किसी पुरस्कार का विषय। यह एक मौन बलिदान है जो लाखों सरकारी कर्मचारियों की आँखों में हर रात तब झलकता है जब वे अपने परिवार को याद करते हैं।

निष्कर्षतः जो कर्मचारी अपने परिवार से दूर रहकर दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में लगे हैं — वे असल नायक हैं। उनका संघर्ष, उनका अकेलापन और उनका समर्पण हमें यह सिखाता है कि कर्तव्य और परिवार के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं लेकिन फिर भी वह इसे निभा रहे हैं — चुपचाप पूरे दिल से।

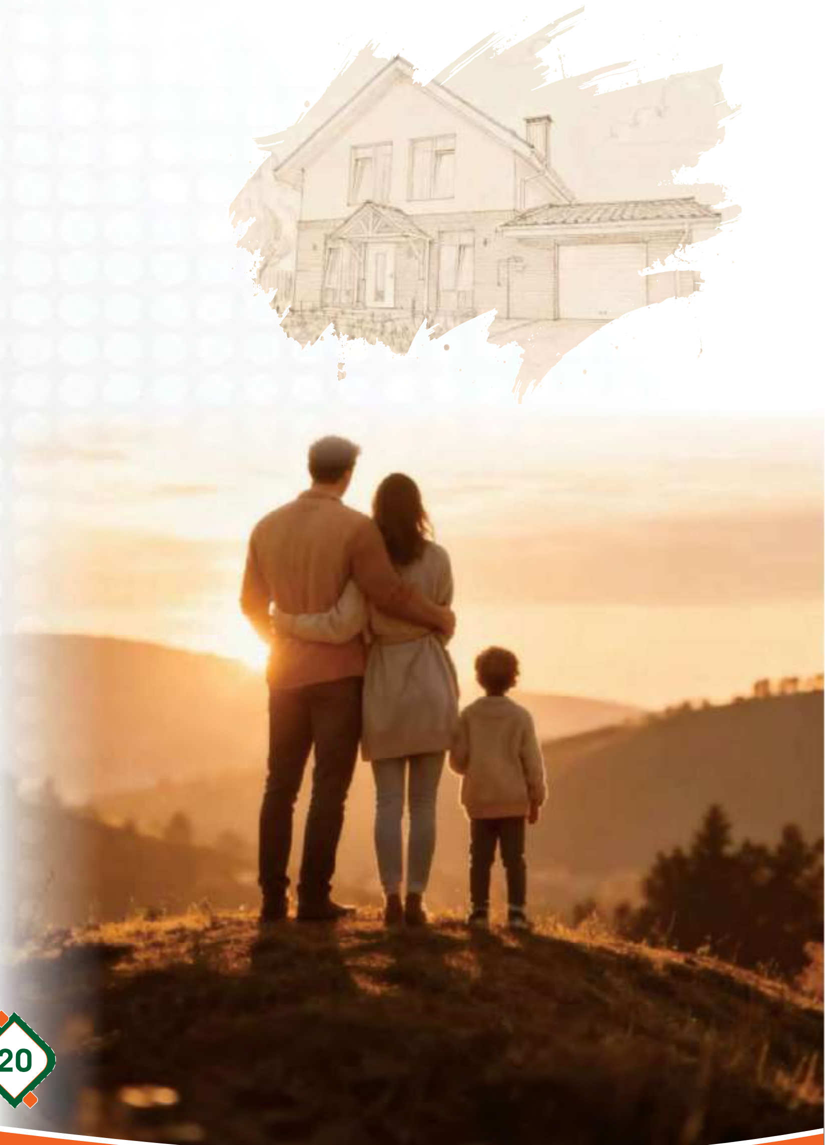

गांधी मंडप: शांति और विरासत का प्रतीक

सरफराज अंसारी
सहायक श्रेणी –। (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

गांधी मंडप असम के गुवाहाटी में सरणिया पहाड़ियों की चोटी पर स्थित एक संग्रहालय और स्मारक है जिसे महात्मा गांधी की याद में बनाया गया है। इस ऐतिहासिक स्थल का उद्घाटन 2 अक्टूबर 1970 को भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और असम के मुख्य मंत्री बिष्णु राम मेधी ने किया था। यह संरचना गांधी जी के आदर्शों और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान की गहरी झलक प्रस्तुत करती है।

गांधी मंडप की वास्तु कला अद्वितीय है। इसका अष्टकोणीय आकार और गुंबद इसे एक खास पहचान देते हैं। इसे चारों ओर से खूब सूरत बगीचों से घेरा गया है, जहां शांति और सुकून का अनुभव किया जा सकता है। इस स्थान पर भारत का तीसरा सब से ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज लहराता है, जिसकी ऊंचाई 319.50 फीट है।

<u>इतिहास और महात्मा गांधी की असम यात्रा</u>

महात्मा गांधी ने अपने जीवन काल में चार बार असम का दौरा किया- 1921, 1926, 1934 और 1946 में। 1946 में अपनी अंतिम यात्रा के दौरान, उन्होंने सरणिया हिल्स पर डॉ. हरे कृष्ण दास के घर पर रात बिताई और यहां कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक की एक शाखा का उद्घाटन किया। गांधी जी ने असम के स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित करने के लिए गुवाहाटी, तेजपुर, नागांव, जोरहाट, डिब्रूगढ़ और शिलांग का भी दौरा किया।

गांधी मंडप की नींव 20 अक्टूबर 1959 को भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने रखी थी। इस संरचना का डिजाइन प्रसिद्ध वास्तुकार गणेशचंद्र गोरा ने जैन मंदिरों की वास्तुकला से प्रेरणा लेकर तैयार किया।

<u>पर्यटन और आधुनिक सुविधाएं</u>

गांधी मंडप गुवाहाटी के उलुबारी क्षेत्र के पास सरणिया पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। यहां पुस्तकालय, संग्रहालय, और प्रदर्शनी कक्ष हैं, जो गांधी जी के जीवन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर प्रकाश डालते हैं। 2018 में, गांधीजीकी 150वीं जयंती पर, यहां एक पार्क का उद्घाटन किया गया और देश का तीसरा सबसे ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। हाल ही में, 2022 में, गांधी मंडप को 3 करोड़ रुपये की लागत से नवीनीकृत किया गया। यहां विकलांगों के लिए विशेष पहुंच, वातानुकूलित कमरे, लिफ्ट, और प्रकाश एवं ध्वनिशो कीसुविधाएं जोड़ी गईं।

<u>एक प्रेरणादायक अनुभव</u>

गांधी मंडप केवल एक स्मारक नहीं है, बल्कि यह महात्मा गांधी के शांति और अहिंसा के संदेश को जीवंत करता है। यह स्थान गुवाहाटी के मनोरम दृश्यों और ब्रह्मपुत्र नदी की सुंदरता का आनंद लेने के लिए भी प्रसिद्ध है। विशेष रूप से सूर्यास्त के समय यह स्थान बेहद मनमोहक हो जाता है। हरसाल 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर यहां विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। चाहे आप शांति की तलाश में हों, इतिहास को जानना चाहें, या प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना चाहें, गांधी मंडप एकअद्वितीयअनुभव प्रदान करता है जो आपके मन में लंबे समय तक गूंजता रहेगा।

आधुनिक पुरुष का मानसिक स्वास्थ्य: एक अनकहा सत्य

चन्दन शर्मा
प्रबन्धक(सामान्य)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

वक़्त के साथ दुनिया बदली है। अब वह दौर नहीं रहा जब घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ सिर्फ़ महिलाओं की मानी जाती थीं और पुरुष का दायरा केवल बाहर की दुनिया तक सीमित था। आज का पुरुष घर और बाहर दोनों मोर्चों पर पूरी शिद्दत से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है। वह अब सिर्फ़ एक कमाने वाला नहीं बल्कि घर के हर पहलू का सहभागी है—एक ऐसा सहभागी जो न केवल पत्नी के साथ किचन में खड़ा है, बल्कि बच्चों की परवरिश में भी पूरी लगन से भाग लेता है। वह अपने परिवार की हर छोटी-बड़ी ज़रूरत में नज़र आता है, बिना थके, बिना रुके।

आधुनिक पुरुष दिन-रात मेहनत करता है। दफ़्तर की चुनौतियाँ, समय की पाबंदियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ—इन सबसे जूझते हुए वह हर शाम घर लौटता है चेहरे पर मुस्कान लिए, सिर्फ़ इस उम्मीद में कि उसके परिवार के चेहरे पर भी वही ख़ुशी बरकरार रहे। वह कभी नहीं बताता कि ऑफिस में कितना तनाव था, किससे क्या विवाद हुआ, या किस काम ने उसकी ऊर्जा चूस ली। उसे लगता है कि ये सब कहने से कुछ बदलेगा नहीं इसलिए वह अपने सारे दर्द अंदर ही दबा लेता है।

वह अपने आँसुओं को अपनी ताक़त बना लेता है, क्योंकि बचपन से उसे यही सिखाया गया है—"मर्द रोते नहीं।" लेकिन क्या किसी ने कभी यह सोचा है कि यह "मर्द" भी एक इंसान है? उसे भी दुःख होता है, वह भी थकता है, टूटता है, मगर कह नहीं पाता। किसी को शिकायत नहीं होती अगर वह देर रात तक काम करता है, नींद पूरी नहीं कर पाता या अकेलेपन से जूझता है क्योंकि समाज उससे सिर्फ़ लेना जानता है—देना नहीं।

सबसे पीड़ादायक बात यह है कि पुरुष के दर्द को बहुत कम लोग महसूस करते हैं। जब वह थक कर चुप बैठा होता है, लोग उसे चिड़चिड़ा समझते हैं। जब वह उदास होता है, लोग उसे बेरुखा समझते हैं। किसी को यह जानने की ज़रूरत महसूस नहीं होती कि वह भीतर से क्या झेल रहा है। शायद उसे भी कभी-कभी किसी की ज़रूरत होती है जो बस इतना कह दे—"मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

मानसिक तनाव एक धीमा ज़हर है जो शरीर और आत्मा दोनों को खा जाता है। जब कोई पुरुष लगातार अपने दर्द को छुपाता है, तो वह भीतर ही भीतर घुटता रहता है। इससे न केवल उसका स्वास्थ्य प्रभावित होता है, बल्कि उसके व्यवहार, रिश्तों और जीवन की गुणवत्ता पर भी बुरा असर पड़ता है। डिप्रेशन, एंग्ज़ायटी, नींद न आना, गुस्सा, नशे की आदतें—ये सब उन तकलीफ़ों के नतीजे होते हैं जिनका समय रहते इलाज नहीं होता।

जब कोई पुरुष मानसिक रूप से अस्वस्थ होता है, तो उसका असर पूरे परिवार पर पड़ता है। उसका थका हुआ मन उसे उस पिता में बदल देता है जो बच्चों की बातों पर चिढ़ जाता है, उस पति में बदल देता है जो छोटी बातों पर नाराज़ हो जाता है, और उस इंसान में बदल देता है जिसे खुद से ही दूरी हो जाती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम पुरुषों की मानसिक स्थिति को भी उतना ही महत्व दें जितना कि उनकी शारीरिक या आर्थिक भूमिका को।

यह समझना होगा कि जैसे महिलाएं भावनात्मक सहारे की हकदार हैं, वैसे ही पुरुष भी। उन्हें भी एक ऐसा माहौल चाहिए जहाँ वे अपने दिल की बात खुलकर कह सकें, जहाँ कोई उनकी आँखों में देख कर पूछे—"क्या तुम ठीक हो?" जहाँ उन्हें भी यह भरोसा मिले कि उनका दर्द भी मायने रखता है।

आधुनिक पुरुष कोई मशीन नहीं है। वह एक इंसान है, जिसकी भावनाएं हैं, ज़रूरतें हैं और सीमाएं भी हैं। जब हम उसकी बातों को सुनेंगे, उसे अपनापन देंगे तभी वह भी अपने जीवन में संतुलन महसूस करेगा। उसकी मानसिक शांति केवल उसके लिए नहीं बल्कि पूरे परिवार और समाज के लिए भी ज़रूरी है।

क्योंकि जब एक पुरुष मुस्कुराता है, तो उसके साथ एक पूरा घर मुस्कुराता है।

औद्योगिक और प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग

मुनु दास
सहायक श्रेणी - I (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

हिंदी, भारत की एक प्रमुख भाषा होने के नाते, न केवल सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का अहम हिस्सा है, बल्कि यह औद्योगिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में हिंदी का उपयोग बढ़ते हुए औद्योगिक और प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जा रहा है, जो भाषा के प्रभाव और पहुंच को दर्शाता है। इस निबंध में हम हिंदी के औद्योगिक और प्रशासनिक क्षेत्र में उपयोग पर चर्चा करेंगे।

1. **औद्योगिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग**

औद्योगिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग विशेष रूप से कर्मचारियों के बीच संचार और विभिन्न औद्योगिक कार्यों को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता है।

(i)**संचार और कार्यस्थल पर प्रभाव**

औद्योगिक संगठनों में, विशेष कर उन कंपनियों में जहां श्रमिकों की बड़ी संख्या होती है, हिंदी का उपयोग कर्मचारियों और प्रबंधकों के बीच संवाद के लिए किया जाता है। हिंदी का प्रयोग कर्मचारी प्रशिक्षण, निर्देश, नोटिस और सुरक्षा नियमों के प्रचार के लिए किया जाता है। इससे श्रमिकों को अपनी कार्यप्रणाली और सुरक्षा संबंधी जानकारी को समझने में आसानी होती है, विशेषकर जब उन्हें अपनी मातृभाषा में जानकारी मिलती है।

(ii) **विपणन और विज्ञापन**

औद्योगिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग विपणन और विज्ञापन के लिए भी किया जाता है। भारत में हिंदी बोलने वालों की बड़ी संख्या है, इसलिए कंपनियाँ हिंदी में विज्ञापन और प्रचार सामग्री तैयार करती हैं, ताकि वे अपने उत्पादों और सेवाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा सकें। हिंदी विज्ञापन भारतीय बाजार में ग्राहकों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(iii) **औद्योगिक प्रबंधन और प्रशिक्षण**

औद्योगिक प्रबंधन में हिंदी का उपयोग कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने, कार्यशालाएँ आयोजित करने और प्रबंधन बैठकों में संवाद स्थापित करने के लिए किया जाता है। इससे उन कर्मचारियों को आसानी होती है जो अंग्रेजी या अन्य भाषाओं से परिचित नहीं हैं, और वे अपनी कार्य क्षमता को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

2. **प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग**

भारत में हिंदी का प्रशासनिक क्षेत्र में उपयोग संविदानिक और कानूनी दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी को संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया गया है। हिंदी का प्रशासनिक कार्यों में विस्तार से उपयोग किया जाता है, विशेषकर सरकारी विभागों, कार्यालयों और न्यायालयों में।

(i) **सरकारी दस्तावेज और संचार**

हिंदी का उपयोग सरकारी दस्तावेजों, नोटिसों, आदेशों, और अधिसूचनाओं में किया जाता है। राज्य सरकारों और केंद्र सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले अधिकांश महत्वपूर्ण संदेश हिंदी में होते हैं, ताकि हिंदी भाषी नागरिकों को उनके अधिकारों, योजनाओं और सरकारी सुविधाओं के बारे में सूचित किया जा सके। यह सरकार और नागरिकों के बीच संवाद को सरल बनाता है और प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता सुनिश्चित करता है।

(ii) **न्यायिक प्रणाली में हिंदी का योगदान**

भारत के न्यायिक प्रणाली में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। उच्च न्यायालयों और निचली अदालतों में हिंदी का उपयोग आमतौर पर वकीलों, न्यायाधीशों और अन्य संबंधित व्यक्तियों के बीच संवाद के लिए किया जाता है। साथ ही, कई राज्य सरकारें न्यायिक आदेश और फैसले हिंदी में जारी करती हैं ताकि आम जनता तक न्याय की प्रक्रिया सही तरीके से पहुँच सके।

(iii) **जन संपर्क और लोकसेवाएँ**

हिंदी का प्रशासनिक उपयोग जनसंपर्क और लोकसेवाओं में बढ़ रहा है। सरकारी योजनाओं और कल्याणकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार हिंदी में किया जाता है, जिससे अधिक से अधिक नागरिक इन योजनाओं से जुड़ते हैं और उनका लाभ प्राप्त करते हैं। इसके अलावा, हिंदी में तैयार किए गए आवेदन पत्र, प्रमाण पत्र और अन्य सरकारी दस्तावेज़ नागरिकों के लिए अधिक सुलभ होते हैं।

(iv) **विधान सभा और संसद में उपयोग**

भारत की संसद और राज्य विधान सभाओं में भी हिंदी का महत्वपूर्ण उपयोग होता है। हिंदी भाषी क्षेत्रों से आने वाले प्रतिनिधि अपनी बात हिंदी में रखते हैं। इसके साथ ही, कई विधान सभा और संसद सत्रों में हिंदी अनुवादक (translator) नियुक्त किए जाते हैं ताकि शेष देशवासियों को भी आसानी से संवाद समझ में आए।

3. **चुनौतियाँ और संभावनाएँ**

हालाँकि हिंदी का औद्योगिक और प्रशासनिक क्षेत्र में उपयोग बढ़ा है, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी हैं। एक ओर जहाँ हिंदी को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर प्राथमिकता दी जाती है, वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी का प्रभाव अब भी बरकरार है। विशेष कर बड़े औद्योगिक संगठन और बहु राष्ट्रीय कंपनियों में अंग्रेजी का उपयोग ज्यादा होता है।

इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में हिंदी के विभिन्न रूपों और बोलियों का भिन्न उपयोग भी देखने को मिलता है, जो कभी-कभी अस्पष्टता पैदा करता है। हालांकि, सरकार और औद्योगिक क्षेत्र में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयास निरंतर जारी हैं।

निष्कर्ष

औद्योगिक और प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग बढ़ता जा रहा है और यह भारतीय समाज में एकता और संवाद की दिशा में सकारात्मक योगदान दे रहा है। यह श्रमिकों, नागरिकों और सरकारी अधिकारियों के बीच बेहतर संचार का माध्यम बनकर कार्य करता है। हालांकि, इसके पूर्ण उपयोग के लिए कई सुधारों और प्रयासों की आवश्यकता है ताकि यह प्रत्येक क्षेत्र में और भी प्रभावी रूप से स्थापित हो सके।

पूर्वोत्तर भारत के मिथक और किंवदंतियाँ

अंकिता सिन्हा
सहायक श्रेणी - I (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

भारत लोककथाओं का देश है। हर पत्थर में एक कहानी, हर नदी में एक कहानी और इस विशाल भूभाग के हर कोने में एक किंवदंती छिपी है। यह उन चीज़ों में से एक है जो हमारी विविध संस्कृति को एक सूत्र में पिरोती है। यह कला छोटे से छोटे जीवन को महत्व देने और अपनी प्राकृतिक दुनिया के साथ सह-अस्तित्व खोजने का हमारा तरीका है।

पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों में से प्रत्येक से कुछ किंवदंतियाँ।

1. सिक्किम: वह सैनिक जो आज भी नाथू ला की रखवाली करता है

पूर्वी सिक्किम, जो सात बहनों का सहोदर राज्य है, में हरभजन सिंह नामक एक सैनिक को समर्पित एक मंदिर है। उन्होंने 1965 से 1968 में 22 वर्ष की आयु में अपने निधन तक भारतीय सेना में सेवा की। सिंह का नाथू ला दर्रे पर एक बचाव अभियान में सहयोग करते हुए निधन हो गया। किंवदंती है कि कई दिनों तक उनके शरीर को खोजने के बड़े पैमाने पर प्रयास किए गए। इनसे कोई परिणाम नहीं निकला। हालांकि, घटना के कुछ दिनों बाद, सिंह ने स्वयं एक साथी सैनिक को सपने में निर्देश देकर अधिकारियों को उनके शरीर के स्थान तक पहुँचाया। उनका शरीर ठीक उसी स्थान पर पाया गया जैसा उन्होंने बताया था। तब से, सैनिक आज भी उनकी उपस्थिति महसूस करने का दावा करते हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों पर उनसे निर्देश प्राप्त करने की सूचना देते हैं।

यह किंवदंती 'उनकी उपस्थिति महसूस करने' की भावना से परे है, लेकिन दिलचस्प तरीकों से वास्तविकता में रिसती है। हरभजन सिंह अभी भी सरकार से वेतन लेते हैं और अपने गाँव सरदाना जाने के लिए दो महीने की छुट्टी लेते हैं| नाथू ला दर्रे पर तैनात सेना के जवान आज भी इस क्षेत्र में सिंह की उपस्थिति का एहसास होने का दावा करते हैं और सीमा पर संभावित युद्धों की चेतावनी के लिए उन्हीं की ओर देखते हैं। सैनिकों का यह भी मानना है कि सिंह उन पर कड़ी नज़र रखते हैं और जो भी उनकी अपेक्षा के अनुसार अनुशासनात्मक कार्रवाई करने में विफल रहता है, उसे फटकार लगाते हैं।

2. मेघालय: नोहकलिकाई जलप्रपात के पीछे की दुखद कहानी

मेघालय के रंगजिरतेह नामक गाँव में लिकाई नाम की एक महिला रहती थी। अपने पति की मृत्यु के बाद, लिकाई अपने बच्चे के लिए खाना लाने के लिए कुली का अथक परिश्रम करती थी। इस वजह से, उसे अपनी बेटी को दिन में लंबे समय तक अकेला छोड़ना पड़ता था। यह महसूस करते हुए कि उसे बच्चे के पालन-पोषण के लिए सहारे की ज़रूरत है, लिकाई को दूसरी शादी करने के लिए मजबूर होना पड़ा ताकि वह काम करते समय अपनी बेटी को अपने दूसरे पति की मौजूदगी में छोड़ सके।

लिकाई काम से मिलने वाले थोड़े से समय में अपनी बेटी की देखभाल करती थी। इससे उसका पति ईर्ष्या से पागल हो गया | ईर्ष्या के आवेश में, एक दिन जब लिकाई काम पर गई तो उसने उस बच्ची को मार डाला और उसका मांस पका दिया। जब लिकाई वापस लौटी, तो उसने घर पर किसी को नहीं पाया, सिवाय खाने के। चूँकि वह भूखी थी, उसने अपनी बेटी की तलाश शुरू करने से पहले अपने पति द्वारा बनाया गया खाना खाने का फैसला किया। लिकाई ने जैसे ही खाना खाया, उसे एक उंगली मिली। यह जानकर कि क्या हुआ था, लिकाई पागल हो गई और उन्माद में भागने लगी। अपनी बेटी को खोने और अनजाने में उसे खा जाने के दुःख और क्रोध ने उसे इतना जकड़ लिया कि वह पठार के किनारे से सीधे नीचे गिर गई और उसकी मौत हो गई।

खासी में नोह का अर्थ है 'छलांग लगाना', खासी में 'का' महिला के लिए एक उपसर्ग है, और लिकाई मिलकर भारत के सबसे ऊँचे झरने का नाम बनाते हैं, जो लिकाई के दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य की पूरी कहानी को अपने नाम (नोह-का-लिकाई) में समेटे हुए है।

नोहकलिकाई जलप्रपात भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात है। यह एक पठार से 340 मीटर नीचे एक असामान्य हरे रंग के पानी वाले कुंड में गिरता है। यही वह पठार है जहाँ लिकाई ने अपनी अंतिम डुबकी लगाई थी।

3. नागालैंड: बाघ, देवता और मनुष्य – नागा मूल मिथक

कई कहानियों और इन कहानियों के कई अलग-अलग संस्करणों में से, नागा लोगों की उत्पत्ति की कहानी माओ लोककथा में निहित है। यह एक माँ की कहानी बताती है जो एक

बरगद के पेड़ के नीचे सो गई और उसे ढँके बादलों से गर्भवती हो गई। उसने तीन पुत्रों को जन्म दिया: बाघ, देवता और मनुष्य। ऐसा माना जाता है कि उसके तीन पुत्रों में से केवल मनुष्य ने ही उसकी बहुत देखभाल की। जब उनके निधन का समय आया तो तीनों भाइयों में उनकी विरासत को लेकर झगड़ा हो गया। उनकी नाभि, जो मध्य बिंदु है, वह धरती मानी जाती थी जिसके लिए तीनों भाई लड़ते थे। विवाद को सुलझाने के लिए, माँ ने एक प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय लिया। उन्होंने एक घास की गेंद बनाई और कहा कि जो भी इस घास की गेंद को सबसे पहले छू लेगा, उसे विजेता घोषित किया जाएगा। चूँकि वह मनुष्य की पक्षधर थीं, इसलिए उन्होंने मनुष्य को सुझाव दिया कि वह धनुष-बाण का उपयोग करके गेंद को सबसे तेज़ी से छू ले। अंततः मनुष्य जीत गया, लेकिन उसके भाइयों, भगवान और बाघ, को यह बात नागवार गुजरी। तीनों अलग हो गए और मनुष्य आज भी अपने दोनों भाइयों को खुश करने के लिए परंपराओं और प्रथाओं का पालन करता है ताकि वे तीनों एक बार फिर से मिल सकें।

4. त्रिपुरा: उनाकोटी और 99,99,999 चेहरों वाली खोई हुई पहाड़ी

त्रिपुरा की राजधानी से लगभग 150 किलोमीटर दूर, अगरतला के उनाकोटी जिले में, जम्पुई पहाड़ियों के घने जंगलों में इतिहास का एक दिलचस्प अंश छिपा है। इसे 'चेहरों की खोई हुई पहाड़ी' के नाम से जाना जाता है। उनाकोटि का अर्थ है 'एक करोड़ से एक कम', जो इस विस्मृत स्थान का शाब्दिक वर्णन है। कभी भगवान शिव के लिए एक लोकप्रिय तीर्थ स्थल, यहाँ कई कहानियाँ प्रचलित हैं।

उनाकोटि या 'एक करोड़ से एक कम' इस घने जंगल के अंदर चट्टानों पर उकेरी गई 99,99,999 पत्थर और चट्टान की मूर्तियों को संदर्भित करता है। प्रत्येक नक्काशी किसी न किसी देवता या देवी का प्रतिनिधित्व करती है। काई से ढकी सीढ़ियाँ और घुमावदार पुल, शिव के 30 फुट ऊँचे सिर तक ले जाते हैं जिसके चारों ओर अन्य सभी देवी-देवता हैं।

कहानी के एक संस्करण में, यह शिव का ही कार्य था। एक बार की बात है, शिव 99,99,999 देवी-देवताओं के साथ काशी की यात्रा कर रहे थे। एक लंबा सफर तय करने के बाद यह निर्णय लिया गया कि वे इन जंगलों में रात्रि विश्राम करेंगे और भोर से पहले फिर से यात्रा शुरू करेंगे। लेकिन ऐसा हुआ कि शिव ही एकमात्र ऐसे थे जो समय पर जागे और उन्होंने पाया कि बाकी सभी अभी भी सो रहे हैं। अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध संहारक शिव, इससे इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने अपने पूरे दल को पत्थर में बदल दिया जिससे वे समय और स्थान में जम गए।

एक अन्य संस्करण के अनुसार पार्वती इस कहानी का केंद्रबिंदु हैं। ऐसा कहा जाता है कि देवी ने एक कुशल कारीगर से शिव को प्रसन्न करने के लिए सभी देवी-देवताओं की एक करोड़ मूर्तियाँ बनाने को कहा। लेकिन शर्त यह थी कि उसे यह काम एक ही रात में करना था। कारीगर ने पूरी रात अथक परिश्रम किया, फिर भी वह एक मुकाम हासिल नहीं कर पाया जिससे इस जगह का नाम 'उनाकोटि' पड़ा।

5. असम: भारत की काले जादू की राजधानी - मायोंग

असम में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसे इस शांत गाँव के बारे में पहली नज़र में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसके दिलचस्प अतीत की ओर इशारा करता हो। पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य के हरे-भरे जंगलों से घिरा, जो एक सींग वाले गैंडे का घर है, इस छोटे से गाँव को कभी जादू-टोने और तांत्रिक साधनाओं का गढ़ माना जाता था। दूर-दूर से लोग इस छोटी सी बस्ती में काला जादू सीखने आते थे।

ऐसा माना जाता है कि मध्य युग में इस क्षेत्र में मानव बलि देने की प्रथा भी प्रचलित थी। इस गाँव में लोगों के गायब होने, खोई हुई वस्तुओं की प्राप्ति और जादुई रूप से मनुष्यों के अन्य रूपों में बदल जाने के रहस्यों से जुड़ी कहानियाँ प्रचलित हैं। एक दिलचस्प कहानी के अनुसार, युद्ध के समय, एक लाख सैनिकों वाली सेना मायोंग में प्रवेश करते ही बिना किसी निशान के गायब हो गई थी।

इसके रोचक अतीत के प्रमाण के रूप में, ऐसा माना जाता है कि कुछ घरों में आज भी एक प्राचीन भाषा में लिखे ग्रंथ हैं, जिसे अब बहुत कम लोग ही जानते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इन दस्तावेजों में पुराने समय में प्रचलित जादू-टोने और मंत्रों का उल्लेख है। गाँव के संग्रहालय में भी इनमें से कुछ लेख प्रदर्शित हैं जिन्हें पुरानी प्रथाओं के निर्देश कहा जाता है।

इस गाँव का नाम मायोंग कैसे पड़ा, इसके बारे में भी कई कहानियाँ हैं। कुछ लोगों का मानना है कि यह संस्कृत शब्द 'माय' से आया है जिसका अर्थ है भ्रम। अन्य लोगों का मानना है कि यह मोइरांग से उत्पन्न हुआ है जो मणिपुर की एक जनजाति थी और इतिहास के एक निश्चित समय में इस गाँव की मूल निवासी थी। फिर भी कुछ अन्य लोगों का मानना है कि इस नाम का स्रोत दिमासा शब्द मियोंग है जिसका अर्थ हाथी होता है।

6. मिज़ोरम : छिनलुंग छूक की उत्पत्ति की कहानी

छिनलुंग छूक का अर्थ है पृथ्वी से बाहर आना। यह मिज़ोरम के लोगों की उत्पत्ति की पौराणिक कथा का शीर्षक है। यह कहानी खुआनु नाम की एक देवी के बारे में है जिसने दुनिया, इंसानों, जानवरों और पेड़ों की रचना की। यह एक समृद्ध दुनिया थी, उसके सभी जीव एक ही भाषा बोलते थे और एक-दूसरे के साथ बहुत अच्छे से रहते थे। लेकिन हर बार जब अंधेरा छा जाता, तो दुनिया अराजकता में बदल जाती। छोटे लड़के और लड़कियाँ बंदर बन जाते, और बड़े पक्षी बन जाते। पृथ्वी की रचयिता देवी को डर था कि कहीं वह अपनी सभी मानव रचनाओं को न खो दें, इसलिए उन्होंने उन्हें एक विशाल चट्टान, छिनलुंग, के नीचे बंद कर दिया। जब उन्हें यकीन हो गया कि पृथ्वी पर पनपने के लिए पर्याप्त मनुष्य हैं तो उन्होंने उन्हें बाहर निकालने के लिए विशाल चट्टान को उठा लिया। वे बड़ी संख्या में बाहर निकलने के लिए दौड़ पड़े। इस रिहाई से उत्पन्न शोर और शोर ने खुआनु को अभिभूत कर दिया और उन्होंने एक बार फिर चट्टान को नीचे गिरा दिया जिससे बाकी लोग अंदर फँस गए। वे लोग जो मिज़ोरम की कई जनजातियों से मुक्त हुए थे।

7. अरुणाचल प्रदेश: ब्रह्मांडीय अंडे और पृथ्वी का जन्म

अरुणाचल प्रदेश में दो दर्जन से ज़्यादा जनजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक का पृथ्वी की उत्पत्ति के बारे में अपना दृष्टिकोण है। उनमें से एक कुछ इस प्रकार है। समय की शुरुआत में, कुछ भी नहीं था - न पृथ्वी, न आकाश। केवल दो अंडे थे। वे सोने की तरह चमकते थे और एक-दूसरे के चारों ओर घूमते थे। एक समय की बात है, वे दोनों आपस में टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गए। एक से पृथ्वी और दूसरे से आकाश का जन्म हुआ। कहा जाता है कि पृथ्वी इतनी बड़ी थी कि आकाश उसे अपने अंदर समाहित नहीं कर सकता था, इसलिए उसने पृथ्वी से खुद को छोटा करने की विनती की। पृथ्वी ने उसकी बात मान ली और खुद को छोटा कर लिया, जिससे पहाड़ों और पहाड़ियों का जन्म हुआ। जब आकाश और पृथ्वी ने अंततः एक-दूसरे को गले लगाया तो उनके मिलन से सभी जानवर और पेड़ पैदा हुए।

8. मणिपुर: कैसे एक राजकुमारी ने रेशम बुनाई संस्कृति की शुरुआत की

रेशम उत्पादन की परंपरा का मणिपुर राज्य से पुराना नाता है। यह राज्य सभी 4 प्रकार के रेशम अर्थात् शहतूत, तसर, एरी और मूगा का उत्पादन करता है। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्येक प्रकार का रेशम उत्पादित होता है।

ऐसा माना जाता है कि बहुत समय पहले, एक बर्मी राजकुमारी ने मणिपुर के प्रतिद्वंद्वी राज्य के एक साधारण सैनिक से विवाह किया था। विवाह के बाद जब वह वहाँ रहने आई तो उसे एहसास हुआ कि उसके पति और उसकी माँ साधारण लोग थे जो एक साधारण जीवन जीते थे। वह उनकी किस्मत बदलने के लिए कुछ करना चाहती थी। इसके लिए, उसने एक योजना बनाई। उसने अपने पति से उसके लिए एक बिना खिड़की वाला कमरा तैयार करने को कहा। फिर वह हर दिन शहतूत के पत्ते इकट्ठा करने लगी खुद को अपने बंद कमरे में बंद कर लेती और काम पर लग जाती। हर दिन ऐसा करने के लंबे समय के बाद वह अपना सुंदर रेशमी कपड़ा तैयार करने में सफल रही जो सूरज की तरह चमकता था। फिर उसने अपने पति से इसे बाजार में बेचने को कहा और उन्हें इसके लिए अच्छी कीमत मिली। जल्द ही यह एक दिनचर्या बन गई जहाँ राजकुमारी शहतूत इकट्ठा करती काम पर लग जाती और अपने पति से अपनी कृतियों को बाजार में तब तक बेचने को कहती जब तक कि वे एक बड़ी रकम जमा नहीं कर लेते। इस तरह बुनाई मणिपुर के गाँवों में एक घरेलू व्यवसाय बन गई।

नो फ्लाइंग ज़ोन: एक 'अनकनेक्टेड' गांव

सचीन्द्र नंदन चौधरी,
सहायक श्रेणी – III (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय (उ.पू.), गुवाहाटी

अध्याय 1: वह जंगल जहाँ मौत सांस लेती है

असम के उस गुमनाम गांव में शाम का ढलना सिर्फ दिन का खत्म होना नहीं था; वह एक खौफनाक सन्नाटे की शुरुआत थी। शाम के छह बजते ही वहां घरों के लकड़ी के दरवाजे सिर्फ बंद नहीं होते थे, बल्कि उन पर लोहे की भारी सांकलें चढ़ा दी जाती थीं। बाहर कोई परिंदा भी पर नहीं मारता था, और अगर कोई कुत्ता रोता, तो उसे भी डराकर चुप करा दिया जाता। वजह था गांव के उत्तर में बसा वह घना जंगल—'দেৱতাই লৈ যোৱা জাগা' (वह जगह जहाँ देवता ले जाते हैं)। स्थानीय लोगों का मानना था कि वह जगह शापित है। वहां के पत्ते हवा से नहीं, बल्कि किसी अदृश्य खौफ से कांपते हैं। जो वहां गया, उसे 'देवता' जिंदा निगल जाता है।

गांव के एक जर्जर और सीलन भरे पंचायत घर में एक लालटेन टिमटिमा रही थी। उस पीली रोशनी में मास-कम्युनिकेशन के दो छात्र नील और जीतु बैठे थे।

नील फर्श पर बैठा अपने कैमरे के लेंस को बहुत बारीकी से साफ कर रहा था। उसकी आंखों में नींद नहीं बल्कि एक जुनूनी पत्रकार की आग थी। वहीं कमरे के दूसरे कोने में जीतु खटिया पर लेटा पसीने से तर-बतर था। वह बार-बार अपने फोन की स्क्रीन को घूरता और हवा में हाथ चलाकर मच्छरों को मारता।

"नील, हम यहाँ मरने आए हैं क्या?" जीतु की आवाज में गुस्सा और खौफ दोनों थे। "मेरी गर्दन सूज गई है इन जंगली मच्छरों के काटने से। और मेरे फोन में पिछले 48 घंटों से नेटवर्क का एक सिंगल डंडा नहीं आया है। मैं गुवाहाटी में अपने घर वालों से कट चुका हूं!"

नील ने कैमरे से नजरें हटाए बिना शांत स्वर में कहा, "यही तो हमारी स्टोरी है जीतु। 'अनकनेक्टेड' इंडिया। एक ऐसा गांव जहाँ नेटवर्क नहीं पहुंचता लेकिन मौत रोज पहुंचती है। फुटेज में वह खौफ एकदम साफ दिख रहा है।"

"इंटरव्यू?" जीतु ने अपना माथा पीट लिया। "तू पागल हो गया है नील! शाम 6 बजे के बाद यहाँ श्मशान से ज्यादा सन्नाटा होता है। क्या तूने आज दोपहर उस चाय वाले की बात नहीं सुनी? पिछले महीने सुमी नाम की लड़की दिन-दहाड़े लकड़ी बीनने गई थी और वापस नहीं आई। वह 'देवता' हमें भी नहीं छोड़ेगा!"

नील ने अपना कैमरा मेज पर रखा और जीतु की आंखों में सीधा देखा। "जीतु, देवता-वेवता कुछ नहीं होता। लोग गायब हो रहे हैं, यह सच है। और एक मास-कॉम स्टूडेंट होने के नाते यह हमारा फर्ज है कि हम इस सच को बाहर लाएं।"

"फर्ज गया भाड़ में!" जीतु खटिया से खड़ा हो गया। "सुन मेरी बात। मुझे कोई पुलित्जर प्राइज नहीं जीतना है। हम कल सुबह ही गुवाहाटी वापस चलते हैं। मेरे पास AI टूल्स का प्रीमियम सब्सक्रिप्शन है। हम इंटरनेट से किसी भी घने जंगल की डरावनी फुटेज उठाएंगे AI से खौफनाक वॉयसओवर बनाएंगे और प्रोफेसर को बेवकूफ बना देंगे।"

"जीतु, हम पत्रकार बनने वाले हैं फर्जी यूट्यूबर नहीं," नील की आवाज में एक सर्द कड़क थी। "अगर हम यहाँ से बिना सच जाने भाग गए, तो हम अपनी डिग्री के लायक नहीं हैं।"

"ठीक है भाई, तू बन जा महान पत्रकार। जा, ढूंढ ले उस देवता को। लेकिन मैं कल सुबह की पहली बस पकड़ रहा हूं।"

अगली सुबह, धुंध के बीच जीतु सचमुच अपना बैग लेकर बस स्टॉप की ओर चला गया। नील ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वह बस स्टॉप से कुछ दूर खड़ा अपने कैमरे के व्यूफाइंडर से जीतु की बस को जाते हुए रिकॉर्ड कर रहा था।

जीतु की बस तो वहां से निकल गई लेकिन जैसे ही नील ने अपना कैमरा नीचे करने के लिए लेंस को घुमाया फोकस जंगल के मुहाने पर जाकर टिक गया। नील की सांसें हलक में अटक गईं। कैमरे के फ्रेम में पेड़ों के घने झुरमुट के बीच कोई खड़ा था। वह कोई जानवर नहीं था। वह एक लंबी, काली परछाई थी, जो बिल्कुल स्थिर खड़ी होकर सीधे नील के कैमरे के लेंस में घूर रही थी।

अध्याय 2: शर्मा जी का बेटा और एक खौफनाक वापसी

गुवाहाटी की सुरक्षित दीवारों और एयर-कंडीशंड कमरों के बीच पहुंचकर भी जीतु को सुकून नहीं मिला। घर पहुंचते ही उसका स्वागत एक कड़वी हकीकत ने किया। उसके पड़ोस में रहने वाले 'शर्मा जी' के बेटे ने GATE परीक्षा में पूरे राज्य में टॉप कर लिया था। मोहल्ले में मिठाइयां बंट रही थीं, और जीतु के घर

में तानों की बौछार हो रही थी।

रात के खाने की मेज पर पिता की भारी आवाज गूंजी, "शर्मा जी का बेटा अगले महीने अमेरिका जाने की तैयारी कर रहा है, और हमारा बेटा? गांव में भूत ढूंढ रहा है! तुमसे कुछ नहीं होगा जीतु।"

पिता के इन शब्दों ने जीतु के सीने में तीर की तरह चुभन पैदा की। रात के अंधेरे में बिस्तर पर लेटकर वह छत को घूरता रहा। क्या वह वाकई इतना बड़ा कायर है? अपनी सहूलियत और डर के लिए बीच मैदान से भागना उसे जिंदगी भर एक हारा हुआ इंसान बनाए रखेगा। इसी 'हार' के डर ने उसके अंदर के सोए हुए इंसान को झकझोर दिया। उसी रात, बिना किसी को बताए, जीतु ने अपना बैग उठाया, कैमरा किट पैक की और उसी मौत के गांव की ओर वापस निकल पड़ा।

अगली सुबह जब जीतु उस जर्जर पंचायत घर पहुंचा, तो वहां का नजारा बदला हुआ था। नील अकेला नहीं था। वहां दो हाई- टेक लैपटॉप सेटअप थे, और उनके बीच खड़ी थीं यूनिवर्सिटी की दो सबसे तेज-तर्रार छात्राएं—दिया और ज्योति।

"नील, ये सब क्या है?" जीतु ने अपना बैग पटकते हुए तंज कसा। "यह मास-कॉम का प्रोजेक्ट है या कोई कॉलेज पिकनिक? ये दोनों यहाँ क्या कर रही हैं?"

ज्योति ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, "पिकनिक तो वह थी जीतु, जिसे तुम अपनी जान के डर से बीच में ही छोड़कर भाग गए थे।"

जीतु तिलमिला गया। "मैं डरा नहीं था! और वैसे भी, जब मेहनत मैंने और नील ने की है, तो क्रेडिट बांटने के लिए तुम दोनों यहाँ क्यों टपक पड़ीं?"

इस बार दिया अपनी जगह से उठी और जीतु के ठीक सामने आकर खड़ी हो गई। उसकी आंखों में कोई मजाक नहीं, सिर्फ एक खौफनाक गंभीरता थी।

"जीतु," दिया की आवाज धीमी लेकिन भारी थी, "अगर तुम सच में इस 'स्टोरी' का हिस्सा बनना चाहते हो, तो तुम्हें अपनी ये 'फनी बॉय' वाली इमेज यहीं छोड़नी होगी। यहाँ लोग सच में मर रहे हैं।"

दिया ने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और उसे मेज पर खोला। मेज पर एक पुराना, पीतल का 'दुग-दुगी' (असमिया गले का गहना) रखा था।

"यह मुझे आज सुबह जंगल के किनारे मिला है," दिया की आवाज कांप रही थी। "यह सुमी का है... वह लड़की जो पिछले महीने 'देवता' का शिकार हुई थी।"

उस पीतल के गहने की किनारियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे लगे थे। "यह सूखा हुआ खून है," ज्योति ने पीछे से कहा। "और खून के ये निशान बिल्कुल ताजे हैं।"

"भूत-प्रेत या देवता लोगों का खून नहीं बहाते, जीतु," दिया ने सीधा उसकी आंखों में देखा। "यह काम इंसानों का है। अगर तुम शर्मा जी के बेटे से बेहतर बनने के लिए यहाँ आए हो, तो वापस चले जाओ। लेकिन अगर तुम इस खून का सच जानने के लिए तैयार भी हो... तो हमारी टीम में तुम्हारा स्वागत है।"

जीतु वहीं खड़ा रह गया। उस खून से सने गहने ने उसे बता दिया था कि वह जिस चीज से टकराने जा रहा है, वह किसी भी भूत से लाख गुना ज्यादा भयानक है।

अध्याय 3: नियति का खेल और खामोश सुबूत

क्या यह नियति का कोई खेल था, या

फिर उस मनहूस गांव के जहरीले पानी का असर? उस रात के अगले ही दिन ज्योति अचानक बुरी तरह बीमार पड़ गई। उसे भयानक फूड पॉइजनिंग और डिहाइड्रेशन हो गया था।

नील और जीतु ज्योति को संभालते हुए गांव के इकलौते 'प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र' की ओर भागे, और उनके पीछे-पीछे दिया भी दौड़ पड़ी।

अंदर एक अधेड़ उम्र का कम्पाउंडर अपनी मेज पर बैठा कुछ फाइलें देख रहा था। जैसे ही उन्होंने ज्योति को अंदर लिटाया, कम्पाउंडर ने एक नया पन्ना खोलकर ज्योति से कुछ सवाल पूछने लगा—उसकी उम्र, पिछली बीमारियां और ब्लड ग्रुप। उस वक्त किसी ने इन सवालों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

"पेट खराब है, इसे जल्दी से सलाइन लगाइए," जीतु ने घबराते हुए कहा।

"हां, मैं अंदर से सलाइन लेकर आता हूं," कम्पाउंडर अपनी मेज से उठा और पीछे वाले अंधेरे कमरे में चला गया।

दिया दरवाजे के पास खड़ी थी। मेज पर वह मोटा रजिस्टर खुला हुआ था। दिया यूं ही टहलते हुए मेज के पास आई और रैंडमली उस रजिस्टर के खुले पन्ने को देखने लगी। अचानक उसकी नजर एक नाम पर जाकर अटक गई—'सुमी'।

सुमी? दिया का दिमाग सुन्न हो गया। पीछे के कमरे से कम्पाउंडर के कदमों की आहट आ रही थी। उसने बिना कुछ सोचे बिजली की फुर्ती से अपना फोन निकाला, सुमी वाले पन्ने और उसके आगे-पीछे के कुछ पन्नों की तस्वीरें खींचीं, और वापस अपनी जगह पर जाकर चुपचाप खड़ी हो गई।

कुछ घंटों बाद ज्योति की हालत में थोड़ा सुधार हुआ और वे कैंप लौट आए। रात का खाना खाने के बाद, जब नील और जीतु अगले दिन की चर्चा कर रहे थे, दिया अपने लैपटॉप की स्क्रीन से चिपकी हुई थी। रात के 11 बजे, उसने लैपटॉप घुमाया।

"नील, जीतु... मेरी बात ध्यान से सुनो," दिया की आवाज में एक कड़क थी। "आज क्लिनिक में उस कम्पाउंडर ने ज्योति से उम्र, बीमारियां और उसका ब्लड ग्रुप पूछा था। एक मामूली फूड पॉइजनिंग के लिए कोई ब्लड ग्रुप क्यों पूछेगा? क्योंकि वह क्लिनिक इलाज करने के लिए है ही नहीं।"

दिया ने लैपटॉप की स्क्रीन उनकी तरफ की, जिस पर रजिस्टर की तस्वीरें और लापता लड़कियों की लिस्ट खुली थी।

"मैंने आज रजिस्टर में सुमी का नाम देखा था। जो भी लड़कियां पिछले दो सालों में गायब हुई हैं, उनके नाम इस रजिस्टर में हैं। सुमी का हीमोग्लोबिन 13.5 था। बाकी लड़कियों की फिटनेस एकदम परफेक्ट थी। वे इस गांव की सबसे स्वस्थ लड़कियां थीं। और सबसे भयानक बात यह है कि गायब होने से ठीक दो या तीन दिन पहले, उस कम्पाउंडर ने उन सबका फुल-बॉडी ब्लड टेस्ट किया था! यह देवता का श्राप नहीं, एक 'कैटलॉग' है। वह कम्पाउंडर उन लड़कियों का मेडिकल डेटा किसी को भेजता है, और वे लोग सिर्फ एकदम फिट लड़कियों को उठा लेते हैं!"

नील, जो अब तक सन्न खड़ा था, उसने तुरंत अपना लैपटॉप निकाला। "अगर दिया की बात सच है..." नील ने म्यांमार के एक न्यूज़ पोर्टल की क्लिप चलाई। हेडलाइन थी:

"म्यांमार सीमा पर भारतीय लड़कियां गिरफ्तार।" "ये देखो," नील ने क्लिप को पॉज किया। "ये लड़कियां कमजोर या कुपोषित नहीं दिख रही हैं।"

जीतु की उंगली स्क्रीन पर एक चेहरे की तरफ उठी। "ये... ये तो सुमी है!"

कहानी अब शीशे की तरह साफ थी। कोई 'देवता' नहीं था। यह एक खूंखार अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट था, जो गांव की लड़कियों को 'দেৱতাই লৈ যোৱা জাগা' के रास्ते म्यांमार बॉर्डर के पार तस्करी कर रहा था।

अध्याय 4: 'नो फ्लाइंग ज़ोन' का तिलिस्म और एक बेबस हार

रात के दो बज चुके थे। अब उनके पास एक सुबूत था—कम्पाउंडर के रजिस्टर की तस्वीरें। लेकिन जब तक वे इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं जुटा लेते कि उस घने जंगल के भीतर कोई माफिया काम कर रहा है, पुलिस उनकी कहानी पर हंसेगी।

"हमें आज रात ही उस जंगल के अंदर जाना होगा," नील ने कहा। चारों दबे कदमों से गांव की सीमा पार करके जंगल के मुहाने पर पहुंचे। वे मुश्किल से आधा किलोमीटर ही अंदर गए होंगे कि अचानक नील के कैमरे की स्क्रीन झिलमिलाई और 'ब्लैकआउट' हो गई।

"नील... मेरा जीपीएस काम नहीं कर रहा है," जीतु ने अपना फोन निकाला। दिया के फोन की स्क्रीन भी फ्रीज हो चुकी थी।

तभी ज्योति की नजर सामने दो बड़े पेड़ों के बीच लगे एक जंग खाए बोर्ड पर पड़ी। उस पर लाल अक्षरों में लिखा था—'RESTRICTED AREA: NO FLYING ZONE'

"जीतु... यह देवता का कोई श्राप नहीं है," दिया घबरा गई। "यह 'मिलिट्री-ग्रेड सिग्नल जैमर' है। इसके आगे न कोई कैमरा काम करेगा, न ड्रोन, न फोन।"

नील ने तारों की बाड़ की तरफ कदम बढ़ाया, लेकिन जीतु ने उसे पीछे खींच लिया। "पागल हो गया है तू? अगर यहाँ सिग्नल जैमर लगे हैं, तो हीट-सेंसर और गार्ड्स भी होंगे। सुबह हमारी लाशें भी नहीं मिलेंगी!"

वे चुपचाप उल्टे पांव अपने पंचायत घर लौट आए।

कमरे में लौटते ही नील ने अपना सिर पकड़ लिया। "हम हार गए... लड़कियां बेची जा रही हैं, और हम कुछ नहीं कर सकते!"

"ज्योति, हम पुलिस के पास नहीं जा सकते," जीतु ने कड़वाहट से कहा। "जो सिंडिकेट जंगलों में जैमर्स लगा सकता है, पुलिस उनकी जेब में होगी।"

दिया मुड़ी। "हमारी हैसियत क्या है? हम सिर्फ चार स्टूडेंट्स हैं। वो लोग 'सिस्टम' हैं। हमें जिंदा रहने के लिए भागना ही होगा। मरे हुए लोग इंसाफ नहीं दिला सकते।"

अगले दिन सुबह, धुंध के बीच चारों ने अपना सामान बांधा और पहली बस में बैठकर गुवाहाटी की ओर निकल पड़े। यह उनकी हार जरूर थी, लेकिन उन्हें नहीं पता था कि यह हार एक आत्मघाती योजना को जन्म देने वाली थी।

अध्याय 5: 'ट्रोजन हॉर्स' की साजिश और एक खौफनाक खुलासा

गुवाहाटी की उस चिलचिलाती दोपहर में भी दिया के घर के उस बंद कमरे का तापमान किसी सर्द रात जैसा महसूस हो रहा था। हारकर लौटे हुए उन्हें 6 महीने बीत चुके थे। आज अचानक दिया ने एक अर्जेंट मीटिंग के लिए सबको बुलाया था।

"तूने हमें यहाँ क्यों बुलाया है दिया?" जीतु ने घबराहट छुपाते हुए कहा।

दिया ने अपनी मेज से एक फाइल उठाकर जीतु के सीने पर दे मारी। "क्या सुमी और उन लड़कियों को हम सच में पीछे छोड़ सकते हैं?"

नील ने फाइल खोली। उसमें कुछ इंटरनेशनल ट्रैवल टिकट्स और हाई-एंड सैटेलाइट इक्विपमेंट का परमिट था।

"मैंने यूरोप और अमेरिका के कुछ विदेशी छात्रों को भारत आमंत्रित किया है," दिया ने बताया। "वे 'असम के ग्रामीण जादू-टोने' पर एक डॉक्यूमेंट्री बनाना चाहते हैं।"

ज्योति झटके से खड़ी हो गई। "तू पागल हो गई है दिया? तू उन निर्दोष विदेशी छात्रों को चारे (bait) की तरह इस्तेमाल कर रही है? हम पत्रकार हैं, हत्यारे नहीं!"

"ज्योति सही कह रही है!" जीतु चिल्ला पड़ा। "विदेशी नागरिकों को धोखे से एक 'नो फ्लाइंग ज़ोन' में ले जाना? हम सीधे-सीधे देशद्रोही कहलाएंगे!"

"तो क्या करें जीतु?" दिया की आवाज गूंज उठी। "अगर हम भारतीय छात्र वहां मरे, तो पुलिस हमारी लाशों को गाड़कर फाइल बंद कर देगी। लेकिन अगर एक गोरा विदेशी नागरिक वहां खरोंच भी खा गया, तो अंतरराष्ट्रीय दूतावास रातों-रात उस 'नो फ्लाइंग ज़ोन' की ईंट से ईंट बजा देंगे। यही विदेशी 'इम्युनिटी' हमारी इकलौती ढाल है!"

नील ने एक गहरी सांस ली। "दिया सही कह रही है। हम एक 'ट्रोजन हॉर्स' (Trojan Horse) बना रहे हैं। बाहर से विदेशी छात्रों की डॉक्यूमेंट्री... और अंदर से हमारी इन्वेस्टिगेशन।"

जीतु ने अपना चेहरा हाथों में छुपा लिया। लेकिन अंदर का मरा हुआ जमीर उसे पीछे हटने नहीं दे रहा था। "ठीक है," जीतु ने हामी भरी। "चलते हैं।"

एक हफ्ते बाद, विदेशी छात्रों की टीम और उनके महंगे सैटेलाइट उपकरणों के साथ वे उसी गांव पहुंचे। लेकिन गांव का मंजर भयानक हो चुका था। बूढ़े मुखिया ने रोते हुए बताया, "पिछले दो महीनों में गांव की लड़कियां नहीं, बल्कि 9 और 10 साल के पांच छोटे लड़के गायब हो चुके हैं!"

लड़कियों के बाद अब छोटे बच्चे?

उसी रात, जीतु अलाव के पास विदेशी छात्र 'एलेक्स' के साथ बैठा था। एलेक्स ने कैजुअल बातचीत में कहा, "तुम्हारी देश की एक बड़ी फार्मा कंपनी ने रातों-रात एक चमत्कार कर दिया है। वे एक नए म्यूटेटिंग वायरस की 100% कारगर वैक्सीन लॉन्च करने वाले हैं, जो किशोरों और बच्चों को बचाती है। लेकिन मेडिकल वर्ल्ड हैरान है कि इतनी एडवांस वैक्सीन बिना किसी 'ह्यूमन क्लिनिकल ट्रायल' के अप्रूवल के लिए कैसे पहुंच गई? उनका ट्रायल डेटा बेस बिल्कुल गुप्त है।"

जीतु के हाथ से कॉफी का मग छूट गया। किशोर? छोटे बच्चे? ह्यूमन क्लिनिकल ट्रायल?

जीतु ने एलेक्स के सोने के बाद उसके सैटेलाइट इंटरनेट का इस्तेमाल किया। उसने 'डार्क वेब' के जरिए उस फार्मा कंपनी के सप्लाई नेटवर्क को ट्रैक किया। उस कंपनी ने 'वैक्सीन ट्रायल किट्स' असम के एक NGO को भेजी थीं, जिसके को-ऑर्डिनेट्स 'দেৱতাই লৈ যোৱা জাগা' के ठीक बीचों-बीच के थे!

रात के 2 बजे जीतु कमरे में घुसा। "नील... ज्योति... उठो!" उसने लैपटॉप स्क्रीन घुमाई। "वह 'नो फ्लाइंग ज़ोन' कोई तस्करों का अड्डा नहीं है... वह उस फार्मा कंपनी की अवैध ह्यूमन क्लिनिकल ट्रायल लैब है! म्यांमार में पकड़ी गई सुमी और वो लड़कियां वेश्याएं नहीं थीं। वे वैक्सीन के पहले चरण (Phase 1) के ट्रायल की 'सब्जेक्ट्स' थीं। जब वे बर्बाद हो गईं, तो फार्मा माफिया ने उन्हें म्यांमार बॉर्डर के पार फेंक दिया। और अब, उन्हें दूसरे चरण (Phase 2) यानी पेडियाट्रिक ट्रायल के लिए छोटे बच्चों के शरीर चाहिए। इसीलिए अब देवता लड़कों को खा रहा है।"

कमरे में मौत का सा सन्नाटा छा गया। जीतु की मुट्ठियां कस गईं। "ये फार्मा वाले इंसानों को लैब के चूहे समझते हैं। अब वक्त आ गया है कि हम इन सफेदपोश चूहों को उन्हीं की मांद में आग लगा दें।"

अंतिम अध्याय: एक 'झूठा' बंधक और देवता का पतन रात के 3 बज चुके थे। पंचायत घर के बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। दिया और ज्योति गहरी नींद में थीं।

"हम दिया और ज्योति को इस आग में नहीं झोंकेंगे," नील ने फुसफुसाते हुए जीतु से कहा। "यह पाप सिर्फ हम दोनों करेंगे।"

दोनों दबे कदमों से कैंप के बाहर निकले और एलेक्स के तंबू में घुसे। जीतु ने एलेक्स को जगाया और सारा डेटा उसके सामने रख दिया।

"तुम्हें याद है तुमने जिस वैक्सीन की बात की थी?" जीतु ने कहा। "उसका क्लिनिकल ट्रायल हमारे गांव के गरीब बच्चों पर हो रहा है। वह जंगल उस फार्मा कंपनी का कत्लखाना है।"

मेडिकल छात्र एलेक्स आंकड़े देखकर सुन्न रह गया। "ये लोग बिना कन्सेंट के मासूम बच्चों के नर्वस सिस्टम में वायरस इंजेक्ट कर रहे हैं? यह नरसंहार है!"

"एलेक्स, अगर हम पुलिस के पास गए, तो फाइलें यहीं दब जाएंगी," नील ने कहा। "हमें एक अंतरराष्ट्रीय भूचाल चाहिए। हमें तुम्हें 'किडनैप' करना होगा, एलेक्स। हम चाहते हैं कि तुम हमारे बंधक बनो। सिर्फ 24 घंटे के लिए।"

एलेक्स ने बाहर गिरती बारिश की आवाज सुनी और स्क्रीन पर लापता भारतीय बच्चों के चेहरों को देखा। "चलो," एलेक्स ने दृढ़ता से कहा, "उन्हें दुनिया की सबसे असली लगने वाली 'झूठी' किडनैपिंग दिखाते हैं।"

रात के 4 बजे, जंगल के अंधेरे में जीतु ने कैमरा ऑन किया। एलेक्स मिट्टी में सना, घुटनों के बल बैठा था। पीछे नील अपना चेहरा ढंके, एक नकली बंदूक ताने खड़ा था। जीतु ने वह लाइव ब्रॉडकास्ट सीधा अंतरराष्ट्रीय न्यूज एजेंसियों और दूतावासों को भेज दिया।

"हमारे कब्जे में एक विदेशी नागरिक है। अगर अगले 24 घंटों के अंदर मीडिया और मिलिट्री इस 'नो फ्लाइंग ज़ोन' की तलाशी नहीं लेती, तो इसका खून यहीं गिरेगा!"

शुरू हुआ जिंदगी का सबसे भयानक इंतजार—24 घंटे का स्टेंडऑफ।

20 घंटे बीतने के बाद, फार्मा कंपनी के पाले हुए माफिया और हथियारबंद कमांडो ने उन्हें खोज निकाला। कमांडर ने जीतु और नील के माथे पर असली बंदूकें तान दीं। "वीडियो डिलीट करो, वरना तुम तीनों यहीं दफन हो जाओगे!"

लेकिन इससे पहले कि ट्रिगर दबता, आसमान तूफान की तरह फट पड़ा। अंतरराष्ट्रीय दूतावासों के भारी दबाव के बाद, मिलिट्री और एसटीएफ (STF) के हेलिकॉप्टरों ने जंगल को घेर लिया।

पुलिस की टुकड़ियों ने जब 'नो फ्लाइंग ज़ोन' तोड़ा, तो जमीन के नीचे एक पूरी हाई-टेक लैब मिली। पिंजरों में बंद 20 बच्चे और कई किशोरियां जिंदा बरामद की गईं। फार्मा कंपनी का पर्दाफाश हो गया।

पुलिस ने नील और जीतु को तुरंत हथकड़ियां पहना दीं। जब दिया और ज्योति मौके पर पहुंचीं, तो उन्होंने देखा कि उनके दोस्त 'आतंकवादी' बनकर गिरफ्तार हो रहे हैं।

गिरफ्तारी के 48 घंटे बाद, नील और जीतु अदालत में पेशी के लिए लाए गए। अचानक न्यूज़ चैनलों पर 'ब्रेकिंग न्यूज़' फ्लैश हुई। एलेक्स ने दिल्ली में एक ग्लोबल प्रेस कॉन्फ्रेंस की। "मुझे किसी ने किडनैप नहीं किया था," एलेक्स ने दुनिया के सामने सच उगला। "नील और जीतु अपहरणकर्ता नहीं हैं। मैंने अपनी मर्जी से बंधक बनने का नाटक किया था। और उन 24 घंटों के इंतजार में... जीतु ने मेरे लैपटॉप से फार्मा कंपनी के मेन सर्वर को हैक कर लिया था और उनके अवैध क्लिनिकल ट्रायल का पूरा डेटाबेस 'वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन' (WHO) को ईमेल कर दिया था!"

पूरे कोर्ट रूम में सन्नाटा छा गया। माफिया सिर्फ लैब टूटने से नहीं, बल्कि डेटा लीक होने से पूरी तरह बर्बाद हो चुका था।

अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद, कोर्ट को नील और जीतु पर से सभी केस हटाने पड़े। अदालत से बाहर निकलते वक्त, सैंकड़ों गांव वाले फूल लेकर खड़े थे। जिस गांव में शाम 6 बजे के बाद सन्नाटा छा जाता था, आज वहां जीत के ढोल बज रहे थे।

जीतु की नजर भीड़ में खड़े अपने पिता पर पड़ी। उनके पास ही 'शर्मा जी' भी खड़े थे। जीतु के पिता की आंखों में आज ताने नहीं, बल्कि आंसुओं से भरा एक ऐसा गर्व था, जो दुनिया की कोई भी परीक्षा पास करने पर नहीं मिल सकता।

वह खौफनाक जंगल, जहाँ हवा भी कांपती थी, आज एकदम शांत था। 'देवता' हमेशा के लिए मर चुका था, और इंसानियत जीत गई थी।

बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था, समाज और माता-पिता की भूमिका: एक समग्र दृष्टिकोण

ज्योति जयसवाल
धर्मपत्नी-श्री रवि कुमार जयसवाल
सहायक श्रेणी-। (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

शिक्षा किसी भी समाज की नींव होती है। यह न केवल व्यक्ति के ज्ञान और कौशल का विकास करती है, बल्कि समाज की सोच, मूल्य और दिशा भी निर्धारित करती है। समय के साथ जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन आया है, वैसे-वैसे शिक्षा व्यवस्था भी बदली है। आज की बदलती हुई शिक्षा प्रणाली का प्रभाव समाज, परिवार, विद्यार्थियों और विशेष रूप से माता–पिता की भूमिका पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए हमें इसे समाज और परिवार के संदर्भ में समग्र रूप से देखना आवश्यक है।

आज की शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता इसकी बढ़ती हुई पहुँच है। पहले जहाँ शिक्षा कुछ वर्गों तक सीमित थी, वहीं आज विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डिजिटल साधनों के माध्यम से शिक्षा व्यापक स्तर पर उपलब्ध है। सरकारी योजनाएँ, छात्रवृत्तियाँ और मुफ्त शिक्षा जैसे प्रयासों ने समाज के कमजोर वर्गों को भी शिक्षा से जोड़ने का कार्य किया है। समाज में साक्षरता बढ़ी है और शिक्षा को सामाजिक प्रगति और बेहतर भविष्य का साधन माना जाने लगा है।

हालाँकि, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अभी भी कई चुनौतियों से जूझ रही है। सबसे बड़ी समस्या इसका परीक्षा और अंकों पर अत्यधिक केंद्रित होना है। विद्यार्थियों की रचनात्मकता, सोचने-समझने की क्षमता और व्यक्तिगत रुचियों की उपेक्षा कर दी जाती है। अच्छे अंक और डिग्री को ही सफलता का पैमाना मान लिया गया है। इससे शिक्षा का मूल उद्देश्य—ज्ञान, विवेक और व्यक्तित्व विकास—पीछे छूट जाता है। समाज में प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है और विद्यार्थी मानसिक दबाव का शिकार हो रहे हैं।

शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी भी एक गंभीर समस्या है। आज के समाज में लाखों शिक्षित युवा होने के बावजूद बेरोजगारी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि शिक्षा व्यवस्था व्यावहारिक जीवन और कार्यक्षेत्र की वास्तविक आवश्यकताओं से पूरी तरह जुड़ी नहीं है। पाठ्यक्रमों में सैद्धांतिक ज्ञान अधिक और कौशल आधारित शिक्षा कम है। परिणामस्वरूप, समाज में डिग्रीधारी लेकिन कौशल-विहीन युवाओं की संख्या बढ़ रही है।

बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था ने समाज की संरचना और सोच को भी प्रभावित किया है। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन कक्षाएँ और तकनीकी साधनों ने सीखने की प्रक्रिया को तेज, रोचक और वैश्विक बना दिया है। विद्यार्थी अब केवल शिक्षक और पुस्तक तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इंटरनेट के माध्यम से विश्व भर की जानकारी तक पहुँच बना सकते हैं। इससे समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जागरूकता और नवाचार की भावना विकसित हो रही है। लोग प्रश्न पूछने लगे हैं और परंपराओं को तर्क की कसौटी पर परखने लगे हैं।

लेकिन इस बदलाव का दूसरा पक्ष भी है। डिजिटल शिक्षा के कारण सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ और अधिक स्पष्ट हो गई हैं। जिनके पास इंटरनेट, स्मार्टफोन और आधुनिक संसाधन हैं, वे तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, जबकि संसाधन-विहीन वर्ग पीछे छूटने का खतरा झेल रहा है। निजी और सरकारी विद्यालयों के बीच बढ़ता अंतर समाज में वर्ग विभाजन को और गहरा कर रहा है। शिक्षा, जो समानता का माध्यम होनी चाहिए, कई बार असमानता को बढ़ावा देती दिखाई देती है।

इन्हीं परिवर्तनों के बीच माता– पिता की भूमिका अत्यंत

महत्वपूर्ण हो गई है। पहले माता–पिता की जिम्मेदारी बच्चों को विद्यालय भेजने और परीक्षा परिणाम देखने तक सीमित थी, लेकिन आज वे शिक्षा प्रक्रिया के सक्रिय भागीदार बन गए हैं। घर का वातावरण बच्चे के मानसिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। माता–पिता ही बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं और उनके विचार, व्यवहार और मूल्य बच्चों पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा के युग में माता–पिता की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। बच्चों को तकनीक का सही और संतुलित उपयोग सिखाना, स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण रखना और उन्हें अनुशासन में रखना आवश्यक हो गया है। माता–पिता को यह सुनिश्चित करना होता है कि बच्चा केवल जानकारी ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्य, संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी भी सीख रहा है। समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालना उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है, इसलिए माता–पिता का सहयोग और समझदारी अत्यंत आवश्यक है।

बदलती शिक्षा प्रणाली बच्चों की व्यक्तिगत रुचि और क्षमता को पहचानने पर जोर देती है। ऐसे में माता–पिता की भूमिका मार्गदर्शक की हो जाती है। बच्चों की तुलना दूसरों से करने के बजाय उनकी प्रतिभा, रुचि और गति को समझना जरूरी है। हर बच्चा अलग होता है और उसकी सीखने की शैली भी अलग होती है। माता– पिता का सकारात्मक दृष्टिकोण बच्चों में आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है।

शिक्षकों और माता–पिता के बीच समन्वय भी शिक्षा व्यवस्था की सफलता के लिए अनिवार्य है। नियमित संवाद, विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता और बच्चों की प्रगति पर संयुक्त रूप से ध्यान देने से शिक्षा अधिक प्रभावी बन सकती है। जब समाज, विद्यालय और परिवार मिलकर काम करते हैं, तब शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास कराना नहीं, बल्कि अच्छे नागरिक तैयार करना बन जाता है।

समाज पर शिक्षा के इन परिवर्तनों का दूरगामी प्रभाव पड़ता है। एक सशक्त शिक्षा व्यवस्था समाज को जागरूक, जिम्मेदार और संवेदनशील बनाती है। शिक्षा यदि केवल करियर और आर्थिक सफलता तक सीमित रह जाए, तो समाज में नैतिकता, सहानुभूति और मानवीय मूल्य कमजोर पड़ सकते हैं। इसलिए बदलती शिक्षा प्रणाली में यह आवश्यक है कि नैतिक शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनाओं को भी समान महत्व दिया जाए।

अंततः, बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था, समाज और माता–पिता एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। शिक्षा समाज को दिशा देती है और समाज शिक्षा की प्रकृति को आकार देता है। माता–पिता इस पूरी प्रक्रिया की सबसे मजबूत कड़ी हैं, जो बच्चों को संतुलन, संस्कार और समर्थन प्रदान करते हैं। यदि शिक्षा को समावेशी, व्यावहारिक और मूल्य-आधारित बनाया जाए, यदि समाज शिक्षा को केवल अंकों से न मापे और यदि माता–पिता बच्चों के साथ संवाद और सहयोग का रिश्ता बनाए रखें, तो शिक्षा वास्तव में व्यक्ति और समाज दोनों के सर्वांगीण विकास का साधन बन सकती है।

इस प्रकार, बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था को समझना और उसे सकारात्मक दिशा देना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यही शिक्षा एक बेहतर समाज, सशक्त राष्ट्र और उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला रख सकती है।

लियो टॉलस्टॉय के जीवन और कृतियों का परिचय

शोभित शरद सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

लियो टॉल्स्टॉय एक रूसी लेखक थे जो कि 19 वीं सदी के सर्वाधिक सम्मानित लेखकों में से एक हैं। 1828 में यास्नाया पोल्याना, रूस में जन्मे टॉल्स्टॉय एक धनी अभिजात्य परिवार में पले-बढ़े। उन्होंने पारंपरिक शिक्षा प्राप्त की जिसमें भाषाओं, इतिहास और साहित्य का अध्ययन शामिल था। सेना में सेवा करने के बाद टॉल्स्टॉय ने साहित्य लेखन शुरू किया और उनके प्रारंभिक कार्य उनके सैनिक अनुभवों से काफी प्रभावित थे।

अपने पूरे करियर में टॉल्स्टॉय ने कई उपन्यास लिखे जिन्होंने विश्व साहित्य के क्लासिक्स का दर्जा प्राप्त किया जिनमें "युद्ध और शांति (War and Peace) " और "एना कारेनिना (Anna Karenina)" शामिल हैं। उनके साहित्यिक कार्यों की व्यापक प्रशंसा की गई जैसा कि इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि उन्हें 1902 से 1906 तक हर साल साहित्य में नोबेल पुरस्कार के लिए और 1901, 1902 और 1909 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित होने के बावजूद, टॉल्स्टॉय को कोई भी पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ। टॉल्स्टॉय को नोबेल पुरस्कार न मिलने का विषय साहित्यिक विद्वानों और आलोचकों के बीच महत्वपूर्ण विवाद का कारण बन गया। कई लोग मानते हैं कि साहित्य और सामाजिक सक्रियता में उनके योगदान को इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों के माध्यम से मान्यता मिलनी चाहिए थी जबकि अन्य तर्क करते हैं कि उन्हें पुरस्कार न देने का निर्णय राजनीतिक या व्यक्तिगत पक्षपात पर आधारित था। इसके बावजूद टॉल्स्टॉय का साहित्य और सामाजिक सुधार पर प्रभाव और योगदान आज भी व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है।

साहित्यिक उपलब्धियों के अलावा, टॉल्स्टॉय एक दार्शनिक विचारक और सामाजिक आलोचक भी थे। उन्होंने अहिंसा, शाकाहार और तपस्या को अपनाया और नैतिक और आध्यात्मिक विषयों पर अत्यधिक लेखन किया। अहिंसात्मक प्रतिरोध और सामाजिक आलोचना पर उनके लेखन ने महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियों को प्रभावित किया।

<u>प्रारंभिक जीवन</u>

टालस्टॉय का जन्म रूस के यास्नया पोल्याना में एक अभिजात्य परिवार में हुआ था, वे अपने पिता काउंट निकोलाई इलिच टालस्टॉय और मां प्रिंसेस मारिया टाल्स्टया के पांच बच्चों में से चौथे थे। उनकी मां की मृत्यु तब हो गई जब वे दो साल के थे और उनके पिता की मृत्यु तब हुई जब वे नौ साल के थे। 1844 में उन्होंने काज़ान विश्वविद्यालय में कानून और पूर्वी भाषाओं का अध्ययन शुरू किया। टालस्टॉय ने अपनी पढ़ाई के बीच में विश्वविद्यालय छोड़ दिया फिर यास्नया पोल्याना लौट आए और फिर मॉस्को, टुला और सेंट पीटर्सबर्ग में अधिक समय बिताया। एक आरामदायक जीवनशैली जीते हुए उन्होंने इस अवधि में लेखन शुरू किया 1852 में प्रकाशित उनका पहला उपन्यास 'चाइल्डहुड' है जिसमें उनके अपने बचपन का विवरण है।

1851 में उन्होंने सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया और काकेशस में सेवा करते हुए कई साल बिताए। अपनी सैन्य सेवा के दौरान उन्होंने लेखन कार्य शुरू किया।

<u>विवाह और पारिवारिक जीवन</u>

सेना में बिताए गए समय के दौरान टॉलस्टॉय की मुलाकात सोफिया बेहर्स से हुई। वे 1862 में शादी कर ली और 13 बच्चे हुए। हालांकि, उनका विवाह बिना कठिनाइयों के नहीं था। उच्च वर्गों से टॉलस्टॉय की बढ़ती निराशा ने उन्हें अधिक तपस्वी

जीवनशैली अपनाने पर मजबूर किया जिससे उनकी पत्नी और बच्चों के साथ संबंधों में तनाव पैदा हुआ।

पारंपरिक शैक्षिक प्रणाली और उच्च वर्गों के धनवान जीवन की ओर बढ़ती आलोचना करते हुए, टॉलस्टॉय ने अपने बच्चों को स्कूल न भेजने का आग्रह किया एवं उन्होंने स्वयं उन्हें शिक्षित किया और उन्हें सरल जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

टॉलस्टॉय का अपने परिवार के साथ संबंध जटिल था। वह एक समर्पित पिता थे और अपने बच्चों के साथ बहुत समय बिताते थे साथ ही उन्होंने अपने बढ़ते हुए कट्टरपंथी आदर्शों को भी थोपने की कोशिश की।

आध्यात्मिक संकट

टॉलस्टॉय की समाज के प्रति बढ़ती हुई नाराजगी ने 1870 के दशक के अंत में एक गहन अस्तित्वगत संकट को जन्म दिया। वह रुढ़िवादी चर्च और रुसी सरकार की आलोचना करने लगे और अपने जीवन के उद्देश्य पर सवाल उठाने लगे। वह अवसाद और चिंता से जूझ रहे थे और सरलता और गरीबी के जीवन की ओर अधिक आकर्षित होने लगे।

1910 में, टॉलस्टॉय ने रात के बीच अपने घर और परिवार को छोड़कर जीवन का अर्थ खोजने की यात्रा पर निकल पड़े। यात्रा के दौरान वह बीमार हो गए और 82 साल की उम्र में एक रेलवे स्टेशन पर निधन हो गया।

कृतियाँ

टॉलस्टॉय का साहित्यिक करियर आधी सदी से अधिक समय तक फैला हुआ था जिसके दौरान उन्होंने ऐसी कई कृतियाँ रची हैं जिनका साहित्य और संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। टॉलस्टॉय अपनी साहित्यिक कृतियों के लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं। उनके महाकाव्य उपन्यास "वार एंड पीस" और "अन्ना कारेनिना" को विश्व साहित्य के क्लासिक्स के रूप में सार्वभौमिक रूप से माना जाता है। हालांकि, टॉलस्टॉय की कृतियाँ केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं हैं। उन्होंने दार्शनिक और आलोचनात्मक निबंध भी लिखे हैं, जिनमें "व्हाट इज आर्ट ?" (1897) और "द किंगडम ऑफ गॉड इन विद इन यू" शामिल हैं।

रचनाएँ

लियो टॉलस्टॉय को रुसी साहित्य के इतिहास में एक महान हस्ती माना जाता है। उनके सबसे प्रभावशाली और समीक्षात्मक रूप से प्रशंसित कार्यों में उपन्यास "वार एंड पीस" और "अन्ना कारेनिना" शामिल हैं।

"वार एंड पीस" 1869 में प्रकाशित हुई थी। इस उपन्यास को साहित्य के महानतम कार्यों में से एक और टॉलस्टॉय की महाकाव्य कृति माना जाता है। यह ऐतिहासिक महाकाव्य रुस में नेपोलियन युद्धों के दौरान कई अभिजात्य परिवारों की कहानी बताता है, जो 1805 और 1820 के बीच की अवधि को कवर करता है। इस उपन्यास में, टॉलस्टॉय युद्ध, प्रेम, राजनीति और जीवन के अर्थ जैसे विषयों का अन्वेषण करते हैं, और अपने पात्रों की व्यक्तिगत कहानियों को उस समय की ऐतिहासिक घटनाओं के साथ जोड़ते हैं। उस समय के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ की टॉलस्टॉय द्वारा की गई चित्रण रुस में उस अवधि के जीवन की एक समृद्ध और विस्तृत चित्र प्रदान करती है। उपन्यास में युद्ध का चित्रण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पूरे उपन्यास में टॉलस्टॉय की शांतिवादिता स्पष्ट है, और युद्ध की भयानकता की जानकारी सैनिकों और नागरिकों के अनुभवों का विस्तृत वर्णन करते हुए दी गई है।

"अन्ना कारेनिना", जिसे पहली बार 1878 में प्रकाशित किया गया था, को टॉलस्टॉय का सबसे प्रसिद्ध कार्य माना जाता है। यह उपन्यास समाज में महिलाओं की भूमिका, व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक मानदंडों के बीच तनाव, और जीवन के अर्थ की खोज सहित व्यापक विषयों की पड़ताल करता है। शीर्षक पात्र के माध्यम से, टॉलस्टॉय समाज में महिलाओं की दबाई गई भूमिका की पड़ताल करते हैं। अन्ना को एक ऐसे महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अपने समय की परंपराओं से बंधी है और अपनी इच्छाओं और जरूरतों को व्यक्त करने में असमर्थ है। व्रॉनस्की के साथ उसका संबंध उसके परिवार और समाज की स्थिरता के लिए खतरा माना जाता है। समाज में महिलाओं की दबाई गई भूमिका की पड़ताल के कारण, "अन्ना कारेनिना" को एक नारीवादी उपन्यास के रूप में पढ़ा जा सकता है।

टॉलस्टॉय जीवन के अर्थ की खोज को कोंस्टेंटिन लेविन के चरित्र के माध्यम से खोजते हैं, एक संपन्न ज़मीनदार जो अपने अस्तित्व की खालीपन की भावना से पीड़ित है। जीवन के अर्थ की उनकी खोज समाज की सतहीपन को अस्वीकार करने से शुरू होती है जिसमें धन और स्थिति पर जोर शामिल है। वे दर्शन और आत्म-चिंतन के माध्यम से जीवन के अर्थ की खोज करते हैं और अंततः एक खेत में घास काटते समय एक ज्ञानोदय का क्षण अनुभव करते हैं । यह महसूस करते हुए कि जीवन का वास्तविक अर्थ प्रकृति और मानव संबंधों की सरल खुशियों में निहित है। लेविन के चरित्र के माध्यम से, टॉलस्टॉय आधुनिक समाज की शून्यता और इसके धन और स्थिति पर जोर की आलोचना करते हैं। हालांकि लेविन की कहानी को अन्ना की कहानी के प्रतिकथन के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। जहां अन्ना की कहानी त्रासदी के साथ समाप्त होती है, वहीं लेविन की कहानी यह इंगित करती है कि प्रकृति के साथ संबंध और दुनिया में अपनी जगह की गहरी समझ के माध्यम से अर्थ और पूर्णता पाना संभव है।

टॉलस्टॉय के अन्य उल्लेखनीय कृतियों में "द डेथ ऑफ इवान इलिच" शामिल है, जो मनुष्य की अपनी मृत्युशीलता से सामना करने की प्रक्रिया का अन्वेषण करता है और "रेजरेक्शन" जो नैतिक मोचन की खोज का अन्वेषण करता है।

अपने साहित्यिक कार्यों में टॉलस्टॉय की लेखन शैली यथार्थवाद और चेतना की धारा की कथा और प्रतीकवाद के उपयोग द्वारा चिह्नित होती है। यथार्थवाद टॉलस्टॉय की शैली की एक विशेषता है। उनके उपन्यास रोज़मर्रा की जिंदगी का विस्तृत वर्णन और अस्तित्व की कठोर वास्तविकताओं का यथार्थपूर्ण चित्रण करते हैं।

स्ट्रीम-ऑफ-कॉन्शियसनेस तकनीकों के उपयोग से पाठकों को चरित्र के दृष्टिकोण का गहरा अनुभव प्राप्त होता है, क्योंकि इसे चरित्र के विचारों और भावनाओं के निरंतर प्रवाह के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह तकनीक उपन्यास "अन्ना कारेनिना" में उदाहरण के रूप में दिखाई जाती है, जिसमें चरित्रों का आंतरिक जीवन कथानक के केंद्र में होता है।

टॉलस्टॉय द्वारा जटिल विचार व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का उपयोग "वार एंड पीस" के उदाहरण में स्पष्ट किया जा सकता है। मॉस्को के जलने की छवि युद्ध के विनाश और आतंक के लिए एक रूपक के रूप में प्रस्तुत करती है।

गैर-कथा साहित्यिक कृतियाँ

अपनी साहित्यिक कृतियों के अतिरिक्त टॉलस्टॉय एक दार्शनिक लेखक भी थे जिन्होंने धर्म, राजनीति, सौंदर्यशास्त्र और शिक्षा जैसे विषयों का अन्वेषण किया। उनकी सबसे प्रभावशाली सैद्धांतिक कृतियाँ "व्हाट इज आर्ट ?" और " द किंगडम ऑफ गॉड इज विद इन यू " हैं।

"व्ह"ट इज ऑर्ट?" में टॉल्स्टॉय तर्क करते हैं कि कला सामान्य जनता के लिए सुलभ और अर्थपूर्ण होनी चाहिए और इसका एक स्पष्ट नैतिक उद्देश्य होना चाहिए। टॉल्स्टॉय के अनुसार उनके समय के समीक्षकों द्वारा प्रशंसित रचनाकारों के कार्य सौंदर्य की दृष्टि से सफल हैं किंतु आम जनता के समझ से परे हैं और उनमें स्पष्ट नैतिक अर्थ की कमी है। इस कारण से टॉल्स्टॉय लोक कला के पक्ष में तर्क करते हैं। उनके अनुसार लोक कला सामान्य जनता के लिए सुलभ है और इसका एक स्पष्ट नैतिक उद्देश्य है।

"द किंगडम ऑफ गॉड इज विद इन यू " में टॉलस्टॉय चर्च के संस्थान की आलोचना करते हैं। वह चर्च को शासक वर्ग का एक उपकरण मानते हैं जो जनता पर अपना सत्ता और नियंत्रण बनाए रखने के लिए काम आता है। हालांकि ईसाई धर्म का असली सार राजनीतिक सत्ता का त्याग और अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता में निहित है। राज्य और संस्थानों को उत्पीड़न के साधन के रूप में देखा जाता है। वास्तव में बदलाव केवल दूसरों के प्रति प्रेम और सेवा के जीवन को अपनाने की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से आ सकता है न कि हिंसा के माध्यम से।

विरासत

टॉलस्टॉय की साहित्यिक कृतियाँ, विशेष रूप से उनके उपन्यास "वार एंड पीस" और "अन्ना कारेनिना", ने साहित्य और संस्कृति पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। उनकी यथार्थवाद, सामान्य जीवन पर जोर और मानव की खोज दुनिया भर के कई लेखकों को

प्रभावित करती रहती है।

टॉलस्टॉय के सैद्धांतिक कार्यों भी समान गहरा प्रभाव छोड़ पाने में सफल रहीं हैं। 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विद इन यू " में खोजा गया अहिंसात्मक प्रतिरोध की अवधारणा महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे व्यक्तियों को प्रभावित कर गई। गांधी ने 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विद इन यू " को अपने ऊपर पर पड़े सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक माना। टॉलस्टॉय की रचनाओं ने गांधी के अहिंसात्मक प्रतिरोध/ विरोध को प्रभावित किया और वे टॉलस्टॉय से 1910 में उनकी मृत्यु तक उनसे पत्राचार करते रहे। उनके पत्रों में सामाजिक सुधार प्राप्त करने में अहिंसा के व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर चर्चा शामिल थी।

टॉलस्टॉय की विरासत बहुआयामी और दूरगामी है। उनके साहित्यिक काम दुनियाभर के लेखकों और पाठकों को प्रेरित करना जारी रखते हैं जबकि उनके सामाजिक सक्रियता और सैद्धांतिक कार्यों की प्रतिबद्धता विचारकों और नेताओं को प्रभावित करती रहती है।

टॉलस्टॉय की प्रसिद्ध कृतियां

उपन्यास	चाइल्डहुड (1852)
	बॉयहुड (1854)
	यूथ (1856)
	द कोसाक्स (1863)
	वार एंड पीस (1869)
	रेजरक्शन (1899)
वृहद उपन्यास	ए लैंडओनर्स मॉर्निंग (1856)
	फैमिली हैप्पीनेस (1859)
	द डेविल(1889)
	मास्टर एंड मैन (1895)
	वॉक इन द लाइट व्हाइल देयर इज लाइट (1888)
लघु कथाएं	द रैड (1852)
	द कॉटिंग ऑफ द फॉरेस्ट (1855)
	सेवस्टापॉल स्टेचेज (1855)
	द स्नोस्टॉर्म (1856)
	ऑल्बर्ट (1858)
	द बियर हॉन्ट (1872)
	क्वेंच द स्पार्क (1885)
	विस्डम ऑफ चिल्ड्रन(1885)
	द कॉफी हाउस ऑफ सूरत
नाटक	द पावर ऑफ डार्कनेस(1886)
	द फ्रूट्स ऑफ इनलाइटमेंट (1891)
	द लाइट शाइन्स इन द डार्कनेस (1890)

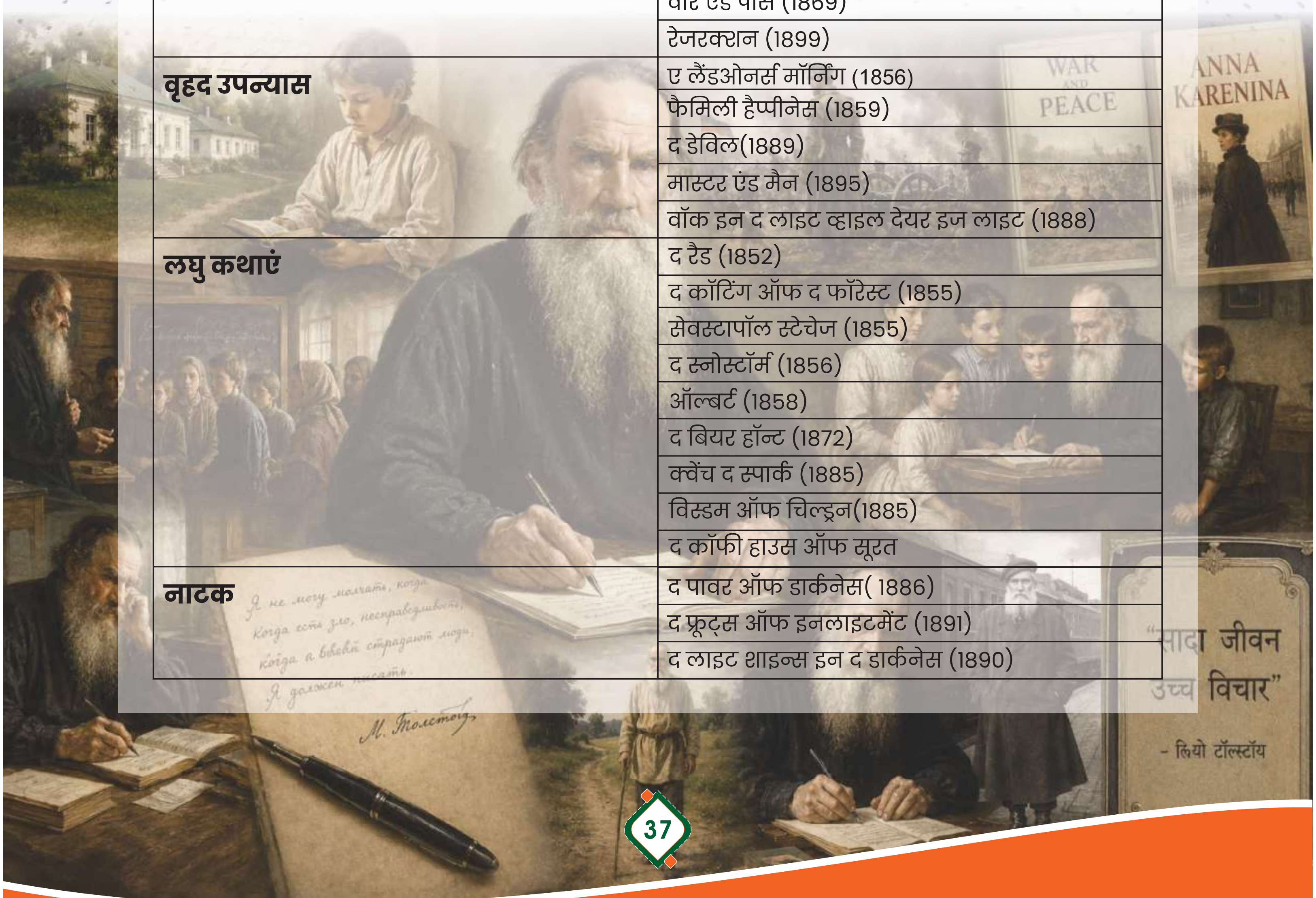

जब सिस्टम के भीतर भी आत्मा ज़िंदा रहे

रवि कुमार जयसवाल
सहायक श्रेणी-I(राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

सरकारी सेवा को
अगर आप सिर्फ फाइलों से पहचानते हैं,
तो यह कहानी
आपकी सोच बदल देगी

यह कहानी है
एक ऐसे अफ़सर की,
जो सिस्टम नहीं बनना चाहता—
उसे बेहतर बनाना चाहता है।

जहाँ सत्ता सेवा में ढल जाती है और शब्द साधना बन जाते हैं, वहाँ व्यक्तित्व केवल पद से नहीं, प्रभाव से पहचाना जाता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1999 बैच के अधिकारी श्री आशुतोष अग्निहोत्री जी ऐसे ही विरले नामों में से हैं, जिनके लिए प्रशासन महज़ दायित्व नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है और साहित्य केवल अभिव्यक्ति नहीं, आत्मसंवाद। उनकी उपस्थिति में निर्णय कठोर नहीं लगते और शब्द बोझिल नहीं होते—दोनों में एक सहज मानवीय स्पर्श रहता है।

उत्तर प्रदेश के कानपुर में 11 मार्च 1974 को जन्मे श्री अग्निहोत्री जी की यात्रा साधारण से असाधारण बनने की नहीं, बल्कि संवेदनशील से सशक्त होने की यात्रा है। अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर शिक्षा ने उन्हें शब्दों की गहराई दी और भारतीय प्रशासनिक सेवा ने उन्हें व्यवस्था को समझने की दृष्टि। इसके बाद लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से *Public Management and Governance* में MSc ने उनके विचारों को वैश्विक संदर्भ प्रदान किया, जहाँ प्रशासन केवल शासन नहीं, समाज के साथ संवाद बन जाता है।

असम–मेघालय कैडर में जिला मजिस्ट्रेट के रूप में उन्होंने जमीनी प्रशासन को केवल देखा नहीं, बल्कि जिया। गृह, परिवहन, उद्योग एवं वाणिज्य, खेल और युवा कल्याण जैसे विविध विभागों में कार्य करते हुए उन्होंने यह स्थापित किया कि प्रशासन नियमों की किताब से नहीं, संवेदना की समझ से चलता है। उनके निर्णयों में कठोरता से अधिक संतुलन और संवेदना दिखाई देती है—शायद इसलिए क्योंकि वे व्यवस्था के भीतर खड़े होकर भी मनुष्य को नहीं भूलते।

केंद्र सरकार में गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव और बाद में अपर सचिव के रूप में उनकी भूमिका राष्ट्रीय महत्व की रही, जहाँ नीति, सुरक्षा और संवेदनशीलता—तीनों का संतुलन आवश्यक होता है। उन्होंने भारतीय खाद्य निगम भारत (FCI) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक पद के रूप में वे देश की खाद्य सुरक्षा की कमान भी संभाली—एक ऐसा दायित्व, जो करोड़ों भारतीयों के भरोसे से जुड़ा है। जहाँ नीति सीधे किसान और उपभोक्ता के जीवन को प्रभावित करती है। और वह वर्तमान में नई दिल्ली स्थित पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC), भारत सरकार में अतिरिक्त सचिव के रूप में कार्यरत हैं।

लेकिन उनका व्यक्तित्व यहीं ठहर नहीं जाता। उनके भीतर

एक कवि निरंतर जीवित रहता है—जो जीवन, प्रेम, विरक्ति और आत्मा पर लिखता है "कुच्छ अधूरे शब्द", "ओस की थपकी", "स्पंदन", "Colors of My Wall Not with the Same Brush'", "Piece of Mind", "Love, Life and Longing", "सब पर राम तवस्वी राजा" जैसी कृतियाँ केवल पुस्तकें नहीं हैं, बल्कि उनके अंतर्मन की परतें हैं। उनकी रचनाओं में शिव-चेतना की शांति है, मौन की गरिमा है और जीवन को उसी रूप में स्वीकार करने की गहरी दृष्टि है। वे शब्दों से समझाते नहीं, अनुभूति कराते हैं।

उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता की झलक उस समय भी दिखाई दी थी, जब UPSC परीक्षा में रैंक निर्धारण की त्रुटि को उन्होंने चुनौती दी और अपने अधिकार के लिए शांत लेकिन स्पष्ट स्वर में खड़े हुए। वही क्षण संकेत दे गया था कि यह अधिकारी व्यवस्था का हिस्सा बनकर भी उससे सजग संवाद करेगा, आँख मूँदकर स्वीकार नहीं।

श्री आशुतोष अग्निहोत्री जी का नेतृत्व शोर नहीं करता। वह ऊँची आवाज़ में नहीं, स्पष्ट दृष्टि में बोलते है । वे बाहरी दुनिया की हलचलों को भी सुनते हैं और भीतर के मौन को भी।

वे उस पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं जहाँ प्रशासन मानवीय है, सत्ता संयमी है और साहित्य सजग। श्री आशुतोष अग्निहोत्री जी एक ऐसा नाम हैं, जो फाइलों में भी जीवित है और शब्दों में भी—और यही उन्हें साधारण अधिकारी से कहीं आगे, एक प्रेरक व्यक्तित्व बनाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में ट्रेड यूनियन की अनिवार्यता

बिमल कुमार चौधुरी
प्रबंधक(लेखा)
मंडल कार्यालय,बंदरदेवा

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम देश की आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ हैं। खाद्य सुरक्षा से लेकर ऊर्जा, परिवहन, बैंकिंग और दूरसंचार जैसी बुनियादी सेवाओं का संचालन इन्हीं संस्थानों के माध्यम से होता है। इन उपक्रमों की सफलता का वास्तविक आधार वहाँ कार्यरत कर्मचारी हैं। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि कर्मचारियों के अधिकार, सुरक्षा और सम्मान की रक्षा के लिए एक सशक्त व्यवस्था मौजूद हो—और यही भूमिका ट्रेड यूनियन निभाती है।

ट्रेड यूनियन केवल मांगों का मंच नहीं, बल्कि कर्मचारियों की सामूहिक चेतना और लोकतांत्रिक अधिकारों की अभिव्यक्ति है। यह सुनिश्चित करती है कि कर्मचारियों को उचित वेतन, मानवीय कार्य घंटे, सामाजिक सुरक्षा और सम्मानजनक कार्य वातावरण प्राप्त हो। जब प्रबंधन और नीतियों में असंतुलन पैदा होता है, तब यूनियन कर्मचारियों की आवाज़ बनकर संवाद का रास्ता खोलती है।

प्रबंधन और कर्मचारियों के बीच संवाद की कमी अक्सर टकराव को जन्म देती है। ट्रेड यूनियन इस दूरी को पाटने का काम करती है। सामूहिक सौदेबाज़ी के माध्यम से वेतन, पदोन्नति, स्थानांतरण, सुरक्षा मानकों और कार्य-स्थितियों जैसे मुद्दों पर सहमति बनती है। इससे न केवल विवादों में कमी आती है, बल्कि संस्थान में विश्वास और सहयोग का वातावरण भी विकसित होता है।

आज के समय में सुरक्षित और गरिमापूर्ण कार्यस्थल किसी भी संगठन की प्राथमिकता होनी चाहिए। ट्रेड यूनियन कार्यस्थल पर भेदभाव, शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध सतर्क प्रहरी की भूमिका निभाती है। विशेष रूप से महिला कर्मचारियों की सुरक्षा, समान अवसर और सामाजिक न्याय के प्रश्नों पर यूनियन की सक्रियता संस्थागत संतुलन के लिए आवश्यक है।

ट्रेड यूनियन की सबसे बड़ी शक्ति कर्मचारियों की एकता में निहित है। यह एकता कर्मचारियों को आत्मबल देती है और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है। संगठित कर्मचारी न केवल अन्याय के विरुद्ध खड़े होते हैं, बल्कि संस्थान की उत्पादकता और स्थायित्व में भी सकारात्मक योगदान देते हैं।

यह भी महत्वपूर्ण है कि ट्रेड यूनियनें नीतिगत सुधारों में भागीदार बनें। सार्वजनिक क्षेत्र में बनाई जाने वाली नीतियाँ तभी प्रभावी हो सकती हैं, जब उनमें ज़मीनी अनुभव और कर्मचारियों की वास्तविक समस्याओं का समावेश हो। इस दिशा में ट्रेड यूनियन की भूमिका न केवल प्रासंगिक, बल्कि अपरिहार्य है।

अंततः यह स्पष्ट है कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में ट्रेड यूनियन किसी बाधा के रूप में नहीं, बल्कि संतुलन और स्थिरता के स्तंभ के रूप में कार्य करती है। एक जिम्मेदार, जागरूक और सकारात्मक ट्रेड यूनियन न केवल कर्मचारियों के हितों की रक्षा करती है, बल्कि संस्थान को भी मजबूत बनाती है। इसलिए, पीएसयू के स्वस्थ विकास के लिए ट्रेड यूनियन की सक्रियता और सहभागिता समय की आवश्यकता है।

आओ मिलकर दीप जलाएँ, प्रेम की ज्योति जगाएँ,
संगठन की शक्ति से हम, जीवन पथ सरल बनाएँ।
दुख-सुख सारे बाँटें मिलकर, आँचल में भर विश्वास,
बैरी भाव मिटाकर मन से, करें प्रेम का विस्तार।

मैं बिहार हूँ

मनोज कुमार सिन्हा
प्रबंधक (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

आर्यभट की भूमि हूँ, ज्ञान का सितारा हूँ,
गगन छूती सोच लिए, विज्ञान का सहारा हूँ।
दिनकर की मैं कलम हूँ, विद्रोह की आग हूँ,
शब्दों में क्रांति भर दूँ, मैं स्वाभिमान की राग हूँ।

नालंदा की दीर्घाओं में, अब भी गूंजती वाणी है,
जहाँ आज पत्थरों में भी, लिखी जाती कहानी है।
विश्व को ज्ञान दिया, जब बाकी सोए थे,
हमारे ऋषि, मुनि और ग्रंथ, उजाला बोए थे।

चंपारण की धरती से, उठी थी शांति की लहर,
गाँधी के कदमों ने यहाँ बदली थी हर डगर।
अहिंसा की पहली दस्तक, जब इतिहास बना,
बिहार की मिट्टी ने फिर से भारत को जाना।

मगध की वीरता हूँ, चंद्रगुप्त का नाम हूँ,
चाणक्य की रणनीति का मैं अद्वितीय प्रणाम हूँ।
पाटलिपुत्र की गाथाएँ, आज भी गूंजती हैं,
सिंहासन की कहानियाँ, अब भी मुझसे जुड़ती हैं।

मैं ललित नारायण का गर्व, और विद्यापति का
गीत हूँ,
भोजपुरी, मैथिली, मगही — हर भाषा की प्रीत हूँ।
मैं मधुबनी की चित्रकारी, मिथिला की शान हूँ,
लोककला में बसी मेरी अपनी पहचान हूँ।

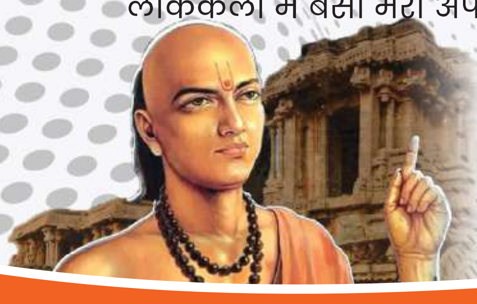

मैं खेतों की हरियाली, मेहनत की तस्वीर हूँ,
मैं मजदूर के हाथों में, बसी जागीर हूँ।
मैं पर्व छठ का उजास, आस्था की धार हूँ,
हर दीप, हर अर्घ्य में, छुपा संस्कार हूँ।

मैं युवाओं की उम्मीद, आईएएस की कतार हूँ,
हर परीक्षा में दम दिखाऊँ, मैं परिश्रम की धार हूँ।
मैं वो संघर्ष हूँ जो हार से डरता नहीं,
मैं वो सपना हूँ जो टूटकर भी बिखरता नहीं।

भले ही पलायन हो, या विफलताओं की बात,
मैं हर बार उठ खड़ा होऊँ, ये मेरी सौगात है ।
मैं मिट्टी की खुशबू में, इतिहास की शान हूँ,
मैं वर्तमान की पुकार और भविष्य की जान हूँ।

जी हाँ, मैं बिहार हूँ —
संस्कृति, साहस और संस्कार की पहचान हूँ।

प्रेम

महेश जयसवाल
सहायक महाप्रबंधक
(गुण नियंत्रण)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

समर्पित जीवन का समर्पण प्रेम है
जो जग से परे है वो प्रेम है
जब मन का असारा
मिल जाए आत्मा से
वो प्रेम है
जो मिलके भी बिछड़ जाए
वो प्रेम है
जो जन्मो जन्मो तक
प्रतीक्षा की अग्नि में जल जाए
वो प्रेम है।

कोशिश

ज्योति रॉय
सहायक श्रेणी - III (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, उत्तर लखीमपुर

तट पर बैठे-बैठे
तेरे हाथ कहाँ कुछ आएगा,
रत्न मिलेंगे तुझको जब
सागर के तह में जाएगा,
कुछ न आया हाथ तो
समझना डुबकी अभी अधूरी है,
चाहे जितना भी मुश्किल हो
लेकिन पहला कदम जरूरी है।

असम: पूर्वोत्तर का स्वर्ण मुकुट

मनोज कुमार सिन्हा
प्रबंधक (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

ब्रह्मपुत्र की लहरों में बसी,
हरियाली से ओतप्रोत धरा,

प्रकृति की अनुपम छवि जहां सजी,
भारत का गहना, असम है हमारा।

चाय की बगानों की भीनी सुगंध,
पहाड़ों की गोदी में मीठी ठंडी हवा,
हर सुबह सूरज मुस्काता यहाँ,
जैसे स्वर्ग ने यहाँ डेरा जमाया हो ।

नीले आकाश में उड़ते परिंदे,
गीत सुनाएँ स्वर्णिम सपने,
बांसुरी की मीठी धुनों में,
हर कोना बोले अपने अपने।

मां कामाख्या की शक्ति अलौकिक,
श्रद्धा से झुकते सभी का शीश यहाँ,
माजुली की मिट्टी कहानियाँ कहती,
नृत्य, कला, और संस्कृति की संगम यहाँ।

सत्र और नामघर की वाणी,
हर प्राणी को दे शांति का संदेश,
संकल्प, साधना और संस्कार,
सदियों से बने हैं पहचान अपार।

नववर्ष के बिहू की थापें,
हर दिल को नाचने को करें मजबूर,
रंग-बिरंगे वस्त्र, ढोल की ताल,
जीवन को उत्सव से भरें।

झूमते हैं खेत, मुस्काते हैं किसान,
गीतों में घुला है लोक सम्मान,
बिहू न केवल पर्व है यहाँ,
बल्कि जीवन की गूंजती जान।

गैंडा गरजता काजीरंगा में,
जैसे वीरता की जीवित मिसाल,
हाथी, बाघ, और पक्षी अनगिनत,
संरक्षण की बुनती नई मिसाल।

दीप्त जलप्रपात, गुफाएँ रहस्यमयी,
हर मोड़ पर छुपी कोई कथा सजी,
असम की भूमि, सौंदर्य का सार,
हर यात्री को करे बारंबार पुकार।

असम, है अभिमान हमारा,
इसके बिना अधूरा है भारत सारा,

इसकी मिट्टी, इसकी भाषा, इसकी रीत,
हर भारतीय के दिल में बसाए प्रीत।

बचपन की यादें

मनोज कुमार पंडित
सहायक श्रेणी-।(राजभाषा)
मंडल कार्यालय,डिब्रूगढ़

आज यादों की कस्ती में सवार,
यूं ही जब खुली वादियों में विचर रहा था ।
तभी अचानक मेरी मुलाकात, मेरे बचपन से हुई॥

मैं अचंभित सा उसे देख,
कुछ पल बाद ही बचपन की दरिया में डुब सा
गया ।
ना जाने क्यों फिर से, बचपन की वे सारी यादें,
एक-एक करके ताजी सी होने लगी॥

वे भी क्या दिन थे बचपन के,
जब हम नि:स्वार्थ इधर-उधर घूमते।
खेलते-झूमते, खाते-पिते झगड़ते रहते,
सभी यारों से मिल दिल की बातें किया करते॥

ना तो कोई समझ थी और ना ही किसी दौलत की
चाहत,
ना तो दाल, आटे, चावल का भाव पता था।
और ना ही दुनिया के रंग-मंच से कुछ लेना देना
था ॥

पर आज पेट की भूख और दौलत की चाहत ने,
उन सारे दिनों को भूलने को मजबूर कर दिए।
निजस्वार्थ की पूर्ति में अपने बचपन जैसी खुखियों
को सुला दियें,
दुनिया की भाग-दौड़में अपने को ऐसे शामिल
किए।
कि सारे रिश्ते-नाते और दोस्तों को ही भूला दियें॥

आज ना तो बचपन जैसी वो खुली आजादी है,
और ना ही दोस्तों के साथ खेलना,कूदना और
झगड़े करना।
अगर है तो केवल बस यहीं की जिंदगी है जीना...
जिंदगी है जीना...॥

खो गई सारी वो चेहरे की मुस्कुराहते,
हवा के झरोखों जैसी उड़ गई सारी खुशियां।
अब तो घर वालों की खुशियों के लिए ही,
यूं ही मुस्कुरा दिया करते है।
और यूं ही हंसते-हंसते जिंदगी जी लिया करते है ॥

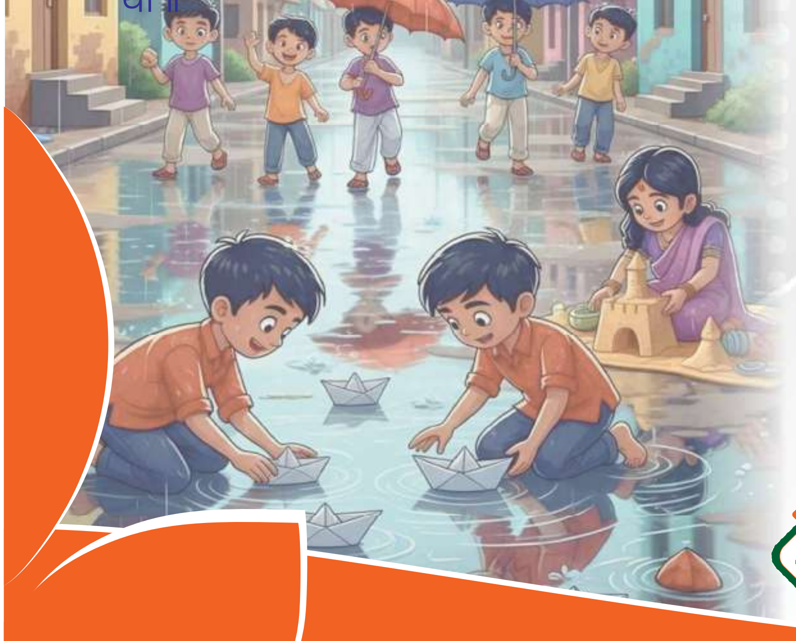

नैतिकता और ईमानदारी - सरकारी सेवा का मूल मंत्र

दीपक छेत्री
सहायक श्रेणी – III (लेखा)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

सरकारी सेवा का है पवित्र उद्देश्य,
नैतिकता से हो हर निर्णय सटीक एवं सहज।
ईमानदारी से चले जो हर एक कर्म,
वही बनता है प्रशासन का सच्चा धर्म।

जवाबदेही में है शासन की ताकत,
पारदर्शिता से बढ़े जनता का विश्वास।
व्यक्तिगत स्वार्थ से रहे दूर मन,
सतत प्रगति का हो यही सफ़र।

संकल्प लें हम सब मिलकर यही,
सेवा में न रहे कोई ग़लत दिशा कहीं।
नैतिकता और ईमानदारी के साथ बढ़ें,
सुशासन के प्रकाश को फैलाएं।

मेरा प्यारा डुग्गु

सरफराज अंसारी
सहायक श्रेणी-I(लेखा)
आंचलिक कार्यालय,गुवाहाटी

छोटे-से घर का तारा है,
सबकी आँखों का प्यारा है।
मुस्कानों की बारिश लाया,
जबसे डुग्गु हमारा आया।

चलता है तो पायल छनके,
बोलता है तो दिल हँस दे।
मस्ती में वो दुनिया भूले,
खेलों में सबको हरा दे।

पढ़ाई में भी होशियार है,
सपनों वाला सितारा है।
माँ की गोदी का चैन बना,
पापा की जान का मयना बना।

झगड़े हों या रूठना हो,
डुग्गु सबको मना लेता है।
प्यारी सी वो बातें उसकी,
हर दिन को खास बना देता है।

दुआ है मेरी बस इतनी,
हर ख़ुशी तुझपे कुर्बान हो।
तेरे चेहरे की ये हँसी,
हर पल यूँ ही मेहमान हो।

नववर्ष

महेश जयसवाल
सहायक महाप्रबंधक (गुण नियंत्रण)
आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी

नव कोपित कोपलों को जागृत कर
प्रयत्न तेरा साधक है
पथ के अग्रिम छोर तक
ये पथरीली राहें
निशा के आँचल के सहारे
इस बंजर धरा को उर्वर कर
बोकर बीज कर्म - सुधा के
तू उगा आशा के मंझरी
पुरुषार्थ, सामर्थ्य, धरा भी तेरी
और नव पथ का उजाला भी
नव किरणों के सारथी ने पुकारा
हिमालय सा लक्ष्य संधान कर
नव कोपित कोपलों को जागृत कर ।

निगम की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में मूल रूप से हिंदी टिप्पण/आलेखन हेतु आंचलिक कार्यालय (उ.पू.), गुवाहाटी के पुरस्कार प्राप्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

क्र.स.	नाम	पदनाम	स्थान	फोटो
01	श्री चंदन शर्मा	प्रबंधक (सा.)	प्रथम	
02	श्री नयनमणी डेका	प्रबंधक (सा.)	प्रथम	
03	श्री राजीव दास	प्रबंधक (सा.)	द्वितीय	
04	श्री मानस कुमार बरूआ	प्रबंधक (सा.)	द्वितीय	
05	श्री रंजन कुमार राभा	स.श्रे.-I (सा.)	द्वितीय	

क्र.स.	नाम	पदनाम	स्थान	फोटो
06	श्री रोहित कुमार मिश्रा	स.श्रे.-III (सा.)	तृतीय	
07	श्री फारुक अली अहमद	प्रबंधक (सा.)	तृतीय	
08	श्री अनूप कुमार सिंह	प्रबंधक (सा.)	तृतीय	
09	श्री जीतू कुमार	स.श्रे.-II (लेखा)	तृतीय	
10	श्रीमती मल्लिका शर्मा	प्रबंधक (सा.)	तृतीय	

राजभाषा नियम 1976 के नियम10(4) के अंतर्गत उत्तर-पूर्व अंचल में स्थित भारतीय खाद्य निगम के कार्यालयों के भारत के राजपत्र में अधिसूचित होने की स्थिति

क्र.स	कार्यालय का नाम	भारत के राजपत्र में नियम 10(4) हेतु अधिसूचित होने की तिथि
1	आंचलिक कार्यालय उत्तर-पूर्व, गुवाहाटी	29.04.2025
2	क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी	06.10.2025
3	मंडल कार्यालय,बोंगाईगांव	06.10.2025
4	मंडल कार्यालय,जोरहाट	06.10.2025
5	मंडल कार्यालय,इम्फाल	06.10.2025
6	मंडल कार्यालय,कोकराझार	26.11.2025
7	मंडल कार्यालय,गुवाहाटी	28.04.2026

हिंदी पखवाड़ा 2025 प्रतियोगिताएं

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2025

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025

स्वच्छता पखवाड़ा 2025

76 वां गणतंत्र दिवस

79 वां स्वतंत्रता दिवस

राष्ट्रीय पोषण माह 2025

पोषण पखवाड़ा 2025

गांधी जयंती 2025

जनजातीय गौरव दिवस

अखिल भारतीय एफसीआई अंतर आंचलिक हॉकी टूर्नामेंट गुवाहाटी 2025

उपलब्धियां

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
गुवाहाटी रिफाइनरी
नूनमाटी, गुवाहाटी – 20

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि
श्री / सुश्री / श्रीमती ....को
हिंदी माह 2025 के दौरान इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी रिफाइनरी द्वारा आयोजित ....प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु ....पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई !

कार्यकारी निदेशक व रिफाइनरी प्रमुख

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
गुवाहाटी रिफाइनरी
नूनमाटी, गुवाहाटी – 20

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि
श्री / सुश्री / श्रीमती ....को
हिंदी माह 2025 के दौरान इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी रिफाइनरी द्वारा आयोजित ....प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु ....पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई !

कार्यकारी निदेशक व रिफाइनरी प्रमुख

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2025

अंतर क्षेत्रीय एफसीआई फुटबॉल टूर्नामेंट - चुमुकेदीमा, दीमापुर, नागालैंड -2025

अंतर क्षेत्रीय टेबिल टेनिस एवं बैडमिंटन प्रतियोगिता, 2025 ईटानगर

राष्ट्रीय अनुसूचित आयोग की अध्यक्षता में बैठक

एक पेड़ मां के नाम

विश्वकर्मा पूजा-2025

एफसीआई उत्तर पूर्व के स्टाइपेंट खिलाड़ियों का सम्मान

उत्तर पूर्व अंचल के कार्यालय प्रमुखों हेतु विशेष हिंदी कार्यशाला - दीमापुर, नागालैंड (दिनांक 02.01.2026)

पेंटिंग

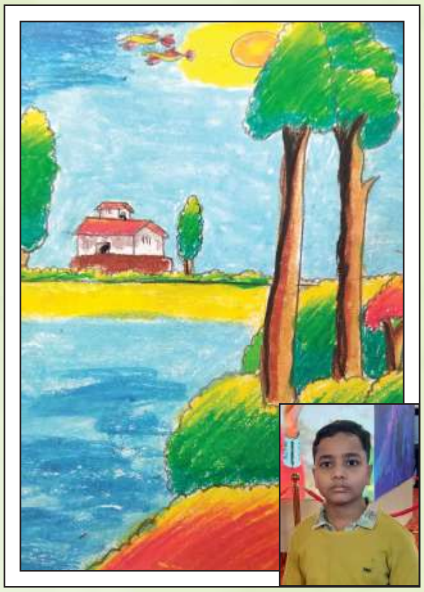

चित्रकार दर्शित बेजबरुआ
श्री पवन बेजबरुआ, प्रबंधक (लेखा) के पुत्र

चित्रकार अनिर्विनय जयसवाल
श्रीमती नेहा गुप्ता, प्रबंधक (लेखा) के पुत्र

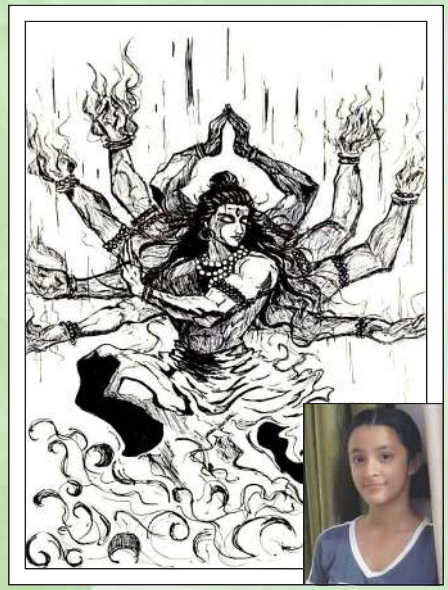

चित्रकार अग्रिया सिंह
श्री शोभित शरद सिंह, प्रबंधक (राजभाषा) की पुत्री

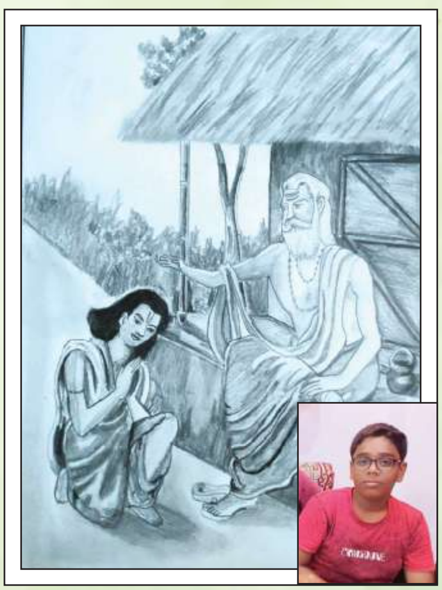

चित्रकार अनिर्विनय जयसवाल
श्रीमती नेहा गुप्ता, प्रबंधक (लेखा) के पुत्र

चित्रकार अभ्युदिता सिंह
श्री शोभित शरद सिंह, प्रबंधक (राजभाषा) की पुत्री

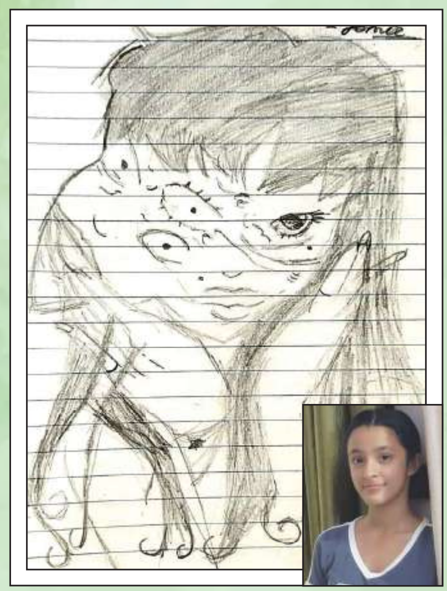

चित्रकार अग्रिया सिंह
श्री शोभित शरद सिंह, प्रबंधक (राजभाषा) की पुत्री

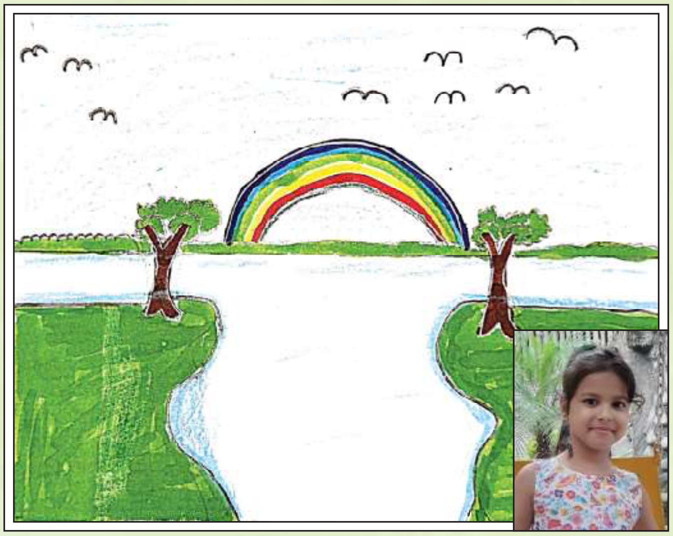

चित्रकार रिक्षा भराली

श्री किशोर भराली, प्रबंधक (सामान्य) की पुत्री

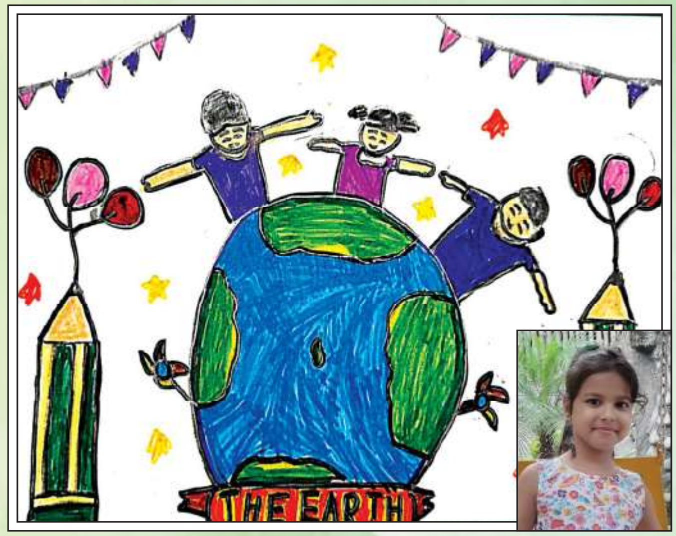

चित्रकार रिक्षा भराली

श्री किशोर भराली, प्रबंधक (सामान्य) की पुत्री

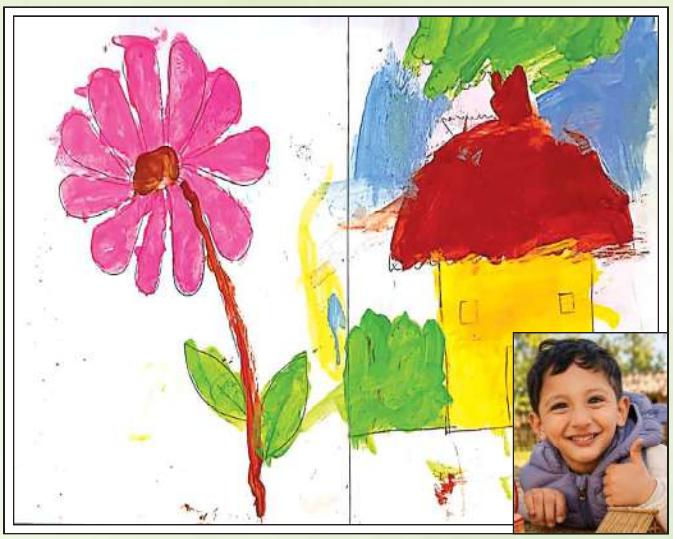

चित्रकार अथर्व जयसवाल

श्री रवि जयसवाल, स.श्रे.-I (राजभाषा) के पुत्र

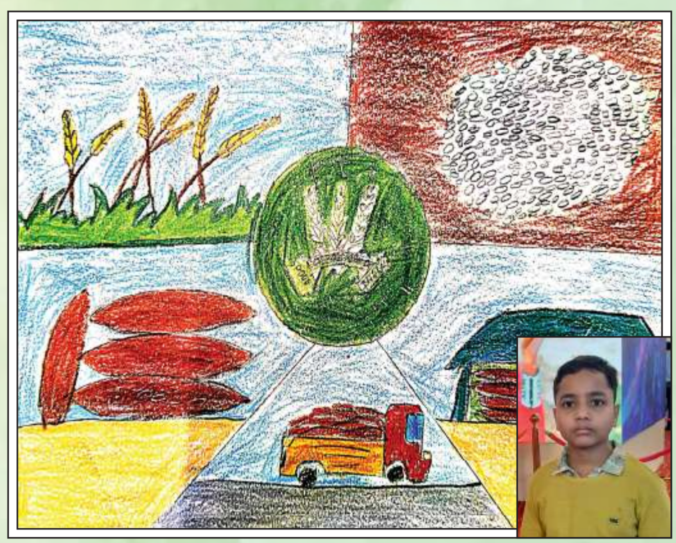

चित्रकार दर्शित बेजबरुआ

श्री पवन बेजबरुआ, प्रबंधक (लेखा) के पुत्र

चित्रकार अभ्युदिता सिंह

श्री शोभित शरद सिंह , प्रबंधक (राजभाषा) की पुत्री

नराकास, गुवाहाटी के सदस्य कार्यालयों के लिए दिनांक 01.12.2025 को आयोजित हिंदी समाचार बुलेटिन प्रकाशन प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को कार्यकारी निदेशक (उ.पू.) के करकमलों से पुरस्कार प्रदान

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी द्वारा आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी को उत्कृष्ट कार्य निष्पादन वर्ष 2024-25 हेतु द्वितीय पुरस्कार

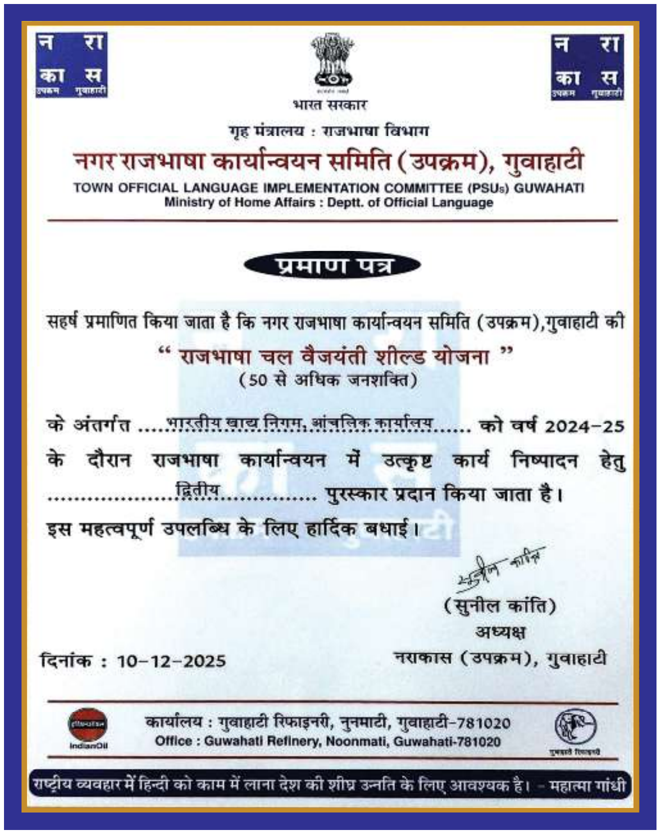

भारत सरकार

गृह मंत्रालय : राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गुवाहाटी

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE (PSUs) GUWAHATI

Ministry of Home Affairs : Deptt. of Official Language

प्रमाण पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम),गुवाहाटी की

“ राजभाषा चल वैजयंती शील्ड योजना ”

(50 से अधिक जनशक्ति)

के अंतर्गत ....भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय...... को वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु ....द्वितीय............. पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई।

(सुनील कांति)

अध्यक्ष

नराकास (उपक्रम), गुवाहाटी

दिनांक : 10-12-2025

कार्यालय : गुवाहाटी रिफाइनरी, नुनमाटी, गुवाहाटी-781020

Office : Guwahati Refinery, Noonmati, Guwahati-781020

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। - महात्मा गांधी

भारतीय खाद्य निगम

आंचलिक कार्यालय (उत्तर पूर्व), गुवाहाटी